उत्पत्ति

संसार का आरम्भ

पहला दिन–उजियाला

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया।
2पृथ्वी बेडौल और सुनसान थी। धरती पर कुछ भी
नहीं था। समुद्र पर अंधेरा छाया था और परमेश्वर का
आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।* 3तब परमेश्वर
ने कहा, "उजियाला हो"* और उजियाला हो गया।
4परमेश्वर ने उजियाले को देखा और वह जान गया कि
यह अच्छा है। तब परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे
से अलग किया। 5परमेश्वर ने उजियाले का नाम "दिन"
और अंधियारे का नाम "रात" रखा।

शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह पहला दिन था।

दूसरा दिन–आकाश

6तब परमेश्वर ने कहा, "जल को दो भागों में अलग
करने के लिए वायुमण्डल* हो जाए।" 7इसलिए परमेश्वर
ने वायुमण्डल बनाया और जल को अलग किया। कुछ
जल वायुमण्डल के ऊपर था और कुछ वायुमण्डल के
नीचे। 8परमेश्वर ने वायुमण्डल को "आकाश" कहा!

तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह दूसरा दिन था।

तीसरा दिन–सूखी धरती और पेड़ पौधे

9और तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी का जल एक
जगह इकट्ठा हो जिससे सूखी भूमि दिखाई दे" और
ऐसा ही हुआ। 10परमेश्वर ने सूखी भूमि का नाम "पृथ्वी"
रखा और जो पानी इकट्ठा हुआ था, उसे "समुद्र" का
नाम दिया। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

11तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी, घास, पौधे जो अन्न
उत्पन्न करते हैं, और फलों के पेड़ उगाये। फलों के
पेड़ ऐसे फल उत्पन्न करें जिनके फलों के अन्दर बीज
हो और हर एक पौधा अपनी जाति का बीज बनाए। इन
पौधों को पृथ्वी पर उगनें दो" और ऐसा ही हुआ।
12पृथ्वी ने घास और पौधे उपजाए जो अन्न उत्पन्न
करते हैं और ऐसे पेड़, पौधे उगाए जिनके फलों के
अन्दर बीज होते हैं। हर एक पौधे ने अपने जाति अनुसार
बीज उत्पन्न किये और परमेश्वर ने देखा कि यह
अच्छा है।

13तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह तीसरा दिन
था।

चौथा दिन–सूरज, चाँद और तारे

14तब परमेश्वर ने कहा, "आकाश में ज्योतियाँ होने
दो। यह ज्योतियाँ दिन को रात से अलग करेंगी। यह
ज्योतियाँ एक विशेष चिन्ह के रूप में प्रयोग की जाएंगी
जो यह बताएंगी कि विशेष सभाएं कब शुरू की जाएं
और यह दिनों तथा वर्षों के समयों को निश्चित करेंगे।
15वे पृथ्वी पर प्रकाश देने के लिए आकाश में ज्योतियाँ
ठहरें" और ऐसा ही हुआ।

16तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाई। परमेश्वर
ने उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर राज्य करने के
लिए बनाया और छोटी ज्योति को रात पर राज्य करने
के लिए बनाया। परमेश्वर ने तारे भी बनाए। 17परमेश्वर
ने इन ज्योतियों को आकाश में इसलिए रखा कि वह
पृथ्वी पर चमकें। 18परमेश्वर ने इन ज्योतियों को आकाश
में इसलिए रखा कि वह दिन तथा रात पर राज्य करें।
इन ज्योतियों ने उजियाले को अंधकार से अलग किया
और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

19तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह चौथा दिन था।

पाँचवाँ दिन–मछलियाँ और पक्षी

20तब परमेश्वर ने कहा, "जल, अनेक जलचरों से
भर जाए और पक्षी पृथ्वी के ऊपर वायुमण्डल में उड़ें।"

मण्डराता था हिब्रू भाषा में इस शब्द का अर्थ है "ऊपर उड़ना" या "तेजी से ऊपर से नीचे आना। जैसे कि एक पक्षी अपने बच्चों की रक्षा के लिए घोंसले के ऊपर मण्डराता है।

तब परमेश्वर ... उजियाला हो "उत्पत्ति में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का सृजन किया। जबकि 2पृथ्वी का कोई विशेष आकार न था, और समुद्र के ऊपर घनघोर अंधेरा छाया था और परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर मण्डरा रहा था। 3परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो!" या, "जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना शुरू की, 2जबकि पृथ्वी बिल्कुल खाली थी, और समुद्र पर अंधेरा छाया था, और पानी के ऊपर एक जोरदार हवा बही, 3परमेश्वर ने कहा, 'उजियाला होने दो।'"

वायुमण्डल इस हिब्रू शब्द का अर्थ "फैलाव" "विस्तार" या "मण्डल" है।

21इसलिए परमेश्वर ने समुद्र में बहुत बड़े बड़े जलजन्तु
बनाए। परमेश्वर ने समुद्र में विचरण करने वाले सभी
जीवित प्राणियों को बनाया। समुद्र में भिन्न-भिन्न जाति
के जलजन्तु हैं। परमेश्वर ने इन सब की सृष्टि की।
परमेश्वर ने हर तरह के पक्षी भी बनाये जो आकाश में
उड़ते हैं। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।
22परमेश्वर ने इन जानवरों को आशीष दी, और
कहा, "जाओ और बहुत से बच्चे उत्पन्न करो और
समुद्र के जल को भर दो। पक्षी भी बहुत बढ़ जाये।"
23तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह पाँचवाँ दिन
था।

छठवाँ दिन-भूमि के जीवजन्तु और मनुष्य

24तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी हर एक जाति के
जीवजन्तु उत्पन्न करे। बहुत से भिन्न जाति के जानवर
हों। हर जाति के बड़े जानवर और छोटे रेंगनेवाले
जानवर हो और यह जानवर अपने जाति के अनुसार
और जानवर बनाए" और यही सब हुआ।
25तो, परमेश्वर ने हर जाति के जानवरों को बनाया।
परमेश्वर ने जंगली जानवर, पालतू जानवर, और सभी
छोटे रेंगनेवाले जीव बनाये और परमेश्वर ने देखा कि
यह अच्छा है।
26तब परमेश्वर ने कहा, "अब हम मनुष्य बनाएं।
हम मनुष्य को अपने स्वरूप जैसा बनाएंगे। मनुष्य हमारी
तरह होगा। वह समुद्र की सारी मछलियों पर और
आकाश के पक्षियों पर राज करेगा। वह पृथ्वी के सभी
बड़े जानवरों और छोटें रेंगनेवाले जीवों पर राज करेगा।"
27इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में*
बनाया। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में
सृजा। परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया। 28परमेश्वर
ने उन्हें आशीष दी। परमेश्वर ने उनसे कहा, "तुम्हारे
बहुत सी संताने हों। पृथ्वी को भर दो और उस पर
राज्य करो। समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों
पर राज्य करो। हर एक पृथ्वी के जीवजन्तु पर राज्य
करो।"
29परमेश्वर ने कहा, "देखो, मैंने तुम लोगों को सभी
बीज वाले पेड़ पौधे और सारे फलदार पेड़ दिए हैं। ये
अन्न तथा फल तुम्हारा भोजन होगा। 30मैं प्रत्येक हरे
पेड़ पौधे जानवरों के लिए दे रहा हूँ। ये हरे पेड़-पौधे
उन का भोजन होगा। पृथ्वी का हर एक जानवर,
आकाश का हर एक पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले
सभी जीवजन्तु इस भोजन को खाएंगे।" ये सभी बातें
हुईं। 31परमेश्वर ने अपने द्वारा बनाई हर चीज़ को देखा
और परमेश्वर ने देखा कि हर चीज़ बहुत अच्छी है।
शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह छठवाँ दिन था।

सातवाँ दिन-विश्राम

2 इस तरह पृथ्वी, आकाश और उसकी प्रत्येक
वस्तु की रचना पूरी हुई। 2परमेश्वर ने अपने
किए जा रहे काम को पूरा कर लिया। अत: सातवें दिन
परमेश्वर ने अपने काम से विश्राम किया। 3परमेश्वर
ने सातवें दिन को आशीषित किया और उसे पवित्र दिन
बना दिया। परमेश्वर ने उस दिन को पवित्र दिन इसलिए
बनाया कि संसार को बनाते समय जो काम वह कर
रहा था उन सभी कार्यों से उसने उस दिन विश्राम
किया।

मानव जाति का आरम्भ

4यह पृथ्वी और आकाश का इतिहास है। यह कथा
उन चीज़ों की है, जो परमेश्वर द्वारा पृथ्वी और आकाश
बनाते समय, घटित हुई। 5तब पृथ्वी पर कोई पेड़ पौधा
नहीं था और खेतों में कुछ भी नहीं उग रहा था,
क्योंकि यहोवा ने तब तक पृथ्वी पर वर्षा नहीं भेजी थी
तथा पेड़ पौधों की देखभाल करने वाला कोई व्यक्ति भी
नहीं था। 6परन्तु कोहरा पृथ्वी से उठता था और जल
सारी पृथ्वी को सींचता था।
7तब यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी से धूल उठाई और
मनुष्य को बनाया। यहोवा ने मनुष्य की नाक में जीवन
की साँस फूँकी और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया।
8तब यहोवा परमेश्वर ने पूर्व में अदन नामक जगह में
एक बाग लगाया। यहोवा परमेश्वर ने अपने बनाए
मनुष्य को इसी बाग में रखा। 9यहोवा परमेश्वर ने हर
एक सुन्दर पेड़ और भोजन के लिए सभी अच्छे पेड़ों
को उस बाग में उगाया। बाग के बीच में परमेश्वर ने
जीवन के पेड़ को रखा और उस पेड़ को भी रखा जो
अच्छे और बुरे की जानकारी देता है।
10अदन से होकर एक नदी बहती थी और वह बाग़
को पानी देती थी। वह नदी आगे जाकर चार छोटी
नदियाँ बन गयी। 11पहली नदी का नाम पीशोन है। यह
नदी हवीला प्रदेश के चारों ओर बहती है। 12(उस प्रदेश
में सोना है और वह सोना अच्छा है। मोती और गोमेदक
रत्न उस प्रदेश में हैं।) 13दूसरी नदी का नाम गीहोन है
जो सारे कूश प्रदेश के चारों ओर बहती है। 14तीसरी
नदी का नाम दजला है। यह नदी अश्शूर के पूर्व में
बहती है। चौथी नदी फरात है।
15यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को अदन के बाग में
रखा। मनुष्य का काम पेड़-पौधे लगाना और बाग की
देख भाल करना था।
16यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, "तुम
बग़ीचे के किसी भी पेड़ से फल खा सकते हो। 17लेकिन
तुम अच्छे और बुरे की जानकारी देने वाले पेड़ का
फल नहीं खा सकते। यदि तुमने उस पेड़ का फल खा
लिया तो तुम मर जाओगे।"

परमेश्वर ... स्वरूप में तुलना करें उत्पत्ति 5:1-3

पहली स्त्री

18तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मैं समझता हूँ कि
मनुष्य का अकेला रहना ठीक नहीं है। मैं उसके लिए
एक सहायक बनाऊँगा जो उसके लिए उपयुक्त होगा।"
19यहोवा ने पृथ्वी के हर एक जानवर और आकाश
की हर एक पक्षी को भूमि की मिट्टी से बनाया। यहोवा
इन सभी जीवों को मनुष्य के सामने लाया और मनुष्य
ने हर एक का नाम रखा। 20मनुष्य ने पालतू जानवरों,
आकाश के सभी पक्षियों और जंगल के सभी जानवरों
का नाम रखा। मनुष्य ने अनेक जानवर और पक्षी देखे
लेकिन मनुष्य कोई ऐसा सहायक नहीं पा सका जो
उसके योग्य हो। 21अत: यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को
गहरी नींद में सुला दिया और जब वह सो रहा था,
यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य के शरीर से एक पसली
निकाल ली। तब यहोवा ने मनुष्य की उस त्वचा को
बन्द कर दिया जहाँ से उसने पसली निकाली थी। 22यहोवा
परमेश्वर ने मनुष्य की पसली से स्त्री की रचना की।
तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री को मनुष्य के पास लाया
23और मनुष्य ने कहा, "अन्तत! हमारे समान एक
व्यक्ति। इसकी हड्डियाँ मेरी हड्डियों से आई
इसका शरीर मेरे शरीर से आया। क्योंकि यह मनुष्य
से निकाली गई, इसलिए मैं इसे स्त्री कहूँगा।"
24इसलिए पुरुष अपने माता–पिता को छोड़ कर अपनी
पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन हो जाऐंगे।
25मनुष्य और उसकी पत्नी बाग में नंगे थे, परन्तु वे
लजाते नहीं थे।

पाप का आरम्भ

3 यहोवा द्वारा बनाए गए सभी जानवरों में सबसे अधिक
चतुर साँप* था। (वह स्त्री को धोखा देना चाहता
था।) साँप ने कहा, "हे स्त्री क्या परमेश्वर ने सचमुच
तुम से कहा है कि तुम बाग के किसी पेड़ से फल ना
खाना?"
2स्त्री ने साँप से कहा, "नहीं परमेश्वर ने यह नहीं
कहा। हम बाग के पेड़ों से फल खा सकते हैं। 3लेकिन
एक पेड़ है जिसके फल हम लोग नहीं खा सकते।
परमेश्वर ने हम लोगों से कहा, 'बाग के बीच के पेड़
के फल तुम नहीं खा सकते, तुम उसे छूना भी नहीं,
नहीं तो मर जाओगे।'"
4लेकिन साँप ने स्त्री से कहा, "तुम मरोगी नहीं।
5परमेश्वर जानता है कि यदि तुम लोग उस पेड़ से फल
खाओगे तो अच्छे और बुरे के बारे में जान जाओगे
और तब तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे।"
6स्त्री ने देखा कि पेड़ सुन्दर है। उसने देखा कि फल
खाने के लिए अच्छा है और पेड़ उसे बुद्धिमान बनाएगा।
तब स्त्री ने पेड़ से फल लिया और उसे खाया। उसका
पति भी उसके साथ था इसलिए उसने कुछ फल उसे
दिया और उसने उसे खाया।
7तब पुरुष और स्त्री दोनों बदल गए। उनकी आँखे
खुल गई और उन्होंने वस्तुओं को भिन्न दृष्टि से देखा।
उन्होंने देखा कि उनके कपड़े नहीं हैं, वे नंगे हैं।
इसलिए उन्होंने कुछ अंजीर के पत्ते लेकर उन्हें जोड़ा
और कपड़ो के स्थान पर अपने लिए पहना।
8तब पुरुष और स्त्री ने दिन के ठण्डे समय में यहोवा
परमेश्वर के आने की आवाज बाग में सुनी। वे बाग में
पेड़ों के बीच में छिप गए। 9यहोवा परमेश्वर ने पुकार
कर पुरुष से पूछा, "तुम कहाँ हो?"
10पुरुष ने कहा, "मैंने बाग में तेरे आने की आवाज
सुनी और मैं डर गया। मैं नंगा था, इसलिए छिप गया।"
11यहोवा परमेश्वर ने पुरुष से पूछा, "तुम्हें किसने
बताया कि तुम नंगे हो? तुम किस कारण से शरमाए?
क्या तुमने उस विशेष पेड़ का फल खाया जिसे मैंने
तुम्हें न खाने की आज्ञा दी थी?"
12पुरुष ने कहा, "तूने जो स्त्री मेरे लिए बनाई
उसने उस पेड़ से मुझे फल दिए, और मैंने उसे
खाया।"
13तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, "यह तुमने
क्या किया?" स्त्री ने कहा, "साँप ने मुझे धोखा दिया।
उसने मुझे बेवकूफ बनाया और मैंने फल खा लिया।"
14तब यहोवा परमेश्वर ने साँप से कहा, "तुमने यह
बहुत बुरी बात की। इसलिए तुम्हारा बुरा ही होगा। अन्य
जानवरों की अपेक्षा तुम्हारा बहुत बुरा होगा। तुम अपने
पेट के बल रेंगने को मजबूर होगे। और धूल चाटने को
विवश होगे जीवन के सभी दिनों में।
15मैं तुम्हें और स्त्री को एक दूसरे का दुश्मन
बनाऊँगा।तुम्हारे बच्चे और इसके बच्चे आपस में दुश्मन
होंगे। तुम इसके बच्चे के पैर में डसोगे और वह तुम्हारा
सिर कुचल देगा।"
16 तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, "मैं तेरे
गर्भावस्था में तुझे बहुत दु:खी करूँगा और जब तू बच्चा
जनेगी तब तुझे बहुत पीड़ा होगी। तेरी चाहत तेरे पति के
लिये होगी किन्तु वह तुझ पर प्रभुता करेगा।"*
17तब यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य से कहा, "मैंने
आज्ञा दी थी कि तुम विशेष पेड़ का फल न खाना।
किन्तु तुमने अपनी पत्नी की बाते सुनीं और तुमने उस
पेड़ का फल खाया। इसलिए मैं तुम्हारे कारण इस भूमि
को शाप देता हूँ* अपने जीवन के पूरे काल तक उस

साँप शायद शैतान। उसे बहुधा साँप, अजदहा और "सागर का दैत्य" कहा गया है।

तेरी चाहत ... प्रभुता करेगा शाब्दिक तुम अपने पति पर हुकम चलाना चाहोगी। लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा।

शाप देता हूँ शाब्दिक किसी वस्तु या व्यक्ति के लिये बुरा आत्मा लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा।

भोजन के लिए जो धरती देती है तुम्हें कठिन मेहनत करनी पड़ेगी।
18तुम उन पेड़ पौधों को खाओगे जो खेतों में उगते हैं।
किन्तु भूमि तुम्हारे लिए काँटे और खर-पतवार पैदा करेगी।
19तुम अपने भोजन के लिए कठिन परिश्रम करोगे।
तुम तब तक परिश्रम करोगे जब तक माथे पर पसीना न आ जाये। तुम तब तक कठिन मेहनत करोगे जब तक तुम्हारी मृत्यु न आ जाये। उस समय तुम दुबारा मिट्टी बन जाओगे। जब मैंने तुमको बनाया था, तब तुम्हें मिट्टी से बनाया था और जब तुम मरोगे तब तुम उसी मिट्टी में पुन: मिल जाओगे।"
20आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा, क्योंकि सारे मनुष्यों की वह आदिमाता थी।
21यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य और उसकी पत्नी के लिए जानवरों के चमड़ों से पोशाक बनाया। तब यहोवा ने ये पोशाक उन्हें दी। 22यहोवा परमेश्वर ने कहा, "देखो, पुरुष हमारे जैसा हो गया है। पुरुष अच्छाई और बुरा जानता है और अब पुरुष जीवन के पेड़ से भी फल ले सकता है। अगर पुरुष उस फल को खायेगा तो सदा ही जीवित रहेगा।"
23तब यहोवा परमेश्वर ने पुरुष को अदन के बाग छोड़ने के लिए मजबूर किया। जिस मिट्टी से आदम बना था उस पृथ्वी पर आदम को कड़ी मेहनत करनी पड़ी। 24परमेश्वर ने आदम को बाग से बाहर निकाल दिया। तब परमेश्वर ने करूब (स्वर्गदूतों) को बाग के फाटक की रखवाली के लिए रखा। परमेश्वर ने वहाँ एक आग की तलवार भी रख दी। यह तलवार जीवन के पेड़ के रास्ते की रखवाली करती हुई चारों ओर चमकती थी।

पहला परिवार

4 आदम और उसकी पत्नी हव्वा के बीच शारीरिक सम्बन्ध हुए और हव्वा ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे का नाम कैन रखा गया। हव्वा ने कहा, "यहोवा की मदद से मैंने एक मनुष्य पाया है।"
2इसके बाद हव्वा ने दूसरे बच्चे को जन्म दिया। यह बच्चा कैन का भाई हाबिल था। हाबिल गड़ेरिया बना। कैन किसान बना।

पहली हत्या

3-4फसल के समय* कैन एक भेंट यहोवा के पास लाया। जो अन्न कैन ने अपनी ज़मीन में उपजाया था उसमें से थोड़ा अन्न वह लाया। परन्तु हाबिल अपने जानवरों के झुण्ड में से कुछ जानवर लाया। हाबिल अपनी सबसे अच्छी भेड़ का सबसे अच्छा हिस्सा लाया।*
यहोवा ने हाबिल तथा उसकी भेंट को स्वीकार किया।
5परन्तु यहोवा ने कैन तथा उसके द्वारा लाई भेंट को स्वीकार नहीं किया इस कारण कैन क्रोधित हो गया। वह बहुत व्याकुल और निराश* हो गया। 6यहोवा ने कैन से पूछा, "तुम क्रोधित क्यों हो? तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ क्यों दिखाई पड़ता है? 7अगर तुम अच्छे काम करोगे तो तुम मेरी दृष्टि में ठीक रहोगे। तब मैं तुम्हें अपनाऊँगा। लेकिन अगर तुम बुरे काम करोगे तो वह पाप तुम्हारे जीवन में रहेगा। तुम्हारे पाप तुम्हें अपने वश में रखना चाहेंगे लेकिन तुम को अपने पाप को अपने बस में रखना होगा।"*
8कैन ने अपने भाई हाबिल से कहा, "आओ हम मैदान में चलें।" इसलिए कैन और हाबिल मैदान में गए। तब कैन ने अपने भाई पर हमला किया और उसे मार डाला। 9बाद में यहोवा ने कैन से पूछा, "तुम्हारा भाई हाबिल कहाँ है?"
कैन ने जवाब दिया, "मैं नहीं जानता। क्या यह मेरा काम है कि मैं अपने भाई की निगरानी और देख भाल करूँ?"
10तब यहोवा ने कहा, "तुमने यह क्या किया? तुम्हारे भाई का खून जमीन से बोल रहा है कि क्या हो गया है?
11तुमने अपने भाई की हत्या की है, पृथ्वी तुम्हारे हाथों से उसका खून लेने के लिए खुल गई है। इसलिए अब मैं उस जमीन को बुरा करने वाली चीज़ों को पैदा करूँगा।
12बीते समय में तुमने फ़सलें लगाई और वे अच्छी उगीं। लेकिन अब तुम फसल बोओगे और जमीन तुम्हारी फसल अच्छी होने में मदद नहीं करेगी। तुम्हें पृथ्वी पर घर नहीं मिलेगा। तुम जगह जगह भटकोगे।"
13तब कैन ने कहा, "यह दण्ड इतना अधिक है कि मैं सह नहीं सकता। 14मेरी ओर देख। तूने मुझे जमीन में फसल के काम को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया है और मैं अब तेरे करीब भी नहीं रहूँगा। मेरा कोई घर नहीं होगा और पृथ्वी पर से मैं नष्ट हो जाऊँगा और यदि कोई मनुष्य मुझे पाएगा तो मार डालेगा।"
15तब यहोवा ने कैन से कहा, "मैं यह नहीं होने दूँगा। यदि कोई तुमको मारेगा तो मैं उस आदमी को बहुत

फसल के समय इसका अर्थ फसल काटने का समय। या कुछ निश्चित समय के बाद भी हो सकता है।

अच्छा हिस्सा लाया शाब्दिक उसकी चर्बी। यह जानवर का वह हिस्सा था जो हमेशा परमेश्वर के लिये बचाया जाता था। जब यह वेदी पर जलाया जाता था तो उसमें से बहुत मनभावनी सुगन्ध निकलती थी।

व्याकुल और निराश शाब्दिक, "उसका मुँह झुक गया"

लेकिन ... रखना होगा अगर तुम सही नहीं करते तब पाप तुम्हारे दरवाजे पर एक सिंह की तरह घात लगा है। यह तुम्हें दबोचना चाहता है किन्तु तुम इस पर हावी रहो।

कठोर दण्ड दूँगा।" तब यहोवा ने कैन पर एक चिन्ह बनाया। यह चिन्ह वह बताता था कि कैन को कोई न मारे।

कैन का परिवार

16तब कैन यहोवा को छोड़कर चला गया। कैन नोद देश में रहने लगा। 17कैन ने अपनी पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। वह गर्भवती हुई। उसने हनोक नामक बच्चे को जन्म दिया। कैन ने एक शहर बसाया, और उसका नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक ही रखा। 18हनोक से ईराद उत्पन्न हुआ, ईराद से महूयाएल उत्पन्न हुआ, महूयाएल से मतूशाएल उत्पन्न हुआ और मतूशाएल से लेमेक उत्पन्न हुआ।

19लेमेक ने दो स्त्रियों से विवाह किया। एक पत्नी का नाम आदा और दूसरी का नाम सिल्ला था। 20आदा ने याबाल को जन्म दिया। याबाल उन लोगों का पिता* था जो तम्बूओं में रहते थे तथा पशुओं का पालन करके जीवन-निर्वाह करते थे। 21आदा का दूसरा पुत्र यूबाल भी था। यूबाल, याबाल का भाई था। यूबाल उन लोगों का पिता था जो वीणा और बाँसुरी बजाते थे। 22सिल्ला ने तूबलकैन को जन्म दिया। तूबलकैन उन लोगों का पिता था जो काँसे और लोहे का काम करते थे। तूबलकैन की बहन का नाम नामा था।

23लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा:

"ऐ आदा और सिल्ला मेरी बात सुनो। लेमेक की पत्नियों जो बाते मैं कहता हूँ, सुनो। एक पुरुष ने मुझे चोट पहुँचाई,मैंने उसे मार डाला। एक जवान ने मुझे चोट दी इसलिए मैंने उसे मार डाला।

24कैन की हत्या का दण्ड बहुत भारी था। इसलिए मेरी हत्या का दण्ड भी उससे बहुत, बहुत भारी होगा।"

आदम और हव्वा को नया पुत्र हुआ

25आदम ने हव्वा के साथ फिर शारीरिक सम्बन्ध किया और हव्वा ने एक और बच्चे को जन्म दिया। उन्होंने इस बच्चे का नाम शेत रखा। हव्वा ने कहा, "यहोवा ने मुझे दूसरा पुत्र दिया है। कैन ने हाबिल को मार डाला किन्तु अब शेत मेरे पास है।"

26शेत का भी एक पुत्र था। इसका नाम एनोश था। उस समय लोग यहोवा पर विश्वास करने लगे।*

उन लोगों का पिता था इसका मतलब शायद यह है इसने इन चीजों का आविष्कार किया या इनका इस्तेमाल करने वाला यह पहला व्यक्ति था।

उस समय ... लगे शाब्दिक उस समय लोग यहोवा को पुकारने लगे।

आदम के परिवार का इतिहास

5 यह अध्याय आदम के परिवार के बारे में है। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में* बनाया। 2परमेश्वर ने एक पुरुष और एक स्त्री को बनाया। जिस दिन परमेश्वर ने उन्हें बनाया, आशीष दी। एवं उसका नाम "आदम" रखा।

3जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हो गया तब वह एक और बच्चे का पिता हुआ। यह पुत्र ठीक आदमसा दिखाई देता था। आदम ने पुत्र का नाम शेत रखा। 4शेत के जन्म के बाद आदम आठ सौ वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में आदम के अन्य पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 5इस तरह आदम पूरे नौ सौ तीस वर्ष तक जीवित रहा, तब वह मरा। 6जब शेत एक सौ पाँच वर्ष का हो गया तब उसे एनोश नाम का पुत्र पैदा हुआ।

7एनोश के जन्म के बाद शेत आठ सौ सात वर्ष जीवित रहा। इसी शेत के अन्य पुत्र-पुत्रियाँ पैदा हुई। 8इस तरह शेत पूरे नौ सौ बारह वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

9एनोश जब नब्बे वर्ष का हुआ, उसे केनान नाम का पुत्र पैदा हुआ। 10केनान के जन्म के बाद एनोश आठ सौ पन्द्रह वर्ष जीवित रहा। इन दिनों इसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 11इस तरह एनोश पूरे नौ सौ पाँच वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

12जब केनान सत्तर वर्ष का हुआ, उसे महललेल नाम का पुत्र पैदा हुआ। 13महललेल के जन्म के बाद केनान आठ सौ चालीस वर्ष जीवित रहा। इन दिनों केनान के दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 14इस तरह केनान पूरे नौ सौ दस वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

15जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ, उसे येरेद नाम का पुत्र पैदा हुआ। 16येरेद के जन्म के बाद महललेल आठ सौ तीस वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 17इस तरह महललेल पूरे आठ सौ पंचानबे वर्ष जीवित रहा। तब वह मरा।

18जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ तो उसे हनोक नाम का पुत्र पैदा हुआ। 19हनोक के जन्म के बाद येरेद आठ सौ वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 20इस तरह येरेद पूरे नौ सौ बासठ वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

21जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, उसे मतूशेलह नाम का पुत्र पैदा हुआ। 22मतूशेलह के जन्म के बाद हनोक परमेश्वर के साथ तीन सौ वर्ष रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र-पुत्रियाँ पैदा हुई। 23इस तरह हनोक पूरे तीन सौ पैंसठ वर्ष जीवित रहा। 24एक दिन हनोक परमेश्वर

अपने स्वरूप में उसने उसे परमेश्वर के समान बनाया। तुलना करे उत्पत्ति 1:27; 5:3

के साथ चल रहा था* और गायब हो गया क्योंकि
परमेश्वर ने उसे उठा लिया। 25जब मतूशेलह एक सौ
सत्तासी वर्ष का हुआ, उसे लेमेक नाम का पुत्र पैदा
हुआ। 26लेमेक के जन्म के बाद मतूशेलह सात सौ
बयासी वर्ष जीवित रहा। इन दिनों उसे दूसरे पुत्र और
पुत्रियाँ पैदा हुई। 27इस तरह मतूशेलह पूरे नौ सौ उनहत्तर
वर्ष जीवित रहा, तब यह मरा।

28जब लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ, वह एक
पुत्र का पिता बना। 29लेमेक के पुत्र का नाम नूह रखा।
लेमेक ने कहा, "हम किसान लोग बहुत कड़ी मेहनत
करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने भूमि को शाप दे दिया है।
किन्तु नूह हम लोगों को विश्राम देगा।"

30नूह के जन्म के बाद, लेमेक पाँच सौ पंचानबे वर्ष
जीवित रहा। इन दिनों उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा
हुई। 31इस तरह लेमेक पूरे सात सौ सतहत्तर वर्ष जीवित
रहा, तब वह मरा।

32जब नूह पाँच सौ वर्ष का हुआ, उसके शेम, हाम,
और येपेत नाम के पुत्र हुए।

लोग पापी हो गये

6 पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ती रही। इन लोगों
के लड़कियाँ पैदा हुई। 2-4परमेश्वर के पुत्रों ने
देखा कि ये लड़कियाँ सुन्दर हैं। इसलिए परमेश्वर के
पुत्रों ने अपनी इच्छा के अनुसार जिससे चाहा उसी से
विवाह किया।

इन स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया। इन दिनों और
बाद में भी नेफिलिम लोग उस देश में रहते थे। ये प्रसिद्ध
लोग थे। ये लोग प्राचीन काल से बहुत वीर थे।*

तब यहोवा ने कहा, "मनुष्य शरीर ही है। मैं सदा के
लिए इनसे अपनी आत्मा को परेशान नहीं होने दूँगा। मैं
उन्हें एक सौ बीस वर्ष का जीवन दूँगा।"*

5यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य बहुत अधिक
पापी हैं। यहोवा ने देखा कि मनुष्य लगातार बुरी बातें ही
सोचता है। 6यहोवा को इस बात का दुःख हुआ, कि मैंने
पृथ्वी पर मनुष्यों को क्यों बनाया? यहोवा इस बात से
बहुत दुःखी हुआ। 7इसलिए यहोवा ने कहा, "मैं अपनी
बनाई पृथ्वी के सारे लोगों को खतम कर दूँगा। मैं हर
एक व्यक्ति, जानवर और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक
जीवजन्तु को खतम करूँगा। मैं आकाश के पक्षियों को
भी खतम करूँगा। क्यों? क्योंकि मैं इस बात से दुःखी हूँ
कि मैंने इन सभी चीज़ों को बनाया।"

8लेकिन पृथ्वी पर यहोवा को खुश करने वाला एक
व्यक्ति था–नूह।

नूह और जल प्रलय

9यह कहानी नूह के परिवार की है। अपने पूरे
जीवन में नूह ने सदैव परमेश्वर का अनुसरण किया।
10नूह के तीन पुत्र थे, शेम, हाम, और येपेत।

11-12परमेश्वर ने पृथ्वी पर दृष्टि की और उसने
देखा की पृथ्वी को लोगों ने बर्बाद कर दिया है। हर
जगह हिंसा फैली हुई। लोग पापी और भ्रष्ट हो गये है,
और उन्होंने पृथ्वी पर अपना जीवन बर्बाद कर दिया
है।

13इसलिए परमेश्वर ने नूह से कहा, "सारे लोगों ने
पृथ्वी को क्रोध और हिंसा से भर दिया है। इसलिए मैं
सभी जीवित प्राणियों को नष्ट करूँगा। मैं उनको पृथ्वी
से हटाऊँगा। 14गोपेर की लकड़ी* का उपयोग करो
और अपने लिए एक जहाज बनाओ।जहाज में कमरे
बनाओ* और उसे राल से भीतर और बाहर पोत दो।

15"जो जहाज मैं बनवाना चाहता हूँ उसका नाप तीन
सौ हाथ* लम्बाई, पचास हाथ* चौड़ाई, तीस हाथ
ऊँचाई है। 16जहाज के लिए छत से करीब एक हाथ
नीचे एक खिड़की बनाओ* जहाज की बगल में एक
दरवाज़ा बनाओ। जहाज में तीन मंजिलें बनाओ। ऊपरी
मंजिल, बीच की मंजिल और नीचे की मंजिल।"

17"तुम्हें जो बता रहा हूँ उसे समझो। मैं पृथ्वी पर बड़ा
भारी जल का बाढ़ लाऊँगा। आकाश के नीचे सभी
जीवों को मैं नष्ट कर दूँगा। पृथ्वी के सभी जीव मर
जाएंगें। 18किन्तु मैं तुमको बचाऊँगा। तब मैं तुम से एक
विशेष वाचा करूँगा। तुम, तुम्हारे पुत्र तुम्हारी पत्नी
तुम्हारे पुत्रों की पत्नियाँ सभी जहाज़ में सवार होगे।

हनोक ... रहा था शाब्दिक "हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था।"

ये लोग ... वीर थे नेफिलिम लोग उन दिनों उस देश में रहते थे। ये इसके बाद भी वहाँ रहते रहे जब परमेश्वर के पुत्रों ने मानव की पुत्रियों से विवाह किया और इन स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया। ये बच्चे प्रसिद्ध हुए। ये प्राचीन काल से वीर थे।"

मनुष्य ... दूँगा मेरी आत्मा मनुष्य के साथ सदा नहीं रहेगी क्योंकि वे हाड़ माँस हैं। आदमी केवल 120 वर्ष जीवित रहेगा। या "मेरा विवेक लोगों का न्याय सदा नहीं करता रहेगा क्योंकि वे सभी 120 वर्ष की उम्र में ही मरेंगे।

गोपेर की लकड़ी हम नहीं जानते कि यह असली में किस तरह की लकड़ी है। शायद यह एक किस्म का एक पेड़ हो या तराशी हुई लकड़ी।

जहाज में कमरे बनाओ जहाज के लिए तैल–जूट आदि बनाओ, "ये छोटे पौधे हो सकते हैं जो जहाजों के जोड़ों में घुसाए जाते थे और राल से पोते दिए

तीन सौ हाथ चार सौ पचास फीट।

पचास हाथ पचहत्तर फीट।

तीस हाथ पैंतालीस फीट।

एक हाथ शाब्दिक ढेढ़ फीट।

जहाज ... बनाओ जहाज के लिए करीब ढेढ़ फीट ऊँचा एक खुला भाग रखो।

19साथ ही साथ पृथ्वी पर जीवित प्राणियों के जोड़े भी
तुम्हें लाने होंगे। हर एक के नर और मादा को जहाज
में लाओ। अपने साथ उनको जीवित रखो। 20पृथ्वी की
हर तरह की चिड़ियों के जोड़ों को भी खोजो। पृथ्वी के
हर तरह के जानवरों के जोड़ों को भी खोजो। पृथ्वी पर
रेंगने वाले हर एक जीव के जोड़ों को भी खोजो। पृथ्वी
के हर प्रकार के जानवरों के नर और मादा तुम्हारे
साथ होंगे। जहाज पर उन्हें जीवित रखो। 21पृथ्वी के
सभी प्रकार के भोजन भी जहाज पर लाओ। यह भोजन
तुम्हारे लिए तथा जानवरों के लिए होगा।"

22नूह ने यह सब कुछ किया। नूह ने परमेश्वर की
सारी आज्ञाओं का पालन किया।

जल प्रलय आरम्भ होता है

7 तब यहोवा ने नूह से कहा, "मैंने देखा है कि इस
समय के पापी लोगों में तुम्हीं एक अच्छे व्यक्ति हो।
इसलिए तुम अपने परिवार को इकट्ठा करो और तुम
सभी जहाज में चले जाओ। 2हर एक शुद्ध जानवर के
सात जोड़े, (सात नर तथा सात मादा) साथ में ले लो
और पृथ्वी के दूसरे अशुद्ध जानवरों के एक–एक जोड़े
एक नर और एक मादा लाओ। इन सभी जानवरों को
अपने साथ जहाज में ले जाओ। 3हवा में उड़ने वाले
सभी पक्षियों के सात जोड़े (सात नर और सात मादा)
लाओ। इससे ये सभी जानवर पृथ्वी पर जीवित रहेंगे,
जब दूसरे जानवर नष्ट हो जाएंगे। 4अब से सातवें दिन मैं
पृथ्वी पर बहुत भारी वर्षा भेजूँगा। यह वर्षा चालीस दिन
और चालीस रात होती रहेगी। पृथ्वी के सभी जीवित
प्राणी नष्ट हो जाएंगे। मेरी बनाई सभी चीज़ें खतम हो
जाएंगी।" 5नूह ने उन सभी बातों को माना जो यहोवा ने
आज्ञा दी।

6वर्षा आने के समय नूह छः सौ वर्ष का था। 7नूह
और उसका परिवार बाढ़ के जल से बचने के लिए
जहाज में चला गया। नूह की पत्नी, उसके पुत्र और
उनकी पत्नियाँ उसके साथ थीं। 8पृथ्वी के सभी शुद्ध
जानवर एवं अन्य जानवर, पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने
वाले सभी जीव 9नूह के साथ जहाज में चढ़े। इन जानवरों
के नर और मादा जोड़े परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार
जहाज में चढ़े। 10सात दिन बाद बाढ़ प्रारम्भ हुई। धरती
पर वर्षा होने लगी।

11-13दूसरे महीने के सातवें दिन, जब नूह छः सौ वर्ष
का था, जमीन के नीचे के सभी सोते खुल पड़े और
जमीन से पानी बहना शुरु हो गया। उसी दिन पृथ्वी पर
भारी वर्षा होने लगी। ऐसा लगा मानो आकाश की
खिड़कियाँ खुल पड़ी हों। चालीस दिन और चालीस रात
तक वर्षा पृथ्वी पर होती रही।" ठीक उसी दिन नूह,
उसकी पत्नी, उसके पुत्र, शेम, हाम और येपेत और
उनकी पत्नियाँ जहाज़ पर चढ़ें। 14वे लोग और पृथ्वी
के हर एक प्रकार के जानवर जहाज में थे। हर प्रकार
के मवेशी, पृथ्वी पर रेंगने वाले हर प्रकार के जीव
और हर प्रकार के पक्षी जहाज में थे। 15ये सभी जानवर
नूह के साथ जहाज़ में चढ़े। हर जाति के जीवित जानवरों
के ये जोड़े थे। 16परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सभी
जानवर जहाज़ में चढ़े। उनके अन्दर जाने के बाद
यहोवा ने दरवाजा बन्द कर दिया।

17चालीस दिन तक पृथ्वी पर जल प्रलय होता रहा।
जल बढ़ना शुरु हुआ और उसने जहाज को जमीन से
ऊपर उठा दिया। 18जल बढता रहा और जहाज पृथ्वी से
बहुत ऊपर तैरती रही। 19जल इतना ऊँचा उठा कि
ऊँचे–से–ऊँचे पहाड़ भी पानी में डूब गए। 20जल पहाड़ों
के ऊपर बढ़ता रहा। सबसे ऊँचे पहाड़ से तेरह हाथ
ऊँचा था।

21-22पृथ्वी के सभी जीव मारे गए। हर एक स्त्री और
पुरुष मर गए। सभी पक्षियों और सभी तरह के जानवर
मर गए। 23इस तरह परमेश्वर ने पृथ्वी के सभी जीवित
हर एक मनुष्य, हर एक जानवर, हर एक रेंगने वाले
जीव और हर एक पक्षी को नष्ट कर दिया। ये सभी
पृथ्वी से खतम हो गए। केवल नूह, उसके साथ जहाज
में चढ़े लोगों और जानवरों का जीवन बचा रहा। 24और
जल एक सौ पचास दिन तक पृथ्वी को डुबाए रहा।

जल प्रलय खतम होता है

8 लेकिन परमेश्वर नूह को नहीं भूला। परमेश्वर ने
नूह और जहाज में उसके साथ रहने वाले सभी
पशुओं और जानवरों को याद रखा। परमेश्वर ने पृथ्वी
पर आँधी चलाई और सारा जल गायब होने लगा।

2आकाश से वर्षा रूक गई और पृथ्वी के नीचे से
पानी का बहना भी रूक गया। 3पृथ्वी को डुबाने वाला
पानी बराबर घटता चला गया। एक सौ पचास दिन बाद
पानी इतना उतर गया कि जहाज फिर से भूमि पर आ
गई। 4जहाज अरारात के पहाड़ों में से एक पर आ
टिकी। यह सातवें महीने का सत्तरहवाँ दिन था। 5जल
उतरता गया और दसवें महीने के पहले दिन पहाड़ों की
चोटियाँ जल के ऊपर दिखाई देने लगी। 6जहाज में बनी
खिड़की को नूह ने चालीस दिन बाद खोला। 7नूह ने
एक कौवे को बाहर उड़ाया। कौवा उड़ कर तब तक
फिरता रहा जब तक कि पृथ्वी पूरी तरह से न सूख
गयी। 8नूह ने एक फ़ाख्ता भी बाहर भेजा। वह जानना
चाहता था कि पृथ्वी का पानी कम हुआ है या नहीं।

9फ़ाख्ते को कहीं बैठने की जगह नहीं मिली क्योंकि
अभी तक पानी पृथ्वी पर फैला हुआ था। इसलिये वह
नूह के पास जहाज पर वापस लौट आया। नूह ने अपना
हाथ बढ़ा कर फ़ाख्ते को वापस जहाज के अन्दर
लेलिया। 10सात दिन बाद नूह ने फिर फ़ाख्ते को भेजा।
11उस दिन दोपहर बाद फ़ाख्ता नूह के पास आया।

फ़ाख्ते के मुँह में एक ताज़ी जैतून की पत्ती थी। यह चिन्ह नूह को यह बताने के लिए था कि अब पानी पृथ्वी पर धीरे-धीरे कम हो रहा है। 12नूह ने सात दिन बाद फिर फ़ाख्ते को भेजा। किन्तु इस समय फ़ाख्ता लौटा ही नहीं।

13उसके बाद नूह ने जहाज का दरवाजा खोला* नूह ने देखा और पाया कि भूमि सूखी है। यह वर्ष के पहले महीने का पहला दिन था। नूह छः सौ एक वर्ष का था। 14दूसरे महीने के सत्ताइसवें दिन तक भूमि पूरी तरह सूख गई।

15तब परमेश्वर ने नूह से कहा, 16"जहाज को छोड़ो। तुम, तुम्हारी पत्नी, तुम्हारे पुत्र और उनकी पत्नियाँ सभी अब बाहर निकलों। 17हर एक जीवित प्राणी, सभी पक्षियों, जानवरों तथा पृथ्वी पर रेंगने वाले सभी को जहाज के बाहर लाओ। ये जानवर अनेक जानवर उत्पन्न करेंगे और पृथ्वी को फिर भर देंगे।"

18अतः नूह अपने पुत्रों, अपनी पत्नी, अपने पुत्रों की पत्नियों के साथ जहाज से बाहर आया। 19सभी जानवरों, सभी रेंगने वाले जीवों और सभी पक्षियों ने जहाज को छोड़ दिया। सभी जानवर जहाज से नर और मादा के जोड़े में बाहर आए।

20तब नूह ने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई। उसने कुछ शुद्ध पक्षियों और कुछ शुद्ध जानवरो* को लिया और उनको वेदी पर परमेश्वर को भेंट के रूप में जलाया।

21यहोवा इन बलियों की सुगन्ध पाकर खुश हुआ। यहोवा ने मन-ही-मन कहा, "मैं फिर कभी मनुष्य के कारण पृथ्वी को शाप नहीं दूँगा। मानव छोटी आयु से ही बुरी बातें सोचने लगता हैं। इसलिये जैसा मैंने अभी किया है इस तरह मैं अब कभी भी सारे प्राणियों को सजा नहीं दूँगा। 22जब तक यह पृथ्वी रहेगी तब तक इस पर फसल उगाने और फ़सल काटने का समय सदैव रहेगा। पृथ्वी परगरमी और जाड़ा तथा दिन और रात सदा होते रहेंगे।"

नया आरम्भ

9 परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उनसे कहा, "बहुत से बच्चे पैदा करो और अपने लोगों से पृथ्वी को भर दो। 2पृथ्वी के सभी जानवर तुम्हारे डर से काँपेंगे और आकाश के हर एक पक्षी भी तुम्हारा आदर करेंगे और तुमसे डरेंगे। पृथ्वी पर रेंगने वाला हर एक जीव और समुद्र की हर एक मछली तुम लोगों का आदर करेगी और तुम लोगो से डरेगी। तुम इन सभी के ऊपर शासन करोगे। 3बीते समय में तुमको मैंने हर पेड़-पौधे खाने को दिए थे। अब हर एक जानवर भी तुम्हारा भोजन होगा। मैं पृथ्वी की सभी चीज़ें तुमको देता हूँ-अब ये तुम्हारी हैं। 4मैं तुम्हें एक आज्ञा देता हूँ कि तुम किसी जानवर को तब तक न खाना जब तक कि उसमें जीवन (खून) है। 5मैं तुम्हारे जीवन बदले में तुम्हारा खून माँगूगा। अर्थात् मैं उस जानवर का जीवन मागूँगा जो किसी व्यक्ति को मारेगा और मैं हर एक ऐसे व्यक्ति का जीवन मागूँगा जो दूसरे व्यक्ति को जिन्दगी नष्ट करेगा।"

6"परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया है। इसलिए जो कोई किसी व्यक्ति का खून बहाएगा, उसका खून व्यक्ति द्वारा ही बहाया जाएगा।"

7"नूह तुम्हें और तुम्हारे पुत्रों के अनेक बच्चे हों और धरती को लोगों से भर दो।"

8तब परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रो से कहा, 9"अब मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को वचन देता हूँ। 10मैं यह वचन तुम्हारे साथ जहाज से बाहर आने वाले सभी पक्षियों, सभी पशुओं तथा सभी जानवरों को देता हूँ। मैं यह वचन पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों को देता हूँ।" 11मैं तुमको वचन देता हूँ, "जल की बाढ़ से पृथ्वी का सारा जीवन नष्ट हो गया था। किन्तु अब यह कभी नहीं होगा। अब बाढ़ फिर कभी पृथ्वी के जीवन को नष्ट नहीं करेगी।"

12और परमेश्वर ने कहा, "यह प्रमाणित करने के लिए कि मैंने तुमको वचन दिया है कि मैं तुमको कुछ दूँगा। यह प्रमाण बतायेगा कि मैंने तुम से और पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों से एक वाचा बाँधी है। यह वाचा भविष्य में सदा बनी रहेगी जिसका प्रमाण यह है 13कि मैंने बादलों में मेघधनुष बनाया है। यह मेघधनुष मेरे और पृथ्वी के बीच हुए वाचा का प्रमाण है। 14जब मैं पृथ्वी के ऊपर बादलों को लाऊँगा तो तुम बादलों में मेघधनुष को देखोगे। 15जब मैं इस मेघधनुष को देखूँगा तब मैं तुम्हारे, पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों और अपने बीच हुई वाचा को याद करूँगा। यह वाचा इस बात की है कि बाढ़ फिर कभी पृथ्वी के प्राणियों को नष्ट नहीं करेगी। 16जब मैं ध्यान से बादलों में मेघधनुष को देखूँगा तब मैं उस स्थायी वाचा को याद करूँगा। मैं अपने और पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों के बीच हुई वाचा को याद करूँगा।"

17इस तरह यहोवा ने नूह से कहा, "वह मेघधनुष मेरे और पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों के बीच हुई वाचा का प्रमाण है।"

समस्यायें फिर शुरु होती हैं

18नूह के पुत्र उसके साथ जहाज से बाहर आए। उनके नाम शेम, हाम और येपेत थे। (हाम तो कनान

दरवाजा खोला पर्दे को हटाया

शुद्ध ... शुद्ध जानवर वे पक्षियों और जानवर जिनके बारे में यहोवा ने कहा कि ये भोजन और बलि बनाए जा सकते हैं।

का पिता था।) 19ये तीनों नूह के पुत्र थे और संसार के
सभी लोग इन तीनों से ही पैदा हुए।
20नूह किसान बना। उसने अंगूरों का बाग लगाया।
21नूह ने दाखमधु बनाया और उसे पिया। वह मतवाला
हो गया और अपने तम्बू में लेट गया। नूह कोई कपड़ा
नहीं पहना था। 22कनान के पिता हाम ने अपने पिता
को नंगा देखा। तम्बू के बाहर अपने भाईयों से हाम ने
यह बताया। 23तब शेम और येपेत ने एक कपड़ा लिया।
वे कपड़े को पीठ पर डाल कर तम्बू में ले गए। वे उल्टे
मुँह तम्बू में गए। इस तरह उन्होंने अपने पिता को नंगा
नहीं देखा।
24बाद में नूह सोकर उठा। वह दाखमधु के कारण
सो रहा था। तब उसे पता चला कि उसके सब से छोटे
पुत्र हाम ने उसके बारे में क्या किया है। 25इसलिए नूह
ने शाप दिया,
"यह शाप कनान के लिए हो कि वह अपने भाईयों
का दास हो।"
26नूह ने यह भी कहा, "शेम का परमेश्वर यहोवा
धन्य हो! कनान शेम का दास हो।
27 परमेश्वर येपेत को अधिक भूमि दे। परमेश्वर
शेम के तम्बूओं में रहे और कनान उनका दास बनें।"
28बाढ़ के बाद नूह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित रहा।
29नूह पूरे साढ़े नौ सौ वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

राष्ट बढ़े और फैले

10 नूह के पुत्र शेम, हाम, और येपेत थे। बाढ़ के
बाद ये तीनों बहुत से पुत्रों के पिता हुए। यहाँ
शेम, हाम और येपेत से पैदा होने वाले पुत्रों की सूची दी
जा रही है:

येपेत के वंशज

2येपेत के पुत्र थे: गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल,
मेशेक और तीरास।
3गोमेर के पुत्र थे: अशकनज, रीपत और तोगर्मा
4यावान के पुत्र थे: एलीशा, तर्शीश, कित्ती और दोदानी
5भूमध्य सागर के चारों ओर तटों पर जो लोग रहने
लगे वे येपेत के वंशज के ही थे। हर एक पुत्र का
अपना अलग प्रदेश था। सभी परिवार बढ़े और अलग
राष्ट्र बन गए। हर एक राष्ट्र की अपनी भाषा थी।

हाम के वंशज

6हाम के पुत्र थे: कूश, मिस्र, फूत और कनान।
7कूश के पुत्र थे: सबा, हवीला, सबता, रामा, सबूतका।
रामा के पुत्र थे: शबा और ददान।
8कूश का एक पुत्र निम्रोद नाम का भी था। निम्रोद
पृथ्वी पर बहुत शक्तिशाली व्यक्ति हुआ। 9यहोवा के
सामने निम्रोद एक बड़ा शिकारी था। इसलिए लोग दूसरे
व्यक्तियों की तुलना निम्रोद से करते हैं और कहते हैं,
"वह व्यक्ति यहोवा के सामने बड़ा शिकारी निम्रोद के
समान है।"
10निम्रोद का राज्य शिनार देश में बाबुल, एरेख और
अक्कद प्रदेश में प्रारम्भ हुआ। 11निम्रोद अश्शूर में भी
गया। वहाँ उसने नीनवे, रहोबोतीर, कालह और 12रेसेन
नाम के नगरों को बसाया। (रेसेन, नीनवे और बड़े
शहर कालह के बीच का शहर है।)
13-14मिस्रैम (मिस्र)–लूद, अनाम, लहाब, नप्तूह, पत्रूस,
कसलूह और कप्तोर देशों के निवासियों का पिता था।
(पलिश्ती लोग कसलूह लोगों से आए थे।)
15कनान सीदोन का पिता था। सिदोन कनान का
पहला पुत्र था। कनान, हित्त (जो हित्ती लोगों का पिता
था) का भी पिता था।
16और कनान, यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी, 17हिव्वी,
अर्की, सीनी, 18अर्वदी, समारी, हमाती लोगों का पिता
था। कनान के परिवार संसार के विभिन्न भागों मे
फैले।
19कनान लोगों का देश सीदोन से उत्तर में और
दक्षिण में गरार तक, पश्चिम में अज्जा से पूर्व में सदोम
और अमोरा तक, अदमा और सबोयीम से लाशा तक
था। 20ये सभी लोग हाम के वंशज थे। उन सभी परिवारों
की अपनी भाषाएँ और अपने प्रदेश थे। वे अलग–अलग
राष्ट्र बन गये।

शेम के वंशज

21शेम येपेत का बड़ा भाई था। शेम का एक वंशज
एबेर हिब्रू लोगों का पिता था।*
22शेम के पुत्र एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद और
अराम थे।
23अराम के पुत्र ऊस, हूल, गेतेर और मश थे।
24अर्पक्षद शेलह का पिता था। शेलह एबेर का पिता
था। 25एबेर के दो पुत्र थे। एक पुत्र का नाम पेलेग था।
उसे यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि जीवन काल में
धरती का विभाजन हुआ। दूसरे भाई का नाम योक्तान
था।
26योक्तान अल्मोदाद, शेलेप, हसर्मावेत, येरह,
27यदोरवाम, ऊजाल, दिक्ला, 28ओबाल, अबीमाएल, शबा,
29ओपीर हवीला और योबाब का पिता था। ये सभी लोग
योक्तान की संतान हुए। 30ये लोग मेशा और पूर्वी पहाड़ी
प्रदेश के बीच की भूमि में रहते थे। मेशा सपारा प्रदेश
की ओर था। 31वे लोग शेम के परिवार से थे। वे
परिवार, भाषा, प्रदेश और राष्ट्र की इकाईयों में व्यवस्थित
थे।
32नूह के पुत्रों से चलने वाले परिवारों की यह सूची
है। वे अपने–अपने राष्ट्रो में बँटकर रहते थे। बाढ़ के

शेम ... था एबेर के सन्तानों का पिता शेम से पैदा हुआ था।"

बाद सारी पृथ्वी पर फैलने वाले लोग इन्हीं परिवारों से निकले।

संसार बैंटा

11 बाढ़ के बाद सारा संसार एक ही भाषा बोलता था। सभी लोग एक ही शब्द–समूह का प्रयोग करते थे। 2लोग पूर्व से बढ़े। उन्हें शिनार देश में एक मैदान मिला। लोग वहाँ रहने के लिए ठहर गए।

3लोगों ने कहा, "हम लोगों को ईंटें बनाना और उन्हें आग में तपाना चाहिये, ताकि वे कठोर हो जायें।" इसलिये लोगों ने अपने घर बनाने के लिये पत्थरों के स्थान पर ईंटों का प्रयोग किया और लोगों ने गारे के स्थान पर राल का प्रयोग किया।

4लोगों ने कहा, "हम अपने लिए एक नगर बनाएँ और हम एक बहुत ऊँची इमारत बनाएंगे जो आकाश को छुएगी। हम लोग प्रसिद्ध हो जाएंगे। अगर हम लोग ऐसा करेंगे तो पूरी धरती पर बिखरेंगे नहीं हम लोग एक जगह पर एक साथ रहेंगे।"

5यहोवा नगर और बहुत ऊँची इमारत को देखने के लिए नीचे आया। यहोवा ने लोगों को यह सब बनाते देखा। 6यहोवा ने कहा, "ये सभी लोग एक ही भाषा बोलते हैं और मैं देखता हूँ कि वे इस काम को करने के लिए एकजुट हैं। यह तो, ये जो कुछ कर सकते हैं उसका, केवल आरम्भ है। शीघ्र ही वे वह सब कुछ करने के योग्य हो जाएंगे जो ये करना चाहेंगे। 7इसलिए आओ हम नीचे चले और इनकी भाषा को गड़बड़ कर दें। तब ये एक दूसरे की बात नहीं समझेंगे।"

8यहोवा ने लोगों को पूरी पृथ्वी पर फैला दिया। इससे लोगों ने नगर को बनाना पूरा नहीं किया। 9यही वह जगह थी जहाँ यहोवा ने पूरे संसार की भाषा को गड़बड़ कर दिया था। इसलिए इस जगह का नाम बाबुल पड़ा। इस प्रकार यहोवा ने उस जगह से लोगों को पृथ्वी के सभी देशों में फैलाया।

शेम के परिवार की कथा

10यह शेम के परिवार की कथा है। बाढ़ के दो वर्ष बाद जब शेम सौ वर्ष का था उसके पुत्र अर्पक्षद का जन्म हुआ। 11उसके बाद शेम पाँच सौ वर्ष जीवित रहा। उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ थीं।

12जब अर्पक्षद पैंतीस वर्ष का था उसके पुत्र शेलह का जन्म हुआ। 13शेलह के जन्म होने के बाद अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष जीवित रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई।

14शेलह के तीस वर्ष के होने पर उसके पुत्र एबेर का जन्म हुआ। 15एबेर के जन्म के बाद शेलह चार सौ तीन वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न हुई।

16एबेर के चौंतीस वर्ष के होने के बाद उसके पुत्र पेलेग का जन्म हुआ। 17पेलेग के जन्म के बाद एबेर चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों में इसको दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ हुई।

18जब पेलेग तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र 'रु' का जन्म हुआ। 19'रु' के जन्म के बाद पेलेग दो सौ नौ वर्ष और जीवित रहा। उन दिनों में उसके अन्य पुत्रियों और पुत्रों का जन्म हुआ।

20जब रु बत्तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र सरूग का जन्म हुआ। 21सरुग के जन्म के बाद रु दो सौ सात वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ हुई।

22जब सरुग तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र नाहोर का जन्म हुआ। 23नाहोर के जन्म के बाद सरूग दो सौ वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरे पुत्रों और पुत्रियों का जन्म हुआ।

24जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र तेरह का जन्म हुआ। 25तेरह के जन्म के बाद नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरी पुत्रियों और पुत्रों का जन्म हुआ।

26तेरह जब सत्तर वर्ष का हुआ, उसके पुत्र अब्राम, नाहोर और हारान का जन्म हुआ।

तेरह के परिवार की कथा

27यह तेरह के परिवार की कथा है। तेरह अब्राम, नाहोर और हारान का पिता था। हारान लूत का पिता था। 28हारान अपनी जन्मभूमि कसदियों के उर नगर में मरा। जब हारान मरा तब उसका पिता तेरह जीवित था। 29अब्राम और नाहोर दोनों ने विवाह किया। अब्राम की पत्नी सारै थी। नाहोर की पत्नी मिल्का थी। मिल्का हारान की पुत्री थी। हारान मिल्का और यिस्का का बाप था। 30सारै के कोई बच्चा नहीं था क्योंकि वह किसी बच्चे को जन्म देने योग्य नहीं थी।

31तेरह ने अपने परिवार को साथ लिया और कसदियों के उर नगर को छोड़ दिया। उन्होंने कनान की यात्रा करने का इरादा किया। तेरह ने अपने पुत्र अब्राम, अपने पोते लूत (हारान का पुत्र), अपनी पुत्रवधू (अब्राम की पत्नी) सारै को साथ लिया। उन्होंने हारान तक यात्रा की और वहाँ ठहरना तय किया। 32तेरह दो सौ पाँच वर्ष जीवित रहा। तब वह हारान में मर गया।

परमेश्वर अब्राम को बुलाता है

12 यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश और अपने लोगों को छोड़ दो। अपने पिता के परिवार को छोड़ दो और उस देश जाओ जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा।

2मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। मैं तुझसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा। मैं तुम्हारे नाम को प्रसिद्ध करूँगा। लोग

तुम्हारे नाम का प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए करेंगे।

3मैं उन लोगों को आशीर्वाद दूँगा जो तुम्हारा भला करेंगे। किन्तु उनको दण्ड दूँगा जो तुम्हारा बुरा करेंगे। पृथ्वी के सारे मनुष्यो को आशीर्वाद देने के लिये मैं तुम्हारा उपयोग करूँगा।"

अब्राम कनान जाता है

4अब्राम ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने हारान को छोड़ दिया और लूत उसके साथ गया। इस समय अब्राम पच्हत्तर वर्ष का था। 5अब्राम ने जब हारान छोड़ा तो वह अकेला नहीं था। अब्राम अपनी पत्नी सारै, भतीजे लूत और हारान में उनके पास जो कुछ था, सबको साथ लाया। हारान में जो दास अब्राम को मिले थे वे भी उनके साथ गए। अब्राम और उसके दल ने हारान को छोड़ा और कनान देश तक यात्रा की। 6अब्राम ने कनान देश में शकेम के नगर और मोरे के बड़े पेड़ तक यात्रा की। उस समय कनानी लोग उस देश में रहते थे।

7यहोवा अब्राम के सामने आया* यहोवा ने कहा, "मैं यह देश तुम्हारे वंशजो को दूँगा।"

यहोवा अब्राम के सामने जिस जगह पर प्रकट हुआ उस जगह पर अब्राम ने एक वेदी यहोवा की उपासना के लिए बनाया। 8तब अब्राम ने उस जगह को छोड़ा और बेतेल के पूर्व पहाड़ों तक यात्रा की। अब्राम ने वहाँ अपना तम्बू लगाया। बेतेल नगर पश्चिम में था। ये नगर पूर्व में था। उस जगह अब्राम ने यहोवा के लिए दूसरी वेदी बनाई और अब्राम ने वहाँ यहोवा की उपासना की। 9इसके बाद अब्राम ने फिर यात्रा आरम्भ की। उसने नेगव की ओर यात्रा की।

मिस्र में अब्राम

10इन दिनों भूमि बहुत सूखी थी। वर्षा नहीं हो रही थी और कोई खाने की चीज़ नहीं उग सकती थी। इसलिए अब्राम जीवित रहने के लिए मिस्र चला गया। 11अब्राम ने देखा कि उसकी पत्नी सारै बहुत सुन्दर थी। इसलिए मिस्र में आने के पहले अब्राम ने सारै से कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम बहुत सुन्दर स्त्री हो। 12मिस्र के लोग तुम्हें देखेंगे। वे कहेंगे 'यह स्त्री इसकी पत्नी है।' तब वे मुझे मार डालेंगे क्योंकि वे तुमको लेना चाहेंगे। 13इसलिए तुम लोगों से कहना कि तुम मेरी बहन हो। तब वे मुझको नहीं मारेंगे। वे मुझ पर दया करेंगे क्योंकि वे समझेंगे कि मैं तुम्हारा भाई हूँ। इस तरह तुम मेरा जीवन बचाओगी। 14इस प्रकार अब्राम मिस्र में पहुँचा। मिस्र के लोगों ने देखा, सारै बहुत सुन्दर स्त्री है। 15कुछ मिस्र के अधिकारियों ने भी उसे देखा। उन्होंने फ़िरौन से कहा कि वह बहुत सुन्दर स्त्री है। वे अधिकारी सारै को फ़िरौन के घर ले गए। 16फ़िरौन ने अब्राम के ऊपर दया की क्योंकि उसने समझा कि वह सारै का भाई है। फ़िरौन ने अब्राम को भेड़ें मवेशी और गधे दिए। अब्राम को ऊँटों के साथ–साथ आदमी और स्त्रियाँ दास दासी के रूप में मिले।

17फ़िरौन अब्राम की पत्नी को रख लिया। इससे यहोवा ने फ़िरौन और उसके घर के मनुष्यों में बुरी बीमारी फैला दी।

18इसलिए फ़िरौन ने अब्राम को बुलाया। फिरौन ने कहा, "तुमने मेरे साथ बड़ी बुराई की है। तुमने यह नहीं बताया कि सारै तुम्हारी पत्नी है। क्यों? 19तुमने कहा, 'यह मेरी बहन है।' तुमने ऐसा क्यों कहा? मैंने इसे इसलिए रखा कि यह मेरी पत्नी होगी। किन्तु अब मैं तुम्हारी पत्नी को तुम्हें लौटाता हूँ। इसे लो और जाओ।" 20तब फ़िरौन ने अपने पुरुषों को आज्ञा दी कि वे अब्राम को मिस्र के बाहर पहुँचा दे। इस तरह अब्राम और उसकी पत्नी ने वह जगह छोड़ी और वे सभी चीज़ें अपने साथ ले गए जो उनकी थीं।

अब्राम कनान लौटा

13 अब्राम ने मिस्र छोड़ दिया। अब्राम ने अपनी पत्नी तथा अपने सभी सामान के साथ नेगव से होकर यात्रा की। लूत भी उसके साथ था। 2इस समय अब्राम बहुत धनी था। उसके पास बहुत से जानवर, बहुत सी चाँदी और बहुत सा सोना था।

3अब्राम चारों तरफ यात्रा करता रहा। उसने नेगेव को छोड़ा और बेतेल को लौट गया। वह बेतेल नगर और ऐ नगर के बीच के प्रदेश में पहुँचा। यह वही जगह थी जहाँ अब्राम और उसका परिवार पहले तम्बू लगाकर ठहरा था। 4यह वही जगह थी जहाँ अब्राम ने एक वेदी बनाई थी। इसलिए अब्राम ने यहाँ यहोवा की उपासनाकी।

अब्राम और लूत अलग हुए

5इस समय लूत भी अब्राम के साथ यात्रा कर रहा था। लूत के पास बहुत से जानवर और तम्बू थे। 6अब्राम और लूत के पास इतने अधिक जानवर थे कि भूमि एक साथ उनको चारा नहीं दे सकती थी। 7अब्राम और लूत के मजदूर आपस में बहस करने लगे। उन दिनों कनानी लोग और परिज्जी लोग भी इसी प्रदेश में रहते थे।

8अब्राम ने लूत से कहा, "हमारे और तुम्हारे बीच कोई बहस नहीं होनी चाहिए। हमारे और तुम्हारे लोग भी बहस न करें। हम सभी भाई हैं। 9हम लोगों को अलग हो जाना चाहिए। तुम जो चाहो जगह चुन लो।

यहोवा ... आया परमेश्वर प्रायः विशेष रीति से दिखाई पड़ा। जिससे लोग उसे देख सके जैसे आदमी, स्वर्गदूत, आग तो कभी तेज ज्योति बनता था।

अगर तुम बायीं ओर जाओगे तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा। अगर तुम दाहिनी ओर जाओगे तो मैं बायीं ओर जाऊँगा।"

10लूत ने निगाह दौड़ाई और यरदन की घाटी को देखा। लूत ने देखा कि वहाँ बहुत पानी है। (यह बात उस समय की है जब यहोवा ने सदोम और अमोरा को नष्ट नहीं किया था। उस समय यरदन की घाटी सोअर तक यहोवा के बाग की तरह पूरे रास्ते के साथ साथ फैली थी। यह प्रदेश मिस्र देश की तरह अच्छा था।) 11इसलिए लूत ने यरदन घाटी में रहना स्वीकार किया। इस तरह दोनों व्यक्ति अलग हुए और लूत ने पूर्व की ओर यात्रा शुरु की। 12अब्राम कनान प्रदेश में रहा और लूत घाटी के नगरों में रहा। लूत सदोम के दक्षिण में बढ़ा और ठहर गया। 13सदोम के लोग बहुत पापी थे। वे हमेशा यहोवा के विरुद्ध पाप करते थे।

14जब लूत चला गया तब यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने चारों ओर देखो, उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की ओर देखो। 15यह सारी भूमि, जिसे तुम देखते हो, मैं तुमको और तुम्हारे बाद जो तुम्हारे लोग रहेंगे उनको देता हूँ। यह प्रदेश सदा के लिए तुम्हारा है। 16मैं तुम्हारे लोगों को पृथ्वी के कणों के समान अनगिनत बनाऊँगा। अगर कोई व्यक्ति पृथ्वी के कणों को गिन सके तो वह तुम्हारे लोगों को भी गिन सकेगा। 17इसलिए जाओ। अपनी भूमि पर चलो। मैं इसे अब तुमको देता हूँ।"

18इस तरह अब्राम ने अपने तम्बू हटाया। वह मम्रे के बड़े पेड़ों के पास रहने लगा। यह हेब्रोन नगर के करीब था। उस जगह पर अब्राम ने एक वेदी यहोवा की उपासना के लिए बनायी।

लूत पकड़ा गया

14 अम्रापेल शिनार का राजा था। अर्योक एल्लासार का राजा था। कदोर्लाओमेर एलाम का राजा था। तिदाल गोयीम का राजा था। 2इन सभी राजाओं ने सदोम के राजा बेरा, अमोरा के राजा बिर्शा, अद्मा के राजा शिनाब, सबोयीम के राजा शेमेबेर तथा बेला (बेला सोअर भी कहा जाता है) के राजा के साथ एक लड़ाई लड़ी। 3सिद्दीम की घाटी में ये सभी राजा अपनी सेनाओं से मिले। (सिद्दीम की घाटी आजकल लवण सागर है।) 4इन राजाओं ने कदोर्लाओमेर की सेवा बारह वर्ष तक की थी। किन्तु तेरहवें वर्ष वे सभी उसके विरुद्ध हो गए। 5इसलिए चौदहवें वर्ष कदोर्लाओमेर अन्य राजाओं के साथ उनसे लड़ने आया। कदोर्लाओमेर और उसके साथ के राजाओं ने रपाई लोगों को अशतरोत्कनम में हराया। उन्होंने हाम में जूजि लोगों को भी हराया। उन्होंने एमि लोगों को शाबेकिर्यातैम में हराया 6और उन्होंने होरीत लोगों को सेईर के पहाड़ी प्रदेश से हराकर एल्पारान की ओर भगाया। (एल्पारान मरूभूमि के करीब है।) 7तब राजा कदोर्लाओमेर पीछे को मुड़ा और एन्मिशपात को गया। (यह कादेश भी कहलाता है।) और सभी अमालेकी लोगों को हराया। उसने एमोरी लोगों को भी हराया। ये लोग हससोन्तामार में रहते हैं।

8उस समय सदोम का राजा, अमोरा का राजा, अदमा का राजा, सबोयीम का राजा, और बेला का राजा, (बेला सोअर ही है।) सभी एक साथ मिल कर अपने शत्रुओं से लड़ने के लिए गए। 9वे एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनार के राजा अम्रापेल, और एल्लासार के राजा अर्योक से लड़े। इस तरह चार राजा पाँच राजाओं से लड़ रहे थे।

10सिद्दीम की घाटी में राल से भरे हुए अनेक गड्ढे थे। सदोम और अमोरा के राजा और उनकी सेनाएं भाग गई। अनेक सैनिक उन गड्ढों में गिर गए। किन्तु दूसरे लोग पहाड़ीं में भाग गए।

11सदोम और अमोरा के पास जो कुछ था उसे उनके शत्रुओं ने ले लिया। उन्होंने उनके सारे भोजन–वस्त्रों को ले लिया और वे चले गए। 12अब्राम के भाई का पुत्र लूत सदोम में रहता था, उसे शत्रुओं ने पकड़ लिया। उसके पास जो कुछ था उसे भी शत्रु लेकर चले गए। 13एक व्यक्ति ने, जो पकड़ा नहीं जा सका था उसने अब्राम (जो हिब्रू था) को ये सारी बातें बतायीं। एमोरी मम्रे के पेड़ों के पास अब्राम ने अपना डेरा डाला था। मम्रे एशकोल और आनेर ने एक सन्धि एक दूसरे की मदद करने के लिए की थी* और उन्होंने अब्राम की मदद के लिए भी एक वाचा की थी।

अब्राम लूत को छुड़ाता है

14तब अब्राम को पता चला कि लूत पकड़ा गया है। तो उसने अपने पूरे परिवार को इकट्ठा किया और उनमें से तीन सौ अट्ठारह प्रशिक्षित सैनिको को लेकर अब्राम ने दान नगर तक शत्रुओं का पीछा किया। 15उसी रात उसने और उसके पुरुषों ने शत्रुओं पर अचानक धावा बोल दिया। उन्होंने शत्रुओं को हराया तथा दमिश्क के उत्तर मे होबा तक उनका पीछा किया। 16तब अब्राम शत्रु द्वारा चुराई गई सभी चीज़ें लाया। अब्राम स्त्रियों, नौकर, लूत और लूत की अपनी सभी चीजें ले आया।

17कदोर्लाओमेर और उसके साथ के सभी राजाओं को हराने के बाद अब्राम अपने घर लौट आया। जब वह घर आया तो सदोम का राजा उससे मिलने शावे की घाटी पहुँचा। (इसे अब राजा की घाटी कहते है।)

मेल्कीसेदेक

18शालेम का राजा मेल्कीसेदेक भी अब्राम से मिलने गया। मेल्कीसेदेक, सबसे महान परमेश्वर का याजक

मम्रे ... लिये की थी एश्कोल का भाई और अनेर का भाई था।

था। मेल्कीसेदेक रोटी और दाखरस लाया। 19मेल्कीसेदेक ने अब्राम को आशीर्वाद दिया और कहा:

"अब्राम, सबसे महान परमेश्वर तुम्हें आशीष दे।
परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश बनाया।
20और हम सबसे महान परमेश्वर की स्तुति करते हैं।
परमेश्वर ने शत्रुओं को हराने में तुम्हारी मदद की।"

तब अब्राम ने लड़ाई में मिली हर एक चीज़ का दसवाँ हिस्सा मेल्कीसेदेक को दिया। 21तब सदोम के राजा ने कहा, "तुम ये सभी चीज़ें अपने पास रख सकते हो, मुझे केवल मेरे उन मनुष्यों को दे दो जिन्हें शत्रु पकड़ कर ले गये थे।"

22किन्तु अब्राम ने सदोम के राजा से कहा, "मैंने सबसे महान परमेश्वर यहोवा जिसने पृथ्वी और आकाश को बनाया है। उसके सम्मुख यह शपथ ली है 23कि जो आपकी चीज है उसमें से कुछ भी न लूँगा। यहाँ तक की एक धागा व जूते का तस्मा भी नहीं लूँगा। मैं यह नहीं चाहता कि आप कहें, 'मैंने अब्राम को धनी बनाया।' 24मैं केवल वह भोजन स्वीकार करूँगा जो हमारे जवानों ने खाया है किन्तु आप दूसरे लोगों को उनका हिस्सा दे। हमारी लड़ाई में जीती हुई चीज़ें आप लें और इसमें से कुछ आनेर, एश्कोल और मम्रे को दे। इन लोगों ने लड़ाई में मेरी मदद की थी।"

अब्राम के साथ परमेश्वर की वाचा

15 इन बातों के हो जाने के बाद यहोवा का आदेश अब्राम को एक दर्शन में आया। परमेश्वर ने कहा, "अब्राम, डरो, नहीं। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और मैं तुम्हें एक बड़ा पुरस्कार दूँगा।"

2किन्तु अब्राम ने कहा, "हे यहोवा ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे तू मुझे देगा और वह मुझे प्रसन्न करेगा। क्यों? क्योंकि मेरे पुत्र नहीं है। इसलिए मेरा दास दमिश्क का निवासी एलीएज़ेर मेरे मरने के बाद मेरा सब कुछ पाएगा। 3अब्राम ने कहा, "तू ही देख, तूने मुझे कोई पुत्र नहीं दिया है। इसलिए मेरे घर में पैदा एक दास मेरे सभी चीज़ें पाएगा।"

4तब यहोवा ने अब्राम से बातें की। परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारी चीज़ों को तुम्हारा यह दास नहीं पाएगा। तुमको एक पुत्र होगा और तुम्हारा पुत्र ही तुम्हारी चीज़ें पाएगा।"

5तब परमेश्वर अब्राम को बाहर ले गया। परमेश्वर ने कहा, "आकाश को देखो। अनेक तारों को देखो। ये इतने हैं कि तुम गिन नहीं सकते। भविष्य में तुम्हारा कुटुम्ब ऐसा ही होगा।"

6अब्राम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर ने उसके विश्वास को एक अच्छा काम माना, 7परमेश्वर ने अब्राम से कहा, "मैं ही वह यहोवा हूँ जो तुम्हें कसदियों के ऊर से बाहर लाया। यह मैंने इसलिए किया कि यह प्रदेश मैं तुम्हें दे सकूँ तुम इस प्रदेश को अपने कब्ज़े में कर सको।"

8किन्तु अब्राम ने कहा, "हे यहोवा, मेरे स्वामी, मुझे कैसे विश्वास हो कि यह प्रदेश मुझे मिलेगा?"

9परमेश्वर ने अब्राम से कहा, "हम लोग एक वाचा बांधेंगे। तुम मुझको तीन वर्ष की एक गाय, तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक भेड़ लाओ। एक फाख्ता और एक कबूतर का बच्चा भी लाओ।"

10अब्राम ये सभी चीज़ें परमेश्वर के पास लाया। अब्राम ने इन प्राणियों को मार डाला और हर एक के दो टुकड़े कर डाले। अब्राम ने एक आधा टुकड़ा एक तरफ तथा उसका दूसरा आधा टुकड़ा उसके विपरीत दूसरी तरफ रखा। अब्राम ने पक्षियों के दो टुकड़े नहीं किए। 11थोड़ी देर बाद माँसाहारी पक्षी वेदी पर चढ़ाए हुए मृत जीवों को खाने के लिये नीचे आए किन्तु अब्राम ने उनको भगा दिया।

12बाद में सूरज डूबने लगा। अब्राम को गहरी नींद आ गयी। घनघोर अंधकार ने उसे चारों तरफ से घेर लिया। 13तब यहोवा ने अब्राम से कहा, "तुम्हें ये बातें जाननी चाहिए। तुम्हारे वंशज विदेशी बनेंगे और वे उस देश में जाएंगे जो उनका नहीं होगा। वे वहाँ दास होंगे। चार सौ वर्ष तक उनके साथ बुरा व्यवहार होगा। 14मैं उस राष्ट्र का न्याय करूँगा तथा उसे सजा दूँगा, जिसने उन्हें गुलाम बनाया और जब तुम्हारे बाद आने वाले लोग उस देश को छोड़ेंगे तो अपने साथ अनेक अच्छी वस्तुएं ले जायेंगे।"

15"तुम बहुत लम्बी आयु तक जीवित रहोगे। तुम शान्ति के साथ मरोगे और तुम अपने पुरखाओं के पास दफनाए जाओगे। 16चार पीढ़ियों के बाद तुम्हारे लोग इसी प्रदेश में फिर आएंगे। उस समय तुम्हारे लोग एमोरियों को हराएंगे। यहाँ रहने वाले एमोरियों को, दण्ड देने के लिए मैं तुम्हारे लोगों का प्रयोग करूँगा। यह बात भविष्य में होगी क्योंकि एमोरी दण्ड पाने योग्य बुरे अभी नही हुए हैं।"

17जब सूरज ढ़ल गया, तो बहुत अंधेरा छा गया। मृत जानवर अभी तक जमीन पर पड़े हुए थे। हर जानवर दो भागों में कटे पड़े थे। उसी समय धुएँ तथा आग का एक खम्भा* मरे जानवरों के टुकड़ों के बीच से गुजरा।* 18इस तरह उस दिन यहोवा ने अब्राम को

धुँए ... का खम्भा इन चिन्हों को परमेश्वर दिखाया करता था जिससे लोग जाने कि परमेश्वर उनके साथ है।

मरे जानवरों ... से गुजरा इससे यह पता चला कि परमेश्वर ने अब्राम और अपने बीच की वाचा पर हस्ताक्षर कर दिया है या अपनी मुहर लगा दी है। जब लोग वाचा करते थे तो कटे जानवरों के बीच से जाते थे और कुछ इस तरह कहते थे। यदि मैं वाचा का पालन न करुँ तो मेरे साथ भी ऐसा ही हो।

वचन दिया और उसके साथ वाचा की। यहोवा ने कहा, "मैं यह प्रदेश तुम्हारे वंशजों को दूँगा। मैं मिस्र की नदी और बड़ी नदी परात के बीच का प्रदेश उनको दूँगा। 19यह देश केनी, कनिज्जी, कदमोनी, 20हित्ती, परीज्जी, रपाई, 21एमोरी, कनानी, गिर्गाशी तथा यबूसी लोगों का है।"

दासी हाजिरा

16 सारै अब्राम की पत्नी थी। अब्राम और उसके कोई बच्चा नहीं था। सारै के पास एक मिस्र की दासी थी। उसका नाम हाजिरा था। 2सारै ने अब्राम से कहा, "देखो, यहोवा ने मुझे कोई बच्चा नहीं दिया है। इसलिए मेरी दासी को रख लो। मैं इसके बच्चे को अपना बच्चा ही मान लूँगी। अब्राम ने अपनी पत्नी का कहना मान लिया। 3कनान में अब्राम के दस वर्ष रहने के बाद यह बात हुई और सारै ने अपने पति अब्राम को हाजिरा को दे दिया। (हाजिरा मिस्री दासी थी।)

4हाजिरा, अब्राम से गर्भवती हुई। जब हाजिरा ने यह देखा तो उसे बहुत गर्व हुआ और यह अनुभव करने लगी कि मैं अपनी मालकिन सारै से अच्छी हूँ। 5लेकिन सारै ने अब्राम से कहा, "मेरी दासी अब मुझसे घृणा करती है और इसके लिए मैं तुमको दोषी मानती हूँ। मैंने उसको तुमको दिया। वह गर्भवती हुई और तब वह अनुभव करने लगी कि वह मुझसे अच्छी है। मैं चाहती हूँ कि यहोवा सही न्याय करे।"

6लेकिन अब्राम ने सारै से कहा, "तुम हाजिरा की मालकिन हो। तुम उसके साथ जो चाहो कर सकती हो।" इसलिए सारै ने अपनी दासी को दण्ड दिया और उसकी दासी भाग गई।

हाजिरा का पुत्र इश्माएल

7यहोवा के दूत ने मरुभूमि में पानी के सोते के पास दासी को पाया। यह सोता शूर जाने वाले रास्ते पर था। 8दूत ने कहा, "हाजिरा, तुम सारै की दासी हो। तुम यहाँ क्यों हो? तुम कहाँ जा रही हो?"

हाजिरा ने कहा, "मैं अपने मालकिन सारै के यहाँ से भाग रही हूँ।"

9यहोवा के दूत ने उससे कहा, "तुम अपने मालकिन के घर जाओ और उसकी बातें मानो।" 10यहोवा के दूत ने उससे यह भी कहा, "तुम से बहुत से लोग उत्पन्न होंगे। ये लोग इतने हो जाएंगे कि गिने नहीं जा सकेंगे।"

11दूत ने और भी कहा, "अभी तुम गर्भवती हो और तुम्हें एक पुत्र होगा। तुम उसका नाम इश्माएल रखना। क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे कष्ट को सुना है और वह तुम्हारी मदद करेगा।

12"इश्माएल जंगली और आजाद होगा एक जंगली गधे की तरह। वह सबके विरुद्ध होगा। वह एक स्थान से दूसरे स्थान को जायेगा। वह अपने भाईयों के पास अपना डेरा डालेगा किन्तु वह उनके विरुद्ध होगा।"

13तब यहोवा ने हाजिरा से बातें की उसने परमेश्वर को जो उससे बाते कर रहा था, एक नये नाम से पुकारा। उसने कहा, "तुम वह 'यहोवा हो जो मुझे देखता है।'" उसने उसे वह नाम इसलिये दिया क्योंकि उसने अपने आप से कहा, "मैंने देखा है कि वह मेरे ऊपर नज़र रखता है।" 14इसलिए उस कुएँ का नाम लहैरोई पड़ा। यह कुआँ कादेश तथा बेरेद के बीच में है।

15हाजिरा ने अब्राम के पुत्र को जन्म दिया। अब्राम ने पुत्र का नाम इश्माएल रखा। 16अब्राम उस समय छियासी वर्ष का था जब हाजिरा ने इश्माएल को जन्म दिया।

खतना वाचा का सबूत

17 जब अब्राम निन्यानबें वर्ष का हुआ, यहोवा ने उससे बात की। यहोवा ने कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ।* मेरे लिए ये काम करो। मेरी आज्ञा मानो और सही रास्ते पर चलो। 2अगर तुम यह करो तो मैं अपने और तुम्हारे बीच एक वाचा तैयार करूँगा। मैं तुम्हारे लोंगों को एक महान राष्ट्र बनाने का वचन दूँगा।"

3अब्राम ने अपना मुँह जमीन की ओर झुकाया। तब परमेश्वर ने उससे बातचीत की और कहा, 4"हमारी वाचा का यह भाग मेरा है। मैं तुम्हें कई राष्ट्रों का पिता बनाऊँगा। 5मैं तुम्हारे नाम को बदल दूँगा। तुम्हारा नाम अब्राम नहीं रहेगा। तुम्हारा नाम इब्राहीम होगा। मैं तुम्हें यह नाम इसलिए दे रहा हूँ कि तुम बहुत से राष्ट्रों के पिता बनोगे।" 6"मैं तुमको बहुत वंशज दूँगा। तुमसे नये राष्ट्र उत्पन्न होंगे। तुमसे नये राजा उत्पन्न होंगे 7और मैं अपने और तुम्हारे बीच एक वाचा करूँगा। यह वाचा तुम्हारे सभी वंशजों के लिए होगी। मैं तुम्हारा और तुम्हारे सभी वंशजों का परमेश्वर रहूँगा। यह वाचा सदा के लिए बनी रहेगी 8और मैं यह प्रदेश तुमको और तुम्हारे सभी वंशजों को दूँगा। मैं वह प्रदेश तुम्हें दूँगा जिससे होकर तुम यात्रा कर रहे हो। मैं तुम्हें कनान प्रदेश दूँगा। मैं तुम्हें यह प्रदेश सदा के लिए दूँगा और मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा।"

9परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, "अब वाचा का यह तुम्हारा भाग है। मेरी इस वाचा का पालन तुम और तुम्हारे वंशज करेंगे। 10यह वह वाचा है जिसका तुम पालन करोगे। यह वाचा मेरे और तुम्हारे बीच है। यह तुम्हारे सभी वंशजो के लिए है। हर एक बच्चा जो पैदा होगा उसका खतना अवश्य होगा। 11तुम चमड़े को यह बताने के लिए काटोगे कि तुम अपने और मेरे बीच के

मैं ... परमेश्वर हूँ शाब्दिक "अल शददइ।"

वाचा का पालन करते हो। 12जब बच्चा आठ दिन का हो जाये, तब तुम उसका खतना करना। हर एक लड़का जो तुम्हारे लोगों में पैदा हो या कोई लड़का जो तुम्हारे लोगों का दास हो, उसका खतना अवश्य होगा। 13इस प्रकार तुम्हारे राष्ट्र के प्रत्येक बच्चे का खतना होगा। जो लड़का तुम्हारे परिवार में उत्पन्न होगा या दास के रूप में खरीदा जायेगा उसका खतना होगा। 14यही मेरा नियम है और मेरे और तुम्हारे बीच वाचा है। जिस किसी व्यक्ति का खतना नहीं होगा वह तुम्हारे लोगों से अलग कर दिया जायेगा। क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने मेरी वाचा तोड़ी है।"

इसहाक प्रतिज्ञा का पुत्र

15परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, "मैं सारै को जो तुम्हारी पत्नी है, नया नाम दूँगा। उसका नाम सारा होगा। 16मैं उसे आशीर्वाद दूँगा। मैं उसे पुत्र दूँगा और तुम पिता होगे। वह बहुत से नये राष्ट्रों की माँ होगी। उससे राष्ट्रों के राजा पैदा होंगे।"

17इब्राहीम ने अपना सिर परमेश्वर को भक्ति दिखाने के लिए जमीन तक झुकाया। लेकिन वह हँसा और अपने से बोला, "मैं सौ वर्ष का बूढ़ा हूँ। मैं पुत्र पैदा नहीं कर सकता और सारा नब्बे वर्ष की बुढ़िया है। वह बच्चों को जन्म नहीं दे सकती।"

18तब इब्राहीम के कहने का मतलब परमेश्वर से पूछा, "क्या इश्माएल जीवित रहे और तेरी सेवा करे?"

19परमेश्वर ने कहा, "नहीं, मैंने कहा कि तुम्हारी पत्नी सारा पुत्र को जन्म देगी। तुम उसका नाम इसहाक रखोगे। मैं उसके साथ वाचा करूँगा। यह वाचा ऐसी होगी जो उसके सभी वंशजों के साथ सदा बनी रहेगी।

20"तुमने मुझसे इश्माएल के बारे में पूछा और मैंने तुम्हारी बात सुनी। मैं उसे आशीर्वाद दूँगा। उसके बहुत से बच्चे होंगे। वह बारह बड़े राजाओं का पिता होगा। उसका परिवार एक बड़ा राष्ट्र बनेगा। 21किन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक के साथ बनाऊँगा। इसहाक ही वह पुत्र होगा जिसे सारा जनेगी। यह पुत्र अगले वर्ष इसी समय मे पैदा होगा।"

22परमेश्वर ने जब इब्राहीम से बात करनी बन्द की, इब्राहीम अकेला रह गया। परमेश्वर इब्राहीम के पास से आकाश की ओर उठ गया। 23परमेश्वर ने कहा था कि तुम अपने कुटुम्ब के सभी लड़कों और पुरुषों का खतना कराना। इसलिए इब्राहीम ने इश्माएल और अपने घर में पैदा सभी दासों को एक साथ बुलाया। इब्राहीम ने उन दासों को भी एक साथ बुलाया जो धन से खरीदे गए थे। इब्राहीम के घर के सभी पुरुष और लड़के इकट्ठे हुए और उन सभी का खतना उसी दिन उनका माँस काट कर दिया गया।

24जब खतना हुआ इब्राहीम निन्यानबे वर्ष का था 25और उसका पुत्र इश्माएल खतना होने के समय तेरह वर्ष का था। 26इब्राहीम और उसके पुत्र का खतना उसी दिन हुआ। 27उसी दिन इब्राहीम के सभी पुरुषों का खतना हुआ। इब्राहीम के घर में पैदा सभी दासों और खरीदे गए सभी दासों का खतना हुआ।

तीन अतिथि

18 बाद में यहोवा फिर इब्राहीम के सामने प्रकट हुआ। इब्राहीम मम्रे के बांज के पेड़ों के पास रहता था। एक दिन, दिन के सबसे गर्म पहर में इब्राहीम अपने तम्बू के दरवाजे पर बैठा था। 2इब्राहीम ने आँख उठा कर देखा और अपने सामने तीन पुरुषों को खड़े पाया। जब इब्राहीम ने उनको देखा, वह उनके पास गया और उन्हें प्रणाम किया। 3इब्राहीम ने कहा, "महोदयों,* आप अपने इस सेवक के साथ ही थोड़ी देर ठहरें। 4मैं आप लोगों के पैर धोने के लिए पानी लाता हूँ। आप पेड़ों के नीचे आराम करें। 5मैं आप लोगों के लिए कुछ भोजन लाता हूँ और आप लोग जितना चाहे खाएं। इसके बाद आप लोग अपनी यात्रा आरम्भ कर सकते हैं।"

तीनों ने कहा, "यह बहुत अच्छा है। तुम जैसा कहते हो, करो।"

6इब्राहीम जल्दी से तम्बू में घुसा। इब्राहीम ने सारा से कहा, "जल्दी से तीन रोटियों के लिए आटा तैयार करो।" 7तब इब्राहीम अपने मवेशियों की ओर दौड़ा। इब्राहीम ने सबसे अच्छा एक जवान बछड़ा लिया। इब्राहीम ने बछड़ा नौकर को दिया। इब्राहीम ने नौकर से कहा कि तुम जल्दी करो, इस बछड़े को मारो और भोजन के लिए तैयार करो। 8इब्राहीम ने तीनों को भोजन के लिए माँस दिया। उसने दूध और मक्खन भी दिया।जब तक तीनों पुरुष खाते रहे तब तक इब्राहीम पेड़ के नीचे उनके पास खड़ा रहा।

9उन व्यक्तियों ने इब्राहीम से कहा, "तुम्हारी पत्नी सारा कहाँ है?"

इब्राहीम ने कहा, "वह तम्बू में है।"

10तब यहोवा ने कहा, "मैं बसन्त में फिर आऊँगा उस समय तुम्हारी पत्नी सारा एक पुत्र को जन्म देगी।"

सारा तम्बू में सुन रही थी और उसने इन बातों को सुना। 11इब्राहीम और सारा दोनों बहुत बूढ़े थे। सारा प्रसव की उम्र को पार कर चुकी थी। 12सारा मन ही मन मुस्करायी। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने अपने आप से कहा, "मैं और मेरे पति दोनों ही बूढ़े हैं। मैं बच्चा जनने के लिये काफी बूढ़ी हूँ।"

13तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा, "सारा हंसी और बोली, 'मैं इतनी बूढ़ी हूँ कि बच्चा जन नहीं सकती।'

महोदय इस हिब्रू शब्द का अर्थ "सामन्त" या "यहोवा" हो सकता है। इससे पता चल सकता है कि वे साधारण पुरुष नहीं थे।

14क्या यहोवा के लिए कुछ भी असम्भव है? नहीं, मैं
फिर बसन्त में अपने बताए समय पर आऊँगा और
तुम्हारी पत्नी सारा पुत्र जनेगी।"
15लेकिन सारा ने कहा, "मैं हंसी नहीं।" (उसने ऐसा
कहा, क्योंकि वह डरी हुई थी।)
लेकिन यहोवा ने कहा, "नहीं, मै जानता हूँ कि
तुम्हारा कहना सही नहीं है। तुम जरूर हंसी।"
16तब वे पुरुष जाने के लिए उठे। उन्होंने सदोम की
ओर देखा और उसी ओर चल पड़े। इब्राहीम उनको
विदा करने के लिए कुछ दूर तक उनके साथ गया।

परमेश्वर के साथ इब्राहीम का सौदा

17यहोवा ने मन में कहा, "क्या मैं इब्राहीम से वह
कह दूँ जो मैं अभी करूँगा? 18इब्राहीम एक बड़ा और
शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएगा। इसी के कारण पृथ्वी के
सारे मनुष्य आशीर्वाद पायेंगे। 19मैनें इब्राहीम के साथ
खास वाचा की है। मैंने यह इसलिए किया है कि वह
अपने बच्चे और अपने वंशज को उस तरह जीवन
बिताने के लिए आज्ञा देगा जिस तरह का जीवन बिताना
यहोवा चाहता है। मैंने यह इसलिए किया कि वे सच्चाई
से रहेंगे और भले बनेंगे। तब मैं यहोवा प्रतिज्ञा की गई
चीजों को दूँगा।"
20तब यहोवा ने कहा, "मैने बार बार सुना है कि
सदोम और अमोरा के लोग बहुत बुरे हैं। 21इसलिए मैं
वहाँ जाऊँगा और देखूँगा कि क्या हालत उतनी ही
खराब है जितनी मैंने सुनी है। तब मै ठीक–ठीक जान
लूँगा।"
22तब वे लोग मुड़े और सदोम की ओर चल पड़े।
किन्तु इब्राहीम यहोवा के सामने खड़ा रहा। 23तब इब्राहीम
यहोवा से बोला "हे यहोवा, क्या तू बुरे लोगों को नष्ट
करने के साथ अच्छे लोगों को भी नष्ट करने की बात
सोच रहा है? 24यदि उस नगर में पचास अच्छे लोग हों
तो क्या होगा? क्या तब भी तू नगर को नष्ट कर देगा?
निश्चय ही तू वहाँ रहने वाले पचास अच्छे लोगों के
लिए उस नगर को बचा लेगा। 25निश्चय ही तू नगर को
नष्ट नहीं करेगा। बुरे लोगों को मारने के लिए तू पचास
अच्छे लोगों को नष्ट नहीं करेगा। अगर ऐसा हुआ तो
अच्छे और बुरे लोग एक ही हो जाएँगे, दोनों को ही
दण्ड मिलेगा। तू पूरी पृथ्वी को न्याय देने वाला है। मैं
जानता हूँ कि तू न्याय करेगा।"
26तब यहोवा ने कहा, "यदि मुझे सदोम नगर में
पचास अच्छे लोग मिले तो मैं पूरे नगर को बचा लूँगा।"
27तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा, तेरी तुलना में, मैं
केवल धूलि और राख हूँ। लेकिन तू मुझको फिर थोड़ा
कष्ट देने का अवसर दे और मुझे यह पूछने दे कि
28यदि पाँच अच्छे लोग कम हों तो क्या होगा? यदि नगर
में पैंतालीस ही अच्छे लोग हो तो क्या होगा? क्या तू
केवल पाँच लोगों के लिए पूरा नगर नष्ट करेगा?" तब
यहोवा ने कहा, "यदि मुझे वहाँ पैंतालीस अच्छे लोग
मिले तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
29इब्राहीम ने फिर यहोवा से कहा, "यदि तुझे वहाँ
केवल चालीस अच्छे लोग मिले तो क्या तू नगर को
नष्ट कर देगा?"
यहोवा ने कहा, "यदि मुझे चालीस अच्छे लोग वहाँ
मिले तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
30तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा कृपा करके मुझ
पर नाराज न हो। मुझे यह पूछने दे कि यदि नगर में
केवल तीस अच्छे लोग हो तो क्या तू नगर को नष्ट
करेगा?"
यहोवा ने कहा, "यदि मुझे तीस अच्छे लोग वहाँ मिले
तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
31तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा, क्या मैं तुझे फिर
कष्ट दूँ और पूछ लूँ कि यदि बीस ही अच्छे लोग वहाँ
हो तो?"
यहोवा ने उत्तर दिया, "अगर मुझे बीस अच्छे लोग
मिले तो भी मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
32तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा तू मुझसे नाराज न
हो मुझे अन्तिम बार कष्ट देने का मौका दे। यदि तुझे
वहाँ दस अच्छे लोग मिले तो तू क्या करेगा?"
यहोवा ने कहा, "यदि मुझे नगर में दस अच्छे लोग
मिले तो भी मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
33यहोवा ने इब्राहीम से बोलना बन्द कर दिया, इसलिए
यहोवा चला गया और इब्राहीम अपने घर लौट आया।

लूत के अतिथि

19 उनमे से दो स्वर्गदूत साँझ को सदोम नगर में
आए। लूत नगर के द्वार पर बैठा था और
उसने स्वर्गदूतों को देखा। लूत ने सोचा कि वे लोग नगर
के बीच से यात्रा कर रहे हैं। लूत उठा और स्वर्गदूतों के
पास गया तथा जमीन तक सामने झुका। 2लूत ने कहा,
"आप सब महोदय, कृपा कर मेरे घर चलें और मैं आप
लोगों की सेवा करूँगा। वहाँ आप लोग अपना पैर धो
सकते हैं और रात को ठहर सकते हैं। तब कल आप
लोग अपनी यात्रा आरम्भ कर सकते हैं।"
स्वर्गदूतों ने उत्तर दिया, "नहीं, हम लोग रात को
मैदान* में ठहरेंगे।"
3किन्तु लूत अपने घर चलने के लिए बार–बार
कहता रहा। इस तरह स्वर्गदूत लूत के घर जाने के लिए
तैयार हो गए। जब वे घर पहुँचे तो लूत उनके पीने के
लिए कुछ लाया। लूत ने उनके लिए रोटियाँ बनाई। लूत
का पकाया भोजन स्वर्गदूतों ने खाया।

मैदान नगर में खुली जगह, शायद नगर के द्वार के पास ही।
कभी–कभी यात्री नगर में आने पर मैदान में डेरा डालते थे।

4उस शाम सोने के समय के पहले ही नगर के सभी
भागों से लोग लूत के घर आए। सदोम के पुरुषों ने लूत
का घर घेर लिया और बोले। 5उन्होंने कहा, "आज रात
को जो लोग तुम्हारे पास आए, वे दोनों पुरुष कहाँ है?
उन पुरुषों को बाहर हमें दे दो। हम उनके साथ कुकर्म
करना चाहते हैं।"

6लूत बाहर निकला और अपने पीछे से उसने दरवाजा
बन्द कर लिया। 7लूत ने पुरुषों से कहा, "नहीं मेरे
भाईयों मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप यह बुरा काम न
करें। 8देखो मेरी दो पुत्रियाँ हैं, वे इसके पहले किसी
पुरुष के साथ नहीं सोयी हैं। मैं अपनी पुत्रियों को तुम
लोगों को दे देता हूँ। तुम लोग उनके साथ जो चाहो कर
सकते हो। लेकिन इन व्यक्तियों के साथ कुछ न करो।
ये लोग हमारे घर आए हैं और मैं इनकी रक्षा जरूर
करूँगा।"

9घर के चारों ओर के लोगों ने उत्तर दिया, "रास्ते से
हट जाओ।" तब पुरुषों ने अपने मन में सोचा, "यह
व्यक्ति लूत हमारे नगर में अतिथि के रूप में आया।
अब यह सिखाना चाहता है कि हम लोग क्या करें।"
तब लोगों ने लूत से कहा, "हम लोग उनसे भी अधिक
तुम्हारा बुरा करेंगे।" इसलिए उन व्यक्तियों ने लूत को
घेर कर उसके निकट आना शुरु किया। वे दरवाजे
को तोड़कर खोलना चाहते थे।

10किन्तु लूत के साथ ठहरे व्यक्तियों ने दरवाजा
खोला और लूत को घर के भीतर खींच लिया। तब
उन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया। 11दोनों व्यक्तियों ने
दरवाजे के बाहर के पुरुषों को अन्धा कर दिया। इस
तरह घर में घुसने की कोशिश करने वाले जवान व
बूढ़े सब अन्धे हो गए और दरवाजा न पा सके।

सदोम से बच निकलना

12दोनों व्यक्तियों ने लूत से कहा, "क्या इस नगर में
ऐसा कोई व्यक्ति है जो तुम्हारे परिवार का है? क्या
तुम्हारे दामाद, तुम्हारी पुत्रियाँ या अन्य कोई तुम्हारे
परिवार का व्यक्ति है? यदि कोई दूसरा इस नगर में
तुम्हारे परिवार का है तो तुम अभी नगर छोड़ने के लिए
कह दो। 13हम लोग इस नगर को नष्ट करेंगे। यहोवा ने
उन सभी बुराईयों को सुन लिया है जो इस नगर में है।
इसलिए यहोवा ने हम लोगों को इसे नष्ट करने केलिए
भेजा है।"

14इसलिए लूत बाहर गया और अपनी अन्य पुत्रियों से
विवाह करने वाले दामादों से बातें की। लूत ने कहा,
"शीघ्रता करो और इस नगर को छोड़ दो।" यहोवा इसे
तुरन्त नष्ट करेगा। लेकिन उन लोगों ने समझा कि लूत
मजाक कर रहा है। 15दूसरी सुबह को भोर के समय ही
स्वर्गदूत लूत से जल्दी करने की कोशिश की। उन्होंने
कहा, "देखो इस नगर को दण्ड मिलेगा। इसलिए तुम
अपनी पत्नी और तुम्हारे साथ जो दो पुत्रियाँ जो अभी
तक हैं, उन्हें लेकर इस जगह को छोड़ दो। तब तुम
नगर के साथ नष्ट नहीं होगे।"

16लेकिन लूत दुविधा में रहा और नगर छोड़ने की
जल्दी उसने नहीं की। इसलिए दोनों स्वर्गदूतों ने लूत,
उसकी पत्नी और उसकी दोंनो पुत्रियों के हाथ पकड़
लिए। उन दोनों ने लूत और उसके परिवार को नगर
के बाहर सुरक्षित स्थान में पहुँचाया। लूत और उसके
परिवार पर यहोवा की कृपा थी। 17इसलिए दोनों ने लूत
और उसके परिवार को नगर के बाहर पहुँचा दिया।
जब वे बाहर हो गए तो उनमें से एक ने कहा, "अपना
जीवन बचाने के लिए अब भागो। नगर को मुड़कर भी
मत देखो। इस घाटी में किसी जगह न रूको। तब तक
भागते रहो जब तक पहाड़ों में न जा पहुँचो। अगर तुम
ऐसा नहीं करते, तो तुम नगर के साथ नष्ट हो जाओगे।"

18तब लूत ने दोनों से कहा, "महोदयों, कृपा करके
इतनी दूर दौड़ने के लिए विवश न करें। 19आप लोगों ने
मुझ सेवक पर इतनी अधिक कृपा की है। आप लोगों
ने मुझे बचाने की कृपा की है। लेकिन मैं पहाड़ी तक
दौड़ नहीं सकता। अगर मैं आवश्यकता से अधिक धीरे
दौड़ा तो कुछ बुरा होगा और मैं मारा जाऊँगा। 20लेकिन
देखें यहाँ पास में एक बहुत छोटा नगर है। हमें उस नगर
तक दौड़ने दें। तब हमारा जीवन बच जायेगा।"

21स्वर्गदूत ने लूत से कहा, "ठीक है, मैं तुम्हें ऐसा भी
करने दूँगा। मैं उस नगर को नष्ट नही करूँगा जिसमें
तुम जा रहे हो। 22लेकिन वहाँ तक तेज दौड़ो। मैं तब
तक सदोम को नष्ट नहीं करूँगा जब तक तुम उस
नगर में सुरक्षित नहीं पहुँच जाते।" (इस नगर का नाम
सोअर है क्योंकि यह छोटा है।)

सदोम और अमोरा नष्ट किए गए

23जब लूत सोअर में घुस रहा था, सवेरे का सूरज
चमकने लगा 24और यहोवा ने सदोम और अमोरा को
नष्ट करना आरम्भ किया। यहोवा ने आग तथा जलते
हुए गन्धक को आकाश से नीचें बरसाया। 25इस तरह
यहोवा ने उन नगरों को जला दिया और पूरी घाटी के
सभी जीवित मनुष्यों तथा सभी पेड़ पौधों को भी नष्ट
कर दिया।

26जब वे भाग रहे थे, तो लूत की पत्नी ने मुड़कर
नगर को देखा। जब उसने मुड़कर देखा तब वह एक
नमक की ढेर हो गई। 27उसी दिन बहुत सवेरे इब्राहीम
उठा और उस जगह पर गया जहाँ वह यहोवा के सामने
खड़ा होता था। 28इब्राहीम ने सदोम और अमोरा नगरों
की ओर नजर डाली। इब्राहीम ने उस घाटी की पूरी
भूमि की ओर देखा। इब्राहीम ने उस प्रदेश से उठते हुए
घने धुँए को देखा। बड़ी भयंकर आग से उठते धुँए के
समान वह दिखाई पड़ा।

29घाटी के नगरों को परमेश्वर ने नष्ट कर दिया।
जब परमेश्वर ने यह किया तब इब्राहीम ने जो कुछ
माँगा था उसे उसने याद रखा। परमेश्वर ने लूत का
जीवन बचाया लेकिन परमेश्वर ने उस नगर को नष्ट
कर दिया जिसमें लूत रहता था।

लूत और उसकी पुत्रियाँ

30लूत सोअर में लगातार रहने से डरा। इसलिए वह
और उसकी दोनों पुत्रियाँ पहाड़ों में गई और वहीं रहने
लगीं। वे वहाँ एक गुफा में रहते थे। 31एक दिन बड़ी
पुत्री ने छोटी से कहा, "पृथ्वी पर चारों ओर पुरुष और
स्त्रियाँ विवाह करते हैं। लेकिन यहाँ आस पास कोई
पुरुष नहीं है जिससे हम विवाह करें। हम लोगों के पिता
बूढ़े हैं। 32इसलिए हम लोग अपने पिता का उपयोग
बच्चों को जन्म देने के लिए करें जिससे हम लोगों का
वंश चल सके। हम लोग अपने पिता के पास चलेंगे
और दाखरस पिलायेंगे तथा उसे मदहोश कर देंगे। तब
हम उसके साथ सो सकते हैं।"

33उस रात दोनों पुत्रियाँ अपने पिता के पास गई और
उसे उन्होंने दाखरस पिलाकर मदहोश कर दिया। तब
बड़ी पुत्री पिता के बिस्तर में गई और उसके साथ सोई।
लूत अधिक मदहोश था इसलिए यह न जान सका कि
वह उसके साथ सोया।

34दूसरे दिन बड़ी पुत्री ने छोटी से कहा, "पिछली रात
मैं अपने पिता के साथ सोई। आओ इस रात फिर हम
उसे दाखरस पिलाकर मदहोश कर दें। तब तुम उसके
बिस्तर में जा सकती हो और उसके साथ सो सकती
हो। इस तरह हम लोगों को अपने पिता का उपयोग
बच्चों को जन्म देकर अपने वंश को चलाने के लिए
करना चाहिए।" 35इसलिए उन दोनों पुत्रियों ने अपने
पिता को दाखरस पिलाकर मदहोश कर दिया। तब
छोटी पुत्री उसके बिस्तर में गई और उसके पास सोई।

लूत इस बार भी न जान सका कि उसकी पुत्री उसके
साथ सोई।

36इस तरह लूत की दोनों पुत्रियाँ गर्भवती हुई। उनका
पिता ही उनके बच्चों का पिता था। 37बड़ी पुत्री ने एक
पुत्र को जन्म दिया। उसने लड़के नाम मोआब रखा।
मोआब उन सभी मोआबी लोगों का पिता है, जो अब
तक रह रहे हैं। 38छोटी पुत्री ने भी एक पुत्र जना। इसने
अपने पुत्र का नाम बेनम्मी रखा। बेनम्मी अभी उन
सभी अम्मोनी लोगों का पिता है जो अब तक रह रहे
हैं।

इब्राहीम गरार जाता है

20 इब्राहीम ने उस जगह को छोड़ दिया और
नेगेव की यात्रा की। इब्राहीम कादेश और शूर
के बीच गरार में बस गया। 2गरार में इब्राहीम ने लोगों
से कहा कि सारा मेरी बहन है। गरार के राजा अबीमेलेक
ने यह बात सुनी। अबीमेलेक सारा को चाहता था
इसलिए उसने कुछ नौकर उसे लाने के लिए भेजे।
3लेकिन एक रात परमेश्वर ने अबीमेलेक से स्वप्न में
बात की। परमेश्वर ने कहा, "देखो, तुम मर जाओगे।
जिस स्त्री को तुमने लिया है उसका विवाह हो चुका
है।"

4लेकिन अबीमेलेक अभी सारा के साथ नहीं सोया
था। इसलिए अबीमेलेक ने कहा, "हे यहोवा, मैं दोषी
नहीं हूँ। क्या तू निर्दोष व्यक्ति को मारेगा। 5इब्राहीम ने
मुझसे खुद कहा, 'यह स्त्री मेरी बहन है' और स्त्री ने भी
कहा, 'यह पुरुष मेरा भाई है।' मैं निर्दोष हूँ। मैं नहीं
जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ?"

6तब परमेश्वर ने अबीमेलेक से स्वप्न में कहा, "हाँ,
मैं जानता हूँ कि तुम निर्दोष हो और मैं यह भी जानता हूँ
कि तुम यह नहीं जानते थे कि तुम क्या कर रहे थे?
मैंने तुमको बचाया। मैंने तुम्हें अपने विरूद्ध पाप नहीं
करने दिया। यह मैं ही था जिसने तुम्हें उसके साथ सोने
नहीं दिया। 7इसलिए इब्राहीम को उसकी पत्नी लौटा दो।
इब्राहीम एक नबी है। वह तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा
और तुम जीवित रहोगे किन्तु यदि तुम सारा को नहीं
लौटाओगे तो मैं शाप देता हूँ कि तुम मर जाओगे।
तुम्हारा सारा परिवार तुम्हारे साथ मर जाएगा।"

8इसलिए दूसरे दिन बहुत सवेरे अबीमेलेक ने अपने
सभी नौकरों को बुलाया। अबीमेलेक ने सपने में हुई
सारी बातें उनको बताई। नौकर बहुत डर गए। 9तब
अबीमेलेक ने इब्राहीम को बुलाया और उससे कहा,
"तुमने हम लोगों के साथ ऐसा क्यों किया? मैनें तुम्हारा
क्या बिगाड़ा था? तुम ने यह झूठ क्यों बोला कि वह
तुम्हारी बहन है। तुमने हमारे राज्य पर बहुत बड़ी
विपत्ति ला दी है। यह बात तुम्हें मेरे साथ नहीं करनी
चाहिए थी। 10तुम किस बात से डर रहे थे? तुमने ये
बातें मेरे साथ क्यों की?"

11तब इब्राहीम ने कहा, "मैं डरता था। क्योंकि मैंने
सोचा कि यहाँ कोई भी परमेश्वर का आदर नहीं
करता। मैंने सोचा कि सारा को पाने के लिए कोई मुझे
मार डालेगा। 12वह मेरी पत्नी है, किन्तु वह मेरी बहन
भी है। वह मेरे पिता की पुत्री तो है परन्तु मेरी माँ की
पुत्री नहीं है। 13परमेश्वर ने मुझे पिता के घर से दूर
पहुँचाया है। परमेश्वर ने कई अलग-अलग प्रदेशों में
मुझे भटकाया। जब ऐसा हुआ तो मैंने सारा से कहा,
'मेरे लिए कुछ करो, लोगों से कहो कि तुम मेरी बहन
हो।'"

14तब अबीमेलेक ने जाना कि क्या हो चुका है।
इसलिए अबीमेलेक ने इब्राहीम को सारा लौटा दी।
अबीमेलेक ने इब्राहीम को कुछ भेड़ें, मवेशी तथा दास
भी दिए। 15अबीमेलेक ने कहा, "तुम चारों ओर देख

लो। यह मेरा देश है। तुम जिस जगह चाहो, रह सकते हो।"

16अबीमेलेक ने सारा से कहा, "देखो, मैंने तुम्हारे भाई को एक हजार चाँदी के टुकड़े दिए हैं। मैंने यह इसलिए किया कि जो कुछ हुआ उससे मैं दुःखी हूँ। मैं चाहता हूँ कि हर एक व्यक्ति यह देखे कि मैंने अच्छे काम किए हैं।"

17-18परमेश्वर ने अबीमेलेक के परिवार की सभी स्त्रियों को बच्चा जनने के अयोग्य बनाया। परमेश्वर ने वह इसलिए किया कि उसने इब्राहीम की पत्नी सारा को रख लिया था। लेकिन इब्राहीम ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने अबीमेलेक, उसकी पत्नियों और दास-कन्याओं को स्वस्थ कर दिया।

अन्त में सारा को एक बच्चा

21 यहोवा ने सारा को यह वचन दिया था कि वह उस पर कृपा करेगा। यहोवा अपने वचन के अनुसार उस पर दयालु हुआ। 2सारा गर्भवती हुई और उसने बुढ़ापे में इब्राहीम के लिए एक बच्चा जनी। सही समय पर जैसा परमेश्वर ने वचन दिया था वैसा ही हुआ। 3सारा ने पुत्र जना और इब्राहीम ने उसका नाम इसहाक रखा। 4परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार इब्राहीम ने आठ दिन का होने पर इसहाक का खतना किया।

5इब्राहीम सौ वर्ष का था जब उसका पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ 6और सारा ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे सुखी* बना दिया है। हर एक व्यक्ति जो इस बारे में सुनेगा वह मुझसे खुश होगा। 7कोई भी यह नहीं सोचता था कि सारा इब्राहीम को उसके बुढ़ापे के लिये उसे एक पुत्र देगी। लेकिन मैंने बूढ़े इब्राहीम को एक पुत्र दिया है।"

घर में परेशानी

8अब बच्चा इतना बड़ा हो गया कि माँ का दूध छोड़ वह ठोस भोजन खाना शुरू करे। जिस दिन उसका दूध छुड़वाया गया उस दिन इब्राहीम ने एक बहुत बड़ा भोज रखा। 9बीते समय में मिस्री दासी हाजिरा ने एक पुत्र को जन्म दिया था। इब्राहीम उस पुत्र का भी पिता था। सारा ने हाजिरा के पुत्र को खेलते हुए देखा। 10इसलिए सारा ने इब्राहीम से कहा, "उस दासी स्त्री तथा उसके पुत्र को यहाँ से भेज दो। जब हम लोग मरेंगे हम लोगों की सभी चीज़ें इसहाक को मिलेंगी। मैं नहीं चाहती कि उसका पुत्र इसहाक के साथ उन चीज़ों में हिस्सा ले।"

11इन सभी बातों ने इब्राहीम को बहुत दुःखी कर दिया। वह अपने पुत्र इश्माएल के लिए दुःखी था। 12किन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, "उस लड़के के बारे में दुःखी मत होओ। उस दासी स्त्री के बारे में भी दुःखी मत होओ। जो सारा चाहती है तुम वही करो। तुम्हारा वंश इसहाक के वंश से चलेगा। 13लेकिन मैं तुम्हारे दासी के पुत्र को भी आशीर्वाद दूँगा। वह तुम्हारा पुत्र है इसलिए मैं उसके परिवार कोभी एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा।"

14दूसरे दिन बहुत सवेरे इब्राहीम ने कुछ भोजन और पानी लिया। इब्राहीम ने यह चीज़ें हाजिरा को दे दी। हाजिरा ने वे चीज़ें ली और बच्चे के साथ वहाँ से चली गई। हाजिरा ने वह स्थान छोड़ा और वह बेर्शेबा की मरुभूमि में भटकने लगी।

15कुछ समय बाद हाजिरा का सारा पानी समाप्त हो गया। पीने के लिए कुछ भी पानी न बचा। इसलिए हाजिरा ने अपने बच्चे को एक झाड़ी के नीचे रखा। 16हाजिरा वहाँ से कुछ दूर गई। तब वह रूकी और बैठ गई। हाजिरा ने सोचा कि उसका पुत्र मर जाएगा क्योंकि वहाँ पानी नहीं था। वह उसे मरता हुआ देखना नहीं चाहती थी। वह वहाँ बैठ गई और रोने लगी।

17परमेश्वर ने बच्चे का रोना सुना। स्वर्ग से एक दूत हाजिरा के पास आया। उसने पूछा, "हाजिरा, तुम्हें क्या कठिनाई है। परमेश्वर ने वहाँ बच्चे का रोना सुन लिया। 18जाओ, और बच्चे को संभालो। उसका हाथ पकड़ लो और उसे साथ ले चलो। मैं उसे बहुत से लोगों का पिता बनाऊँगा।"

19परमेश्वर ने हाजिरा की आँखे इस प्रकार खोली कि वह एक पानी का कुआँ देख सकी। इसलिए कुएँ पर हाजिरा गई और उसने थैले को पानी से भर लिया। तब उसने बच्चे को पीने के लिए पानी दिया।

20बच्चा जब तक बड़ा न हुआ तब तक परमेश्वर उसके साथ रहा। इश्माएल मरुभूमि में रहा और एक शिकारी बन गया। उसने बहुत अच्छा तीर चलाना सीख लिया। 21उसकी माँ मिस्र से उसके लिए दुल्हन लाई। वे पारान मरूभूमि में रहने लगे।

इब्राहीम का अबीमेलेक से सन्धि

22तब अबीमेलेक और पीकोल ने इब्राहीम से बातें की। पीकोल अबीमेलेक की सेना का सेनापति था। उन्होंने इब्राहीम से कहा, "तुम जो कुछ करते हो, परमेश्वर तुम्हारा साथ देता है। 23इसलिए तुम परमेश्वर के सामने वचन दो। यह वचन दो कि तुम मेरे और मेरे बच्चों के लिए भले रहोगे। तुम यह वचन दो कि तुम मेरे प्रति और जहाँ रहे हो उस देश के प्रति दयालु रहोगे। तुम यह भी वचन दो कि मैं तुम्हारे प्रति जितना दयालु रहा उतना तुम मुझ पर भी दयालु रहोगे।"

24इब्राहीम ने कहा, "मैं वचन देता हूँ कि तुमसे मैं वैसा ही व्यवहार करूँगा जैसा तुमने मेरे साथ व्यवहार किया है। 25तब इब्राहीम ने अबीमेलेक से शिकायत की। इब्राहीम ने इसलिये शिकायत की कि अबीमेलेक

सुखी हिब्रू में "सुखी" शब्द इसहाक के नाम की तरह है।

के नौकरों ने पानी के एक कुएँ पर कब्जा कर लिया था।

26अबीमेलेक ने कहा, "इसके बारे में मैंने यह पहली बार सुना है! मुझे नहीं पता है, कि यह किसने किया है, और तुमने भी इसकी चर्चा मुझसे इससे पहले कभी नहीं की।"

27इसलिए इब्राहीम और अबीमेलेक ने एक सन्धि की। 28इब्राहीम ने सन्धि के प्रमाण के रूप में अबीमेलेक को कुछ भेड़े और मवेशी दिए। इब्राहीम सात मादा मेमने भी अबीमेलेक के सामने लाया।

29अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा, "तुम ये सात मादा मेमने अलग क्यों दे रहे हो?"

30इब्राहीम ने कहा, "जब तुम इन सात* मेमनों को मुझसे लोगे तो यह सबूत रहेगा कि यह कुआँ मैंने खोदा है।"

31इसलिए इसके बाद वह कुआँ बेर्शेबा कहलाया। उन्होंने कुएँ को यह नाम दिया क्योंकि यह वह जगह थी जहाँ उन्होंने एक दूसरे को वचन दिया था।

32इस प्रकार इब्राहीम और अबीमेलेक ने बेर्शेबा में सन्धि की। तब अबीमेलेक और सेनापति दोनों पलिश्तियों के प्रदेश में लौट गए।

33इब्राहीम ने बेर्शेबा में एक विशेष पेड़ लगाया। उस जगह इब्राहीम ने यहोवा परमेश्वर से प्रार्थना की 34और इब्राहीम पलिश्तियों के देश में बहुत समय तक रहा।

इब्राहीम, अपने पुत्र को मार डालो!

22 इन बातों के बाद परमेश्वर ने इब्राहीम के विश्वास की परीक्षा लेना तय किया। परमेश्वर ने उससे कहा, "इब्राहीम!"

और इब्राहीम ने कहा, "हाँ।"

2परमेश्वर ने कहा, "अपना पुत्र लो, अपना एकलौता पुत्र, इसहाक जिससे तुम प्रेम करते हो मोरिय्याह पर जाओ तुम उस पहाड़ पर जाना जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा। वहाँ तुम अपने पुत्र को मारोगे और उसको होमबलि स्वरूप मुझे अर्पण करोगे।"

3सवेरे इब्राहीम उठा और उसने गधे को तैयार किया। इब्राहीम ने इसहाक और दो नौकरों को साथ लिया। इब्राहीम ने बलि के लिए लकड़ियाँ काटकर तैयार कीं। तब वे उस जगह गए जहाँ जाने के लिए परमेश्वर ने कहा। 4उनकी तीन दिन की यात्रा के बाद इब्राहीम ने ऊपर देखा और दूर उस जगह को देखा जहाँ वे जा रहे थे। 5तब इब्राहीम ने अपने नौकरों से कहा, "यहाँ गधे के साथ ठहरो। मैं अपने पुत्र को उस जगह ले जाऊँगा और उपासना करूँगा। तब हम बाद में लौट आयेंगे।"

6इब्राहीम ने बलि के लिए लकड़ियाँ ली और इन्हें पुत्र के कन्धों पर रखा। इब्राहीम ने एक विशेष छुरी और आग ली। तब इब्राहीम और उसका पुत्र दोनों उपासना के लिए उस जगह एक साथ गए।

7इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा, "पिताजी!"

इब्राहीम ने उत्तर दिया, "हाँ, पुत्र।"

इसहाक ने कहा, "मैं लकड़ी और आग तो देखता हूँ, किन्तु वह मेमना कहाँ है जिसे हम बलि के रूप में जलाएंगे?"

8इब्राहीम ने उत्तर दिया, "पुत्र परमेश्वर बलि के लिये मेमना स्वयं जुटा रहा है।"

इसहाक बचाया गया

इस तरह इब्राहीम और उसका पुत्र उस जगह साथ–साथ गए। 9वे उस जगह पर पहुँचे जहाँ परमेश्वर ने पहुँचने को कहा था। वहाँ इब्राहीम ने एक बलि की वेदी बनाई। इब्राहीम ने वेदी पर लकड़ियाँ रखी। तब इब्राहीम ने अपने पुत्र को बाँधा। इब्राहीम ने इसहाक को वेदी की लकड़ियों पर रखा। 10तब इब्राहीम ने अपनी छुरी निकाली और अपने पुत्र को मारने की तैयारी की। 11तब यहोवा के दूत ने इब्राहीम को रोक दिया। दूत ने स्वर्ग से पुकारा और कहा, "इब्राहीम, इब्राहीम।"

इब्राहीम ने उत्तर दिया, "हाँ।"

12दूत ने कहा, "तुम अपने पुत्र को मत मारो अथवा उसे किसी प्रकार की चोट न पहुँचाओ। मैंने अब देख लिया कि तुम परमेश्वर का आदर करते हो और उसकी आज्ञा मानते हो। मैं देखता हूँ कि तुम अपने एकलौते पुत्र को मेरे लिए मारने के लिए तैयार हो।"

13इब्राहीम ने ऊपर दृष्टि की और एक मेढ़े को देखा। मेढ़े की सींगे एक झाड़ी में फँस गयी थी। इसलिए इब्राहीम वहाँ गया, उसे पकड़ा और उसे मार डाला। इब्राहीम ने मेढ़े को अपने पुत्र के स्थान पर बलि चढ़ाया। इब्राहीम का पुत्र बच गया। 14इसलिए इब्राहीम ने उस जगह का नाम "यहोवा यिरे"* रखा। आज भी लोग कहते हैं, "इस पहाड़ पर यहोवा को देखा जा सकता है।" 15यहोवा के दूत ने स्वर्ग से इब्राहीम को दूसरी बार पुकारा। 16दूत ने कहा, "तुम मेरे लिए अपने पुत्र को मारने के लिए तैयार थे। यह तुम्हारा एकलौता पुत्र था। तुमने मेरे लिए ऐसा किया है इसलिए मैं, यहोवा तुमको वचन देता हूँ कि। 17मैं तुम्हें निश्चय ही आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हें उतने वंशज दूँगा जितने आकाश में तारे हैं। ये इतने अधिक लोग होंगे जितने समुद्र के तट पर बालू के कण और तुम्हारे लोग अपने सभी शत्रुओं को हराएंगे। 18संसार के सभी राष्ट्र तुम्हारे परिवार के द्वारा

सात "सात" के लिये हिब्रू शब्द "शपथ," या "वचन देना जैसा है इसलिए "सात" जानवर उसे वचन देने के प्रमाण थे।

याहवे ... यिरे या "यहोवा यिरे" इसका अर्थ "ईश्वर देखता है" या "ईश्वर पूर्ति करता है" है।

आशीर्वाद पाएँगे। * मैं यह इसलिए करूँगा क्योंकि तुमने
मेरी आज्ञा का पालन किया।"
19तब इब्राहीम अपने नौकरों के पास लौटा। उन्होंने
बेर्शेबा तक वापसी यात्रा की और इब्राहीम वहीं रहने
लगा।
20इसके बाद, इब्राहीम को यह खबर मिला। खबर
यह था, "तुम्हारे भाई नाहोर और उसकी पत्नी मिल्का
के अब बच्चे हैं। 21पहला पुत्र ऊस है। दूसरा पुत्र बूज है।
तीसरा पुत्र अराम का पिता कमूएल है। 22इसके अतिरिक्त
केसेद, हजो, पिल्दाश, यिदलाप और बतूएल है।" 23बतूएल,
रिबका का पिता था। मिल्का इन आठ पुत्रों की माँ थी
और नाहोर पिता था। नाहोर इब्राहीम का भाई था।
24नाहोर के दूसरे चार लड़के उसकी एक रखैल रुमा
से थे। ये पुत्र तेबह, गहम, तहश, माका थे।

सारा मरती है

23 सारा एक सौ सत्ताईस वर्ष तक जीवित रही।
2वह कनान प्रदेश के किर्यतर्बा (हेब्रोन) नगर
में मरी। इब्राहीम बहुत दुःखी हुआ और उसके लिए वहाँ
रोया। 3तब इब्राहीम ने अपनी मरी पत्नी को छोड़ा और
हित्ती लोगों से बात करने गया। उसने कहा, 4"मैं इस
प्रदेश में नहीं रहता। मैं यहाँ केवल एक यात्री हूँ। इसलिए
मेरे पास अपनी पत्नी को दफनाने के लिए कोई जगह
नहीं है। मैं कुछ भूमि चाहता हूँ जिसमें अपनी पत्नी को
दफना सकूँ।"
5हित्ती लोगों ने इब्राहीम को उत्तर दिया, 6"महोदय,
आप हम लोगों के बीच परमेश्वर के प्रमुख व्यक्तियों में
से एक है। आप अपने मरे को दफनाने के लिए सबसे
अच्छी जगह, जो हम लोगों के पास है, ले सकते हैं। आप
हम लोगों की कोई भी दफनाने की जगह, जो आप
चाहते हैं, ले सकते हैं। हम लोगों में से कोई भी आपको
अपनी पत्नी को दफनाने से नहीं रोकेगा।"
7इब्राहीम उठा और लोगों की तरफ सिर झुकाया।
8इब्राहीम ने उनसे कहा, "यदि आप लोग सचमुच मेरी
मरी हुई पत्नी को दफनाने में मेरी मदद करना चाहते
हैं तो सोहर के पुत्र एप्रोन से मेरे लिए बात करें। 9मैं
मकपेला की गुफा को खरीदना पसन्द करूँगा। एप्रोन
इसका मालिक है। यह उसके खेत के सिरे पर है। मैं
इसके मूल्य के अनुसार उसे पूरी कीमत दूँगा। मैं चाहता
हूँ कि आप लोग इस बात के गवाह रहे कि मैं इस भूमि
को कब्रिस्तान के रुप में खरीद रहा हूँ।"
10एप्रोन वहीं लोगों के बीच बैठा था। एप्रोन ने इब्राहीम
को उत्तर दिया, 11"नहीं, महोदय। मैं आपको भूमि दूँगा।
मैं आपको वह गुफा दूँगा। मैं यह आपको इसलिए दूँगा
कि आप इसमें अपनी पत्नी को दफना सकें ।"
12तब इब्राहीम ने हित्ती लोगों के सामने अपना सिर
झुकाया। 13इब्राहीम ने सभी लोगों के सामने एप्रोन से
कहा, "किन्तु मैं तो खेत की पूरी कीमत देना चाहता हूँ।
मेरा धन स्वीकार करें। मैं अपने मरे हुए को इसमें
दफनाऊँगा।"
14एप्रोन ने इब्राहीम को उत्तर दिया, 15"महोदय, मेरी
बात सुनें। चार सौ चाँदी के शेकेल। हमारे और आपके
लिए क्या अर्थ रखते हैं? भूमि लें और अपनी मरी पत्नी
को दफनाएँ।"
16इब्राहीम ने समझा कि एप्रोन उसे भूमि की कीमत
बता रहा है, इसलिये हित्ती लोगों को गवाह मानकर,
इब्राहीम ने चाँदी के चार सौ शेकेल एप्रोन के लिये
तौले। इब्राहीम ने पैसा उस व्यापारी * को दे दिया जो इस
भूमि के बेचने का धन्धा कर रहा था।
17-18इस प्रकार एप्रोन के खेत के मालिक बदल गये।
यह खेत मम्रे के पूर्व मकपेला में था। नगर के सभी
लोगों ने एप्रोन और इब्राहीम के बीच हुई वाचा को
देखा। 19इसके बाद इब्राहीम ने अपनी पत्नी सारा को
मम्रे कनान प्रदेश में हेब्रोन के निकट उस खेत की
गुफा में दफनाया। 20इब्राहीम ने खेत और उसकी गुफा
को हित्ती लोगों से खरीदा। यह उसकी सम्पत्ति हो गई,
और उसने इसका प्रयोग कब्रिस्तान के रूप में किया।

इसहाक के लिए पत्नी

24 इब्राहीम बहुत बुढ़ापे तक जीवित रहा। यहोवा
ने इब्राहीम को आशीर्वाद दिया और उसके
हर काम में उसे सफलता प्रदान की। 2इब्राहीम का एक
बहुत पुराना नौकर था जो इब्राहीम का जो कुछ था
उसका प्रबन्धक था। इब्राहीम ने उस नौकर को बुलाया
और कहा, "अपने हाथ मेरी जांघों के नीचे रखो। 3अब
मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे एक वचन दो। धरती और
आकाश के परमेश्वर यहोवा के सामने तुम वचन दो
कि तुम कनान की किसी लड़की से मेरे पुत्र का
विवाह नहीं होने दोगे। हम लोग उनके बीच रहते हैं,
किन्तु एक कनानी लड़की से उसे विवाह न करने दो।
4तुम मेरे देश और मेरे अपने लोगों में लौटकर जाओ।
वहाँ मेरे पुत्र इसहाक के लिए एक दुल्हन खोजो। तब
उसे यहाँ उसके पास लाओ।"
5नौकर ने उससे कहा, "यह हो सकता है कि वह
दुल्हन मेरे साथ इस देश में लौटना न चाहे। तब, क्या मैं
तुम्हारे पुत्र को तुम्हारी जन्मभूमि को ले जाऊँ?"
6इब्राहीम ने उससे कहा, "नहीं, तुम हमारे पुत्र को
उस देश में न ले जाओ। 7यहोवा, स्वर्ग का परमेश्वर
मुझे मेरी जन्मभूमि से यहाँ लाया। वह देश मेरे पिता
और मेरे परिवार का घर था। किन्तु यहोवा ने यह

तुम्हारे ... पाएंगे या "तुम्हारे वंशजों द्वारा पृथ्वी के सभी राष्ट्र वरदान पाएंगें।"

व्यापारी कोई व्यक्ति जो अपनी रोजी खरीद और बेचकर चलाता है। यह एप्रोन या कोई दूसरा व्यक्ति हो सकता है।

वचन दिया कि वह नया प्रदेश मेरे परिवार वालों का होगा। यहोवा अपना एक दूत तुम्हारे सामने भेजे जिससे तुम मेरे पुत्र के लिए दुल्हन चुन सको। 8किन्तु यदि लड़की तुम्हारे साथ आना मना करे तो तुम अपने वचन से छुटकारा पा जाओगे। किन्तु तुम मेरे पुत्र को उस देश में वापस मत ले जाना।"

9इस प्रकार नौकर ने अपने मालिक के जांघों के नीचे अपना हाथ रखकर वचन दिया।

खोज आरम्भ होती है

10नौकर ने इब्राहीम के दस ऊँट लिए और उस जगह से वह चला गया। नौकर कई प्रकार की सुन्दर भेंटें अपने साथ ले गया। वह नाहोर के नगर मेसोपोटामिया को गया। 11वह नगर के बाहर के कुएँ पर गया। यह बात शाम को हुई जब स्त्रियाँ पानी भरने के लिए बाहर आती हैं। नौकर ने वहीं ऊँटों को घुटनों के बल बिठाया।

12नौकर ने कहा, "हे यहोवा, तू मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर है। आज तू उसके पुत्र के लिए मुझे एक दुल्हन प्राप्त करा। कृपया मेरे स्वामी इब्राहीम पर यह दया कर। 13मैं यहाँ इस जल के कुएँ के पास खड़ा हूँ और पानी भरने के लिए नगर से लड़कियाँ आ रहीं हैं। 14मैं एक विशेष चिन्ह की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिससे मैं जान सकूँ कि इसहाक के लिए कौन सी लड़की ठीक है। यह विशेष चिन्ह है: मैं लड़की से कहूँगा 'कृपा कर आप घड़े को नीचे रखे जिससे मैं पानी पी सकूँ।' मैं तब समझूँगा कि यह ठीक लड़की है जब वह कहेगी, 'पीओ, और मैं तुम्हारे ऊँटों के लिए भी पानी दूँगी।' यदि ऐसा होगा तो तू प्रमाणित कर देगा कि इसहाक के लिए यह लड़की ठीक है। मैं समझूँगा कि तूने मेरे स्वामी पर कृपा की है।"

एक दुल्हन मिली

15तब नौकर की प्रार्थना पूरी होने के पहले ही रिबका नाम की एक लड़की कुएँ पर आई। रिबका बतूएल की पुत्री थी। बतूएल इब्राहीम के भाई नाहोर और मिल्का का पुत्र था। रिबका अपने कंधे पर पानी का घड़ा लेकर कुएँ पर आई थी। 16लड़की बहुत सुन्दर थी। वह कुँवारी थी। वह किसी पुरुष के साथ कभी नहीं सोई थी। वह अपना घड़ा भरने के लिए कुएँ पर आई। 17तब नौकर उसके पास तक दौड़ कर गया और बोला, "कृपा कर के अपने घड़े से पीने के लिए थोड़ा जल दें।"

18रिबका ने जल्दी कंधे से घड़े को नीचे उतारा और उसे पानी पिलाया। रिबका ने कहा, "महोदय, यह पिएँ।" 19ज्यों ही उसने पीने के लिए कुछ पानी देना खतम किया। रिबका ने कहा, "मैं आपके ऊँटों को भी पानी दे सकती हूँ।"

20इसलिए रिबका ने झट से घड़े का सारा पानी ऊँटों के लिए बनी नाद में उंडेल दिया। तब वह और पानी लाने के लिए कुएँ को दौड़ गई और उसने सभी ऊँटों को पानी पिलाया।

21नौकर ने उसे चुपचाप ध्यान से देखा। वह तय करना चाहता था कि यहोवा ने शायद बात मान ली है और उसकी यात्रा को सफल बना दिया है। 22जब ऊँटों ने पानी पी लिया तब उसने रिबका को चौथाई औंस* तौल की एक सोने की अँगूठी दी।

उसने उसे दो बाजूबन्द भी दिए जो तौल में हर एक पाँच औंस* थे। 23नौकर ने पूछा, "तुम्हारा पिता कौन है? क्या तुम्हारे पिता के घर में इतनी जगह है कि हम सब के रहने तथा सोने का प्रबन्ध हो सके?"

24रिबका ने उत्तर दिया, "मेरे पिता बतूएल हैं जो मिल्का और नाहोर के पुत्र हैं।" 25तब उसने कहा, "और हाँ हम लोगों के पास तुम्हारे ऊँट के लिए चारा है और तुम्हारे लिए सोने की जगह है।"

26नौकर ने सिर झुकाया और यहोवा की उपासना की। 27नौकर ने कहा, "मेरे मालिक इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा की कृपा है। यहोवा हमारे मालिक पर दयालु है। यहोवा ने मुझे अपने मालिक के पुत्र के लिए सही दुल्हन* दिया है।"

28तब रिबका दौड़ी और जो कुछ हुआ था अपने परिवार को बताया। 29-30रिबका का एक भाई था। उसका नाम लाबान था। रिबका ने उसे वे बातें बताई जो उससे उस व्यक्ति ने की थी। लाबान उसकी बातें सुन रहा था। जब लाबान ने अगूँठी और बहन की बाहों पर बाजूबन्द देखा तो वह दौड़कर कुएँ पर पहुँचा और वहाँ वह व्यक्ति कुएँ के पास, ऊँटों के बगल में खड़ा था।

31लाबान ने कहा, "महोदय, आप पधारें आपका स्वागत है। आपको यहाँ बाहर खड़ा नहीं रहना है। मैंने आपके ऊँटों के लिए एक जगह बना दी है और आपके सोने के लिए एक कमरा ठीक कर दिया है।"

32इसलिए इब्राहीम का नौकर घर में गया। लाबान ने ऊँटों और उस की मदद की और ऊँटों को खाने के लिए चारा दिया। तब लाबान ने पानी दिया जिससे वह व्यक्ति तथा उसके साथ आए हुए दूसरे नौकर अपने पैर धो सकें। 33तब लाबान ने उसे खाने के लिए भोजन दिया। लेकिन नौकर ने भोजन करना मना किया। उसने कहा, "मैं तब तक भोजन नहीं करूँगा जब तक मैं यह न बता दूँ कि मैं यहाँ किसलिए आया हूँ।"

इसलिए लाबान ने कहा, "तब हम लोगों को बताओ।"

चौथाई औंस शाब्दिक "एक बेका।"

पाँच औंस शाब्दिक पाँच माप।

सही दुल्हन शाब्दिक "मेरे मालिक के भाई के घर।"

रिबका इसहाक की पत्नी बनी

34नौकर ने कहा, "मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। 35यहोवा
ने हमारे मालिक पर हर एक विषय में कृपा की है।
मेरे मालिक महान व्यक्ति हो गए हैं। यहोवा ने इब्राहीम
को कई भेड़ों की रेवड़े तथा मवेशियों के झुण्ड दिए हैं।
इब्राहीम के पास बहुत सोना, चाँदी और नौकर हैं।
इब्राहीम के पास बहुत से ऊँट और गधे हैं। 36सारा, मेरे
मालिक की पत्नी थी। जब वह बहुत बूढ़ी हो गई थी
उसने एक पुत्र को जन्म दिया और हमारे मालिक ने
अपना सब कुछ उस पुत्र को दे दिया है। 37मेरे स्वामी
ने मुझे एक वचन देने के लिए विवश किया। मेरे
मालिक ने मुझ से कहा, 'तुम मेरे पुत्र को कनान की
लड़की से किसी भी तरह विवाह नहीं करने दोगे। हम
लोग उनके बीच रहते हैं, किन्तु मैं नहीं चाहता कि वह
किसी कनानी लड़की से विवाह करे। 38इसलिए तुम्हें
वचन देना होगा कि तुम मेरे पिता के देश को जाओगे।
मेरे परिवार में जाओ और मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन
चुनो।' 39मैंने अपने मालिक से कहा, 'यह हो सकता है
कि वह दुल्हन मेरे साथ इस देश को न आए।' 40लेकिन
मेरे मालिक ने कहा, 'मैं यहोवा की सेवा करता हूँ और
यहोवा तुम्हारे साथ अपना दूत भेजेगा और तुम्हारी मदद
करेगा। तुम्हें वहाँ मेरे अपने लोगों में मेरे पुत्र के लिए
एक दुल्हन मिलेगी। 41किन्तु यदि तुम मेरे पिता के देश
को जाते हो और वे लोग मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन
देना मना करते हैं तो तुम्हे इस वचन से छुटकारा मिल
जाएगा।'

42"आज मैं इस कुएँ पर आया और मैंने कहा, 'हे
यहोवा मेरे मालिक के परमेश्वर कृपा करके मेरी
यात्रा सफल बना। 43मैं यहाँ कुएँ के पास ठहरूँगा और
पानी भरने के लिए आने वाली किसी युवती का प्रतिक्षा
करूँगा। तब मैं कहूँगा, कृपा करके आप अपने घड़े से
पीने के लिए पानी दें। 44उपयुक्त लड़की ही विशेष रूप
से उत्तर देगी। वह कहेगी यह पानी पीओ और मैं तुम्हारे
ऊँटों के लिए भी पानी लाती हूँ। इस तरह मैं जानूँगा कि
यह वही स्त्री है जिसे यहोवा ने मेरे मालिक के पुत्र के
लिएचुनाहै।'

45"मेरी प्रार्थना पूरी होने के पहले ही रिबका कुएँ पर
पानी भरने आई। पानी का घड़ा उसने अपने कंधे पर
ले रखा था। वह कुएँ तक गई और उसने पानी भरा।
मैंने इससे कहा, "कृपा करके मुझे थोड़ा पानी दें।"

46उसने तुरन्त कंधे से घड़े को झुकाया और मेरे
लिए पानी डाला और कहा, 'यह पीएं और मैं आपके
ऊँटों के लिए भी पानी लाऊँगी।' इसलिए मैंने पानी पीया
और अपने ऊँटों को भी पानी पिलाया। 47तब मैंने इससे
पूछा, 'तुम्हारे पिता कौन हैं?' इसने उत्तर दिया, 'मेरा
पिता बतूएल है।' मेरे पिता के माता–पिता मिल्का और
नाहोर हैं। तब मैंने इसे अँगूठी और बाहों के लिए
बाजूबन्द दिए। 48उस समय मैंने अपना सिर झुकाया
और यहोवा को धन्य कहा। मैंने अपने मालिक इब्राहीम
के परमेश्वर यहोवा को कृपालु कहा। मैंने उसे धन्य
कहा क्योंकि उसने सीधे मेरे मालिक के भाई की पोती
तक मुझे पहुँचाया। 49अब बताओ कि तुम क्या करोगे?
क्या तुम मेरे मालिक पर दयालु और श्रद्धालु बनोगे
और अपनी पुत्री उसे दोगे? या तुम अपनी पुत्री देना मना
करोगे? मुझे बताओ, जिससे, मैं यह समझ सकूँकि मुझे
क्या करना है।"

50तब लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया, "हम लोग
यह देखते हैं कि यह यहोवा की ओर से है। इसे हम
टाल नहीं सकते। 51रिबका तुम्हारी है। उसे लो और
जाओ। अपने मालिक के पुत्र से इसे विवाह करने दो।
यही है जिसे यहोवा चाहता है।"

52इब्राहीम के नौकर ने यह सुना और वह यहोवा के
सामने भूमि पर झुका। 53तब उसने रिबका को वे भेंटे
दीं जो वह साथ लाया था। उसने रिबका को सोने और
चाँदी के गहने और बहुत से सुन्दर कपड़े दिए। उसने,
उसके भाई और उसकी माँ को कीमती भेंटे दीं। 54नौकर
और उसके साथ के व्यक्ति वहाँ ठहरे तथा खाया और
पीया। वे वहाँ रातभर ठहरे। वे दूसरे दिन सवेरे उठे
और बोले "अब हम अपने मालिक के पास जाएँगे।"
55रिबका की माँ और भाई ने कहा, "रिबका को हम
लोगों के पास कुछ दिन और ठहरने दो। उसे दस दिन
तक हमारे साथ ठहरने दो। इसके बाद वह जा सकती
है।"

56लेकिन नौकर ने उनसे कहा, "मुझ से प्रतीक्षा न
करवाएँ। यहोवा ने मेरी यात्रा सफल की है। अब मुझे
अपने मालिक के पास लौट जाने दें।"

57रिबका के भाई और माँ ने कहा, "हम लोग रिबका
को बुलाएंगे और उस से पूछेंगे कि वह क्या चाहती है?"
58उन्होंने रिबका को बुलाया और उससे कहा, "क्या
तुम इस व्यक्ति के साथ अभी जाना चाहती हो?"

रिबका ने कहा, "हाँ, मैं जाऊँगी।"

59इसलिए उन्होंने रिबका को इब्राहीम के नौकर
और उसके साथियों के साथ जाने दिया। रिबका की
धाय भी उनके साथ गई। 60जब वह जाने लगी तब वे
रिबका से बोले,

"हमारी बहन, तुम लाखों लोगों की जननी बनो और
तुम्हारे वंशज अपने शत्रुओं को हराएँ और उनके
नगरों को ले लें।"

61तब रिबका और धाय ऊँट पर चढ़ीं और नौकर
तथा उसके साथियों के पीछे चलने लगीं। इस तरह
नौकर ने रिबका को साथ लिया और घर को लौटने
की यात्रा शुरू की।

62इस समय इसहाक ने लहैरोई को छोड़ दिया था
और नेगेव में रहने लगा था। 63एक शाम इसहाक

मैदान में विचरण* करने गया। इसहाक ने नजर उठाई और बहुत दूर से ऊँटों को आते देखा।

64रिबका ने नजर डाली और इसहाक को देखा। तब वह ऊँट से कूद पड़ी। 65उसने नौकर से पूछा, "हम लोगों से मिलने के लिये खेतों में टहलने वाला वह युवक कौन है?"

नौकर ने कहा, "यह मेरे मालिक का पुत्र है।" इसलिए रिबका ने अपने मुँह को पर्दे में छिपा लिया।

66नौकर ने इसहाक को वे सभी बातें बताई जो हो चुकी थीं। 67तब इसहाक लड़की को अपनी माँ के तम्बू में लाया। उसी दिन इसहाक ने रिबका से विवाह कर लिया। वह उससे बहुत प्रेम करता था। अत: उसे उसकी माँ की मृत्यु के पश्चात् भी सांत्वना मिली।

इब्राहीम का परिवार

25 इब्राहीम ने फिर विवाह किया। उसकी नयी पत्नी का नाम कतूरा था। 2कतूरा ने जिम्रान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक और शूह को जन्म दिया। 3योक्षान, शबा और ददान का पिता हुआ। ददान के वंशज अश्शूर और लुम्मी लोग थे। 4मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीद और एल्दा थे। ये सभी पुत्र इब्राहीम और कतूरा से पैदा हुए। 5-6इब्राहीम ने मरने से पहले अपनी दासियों* के पुत्रों को कुछ भेंट दिया। इब्राहीम ने पुत्रों को पूर्व को भेजा। उसने इन्हें इसहाक से दूर भेजा। इसके बाद इब्राहीम ने अपनी सभी चीज़ें इसहाक को दे दीं।

7इब्राहीम एक सौ पचहत्तर वर्ष की उम्र तक जीवित रहा। 8इब्राहीम धीरे-धीरे कमजोर पड़ता गया और भरे-पूरे जीवन के बाद चल बसा। उसने लम्बा भरपूर जीवन बिताया और फिर वह अपने पुरखों के साथ दफनाया गया।

9उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल ने उसे मकपेला की गुफा में दफनाया। यह गुफा सोहर के पुत्रों एप्रोन के खेत में है। यह मम्रे के पूर्व में थी। 10यह वही गुफा है जिसे इब्राहीम ने हित्ती लोगों से खरीदा था। इब्राहीम को उसकी पत्नी सारा के साथ दफनाया गया। 11इब्राहीम के मरने के बाद परमेश्वर ने इसहाक पर कृपा की और इसहाक लहैरोई में रहता रहा।

12इश्माएल के परिवार की यह सूची है। इश्माएल इब्राहीम और हाजिरा का पुत्र था। (हाजिरा सारा की मिस्री दासी थी।) 13इश्माएल के पुत्रों के ये नाम हैं पहला पुत्र नबायोत था, तब केदार पैदा हुआ, तब अदबेल, मिबसाम, 14मिश्मा, दूमा, मस्सा, 15हदर, तेमा, यतूर, नापीश और केदमा हुए। 16ये इश्माएल के पुत्रों के नाम थे। हर एक पुत्र के अपने पड़ाव थे जो छोटे नगर में बदल गये। ये बारह पुत्र अपने लोगों के साथ बारह राजकुमारों के समान थे। 17इश्माएल एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। 18इश्माएल के लोग हवीला से लेकर शूर के पास मिस्र की सीमा और उससे भी आगे अश्शूर के किनारे तक, घूमते रहे और अपने भाईयों और उनसे सम्बन्धित देशों में आक्रमण करते रहे।*

इसहाक का परिवार

19यह इसहाक की कथा है। इब्राहीम का एक पुत्र इसहाक था। 20जब इसहाक चालीस वर्ष का था तब उसने रिबका से विवाह किया। रिबका पद्दनराम की रहने वाली थी। वह अरामी बतूएल की पुत्री थी और लाबान की बहन थी। 21इसहाक की पत्नी बच्चे नहीं जन सकी। इसलिए इसहाक ने यहोवा से अपनी पत्नी के लिए प्रार्थना की। यहोवा ने इसहाक की प्रार्थना सुनी और यहोवा ने रिबका को गर्भवती होने दिया।

22जब रिबका गर्भवती थी तब वह अपने गर्भ के बच्चों से बहुत परेशान थी, लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपट के एक दूसरे को मारने लगे। रिबका ने यहोवा से प्रार्थना की और बोली, "मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है।" 23यहोवा ने कहा "तुम्हारे गर्भ में दो राष्ट्र हैं। दो परिवारों के राजा तुम से पैदा होगें और वे बँट जाएंगे। एक पुत्र दूसरे से बलवान होगा। बड़ा पुत्र छोटे पुत्र की सेवा करेगा" 24और जब समय पूरा हुआ तो रिबका ने जुड़वे बच्चों को जन्म दिया। 25पहला बच्चा लाल हुआ। उसकी त्वचा रोंयेदार पोशाक की तरह थी। इसलिए उसका नाम एसाव पड़ा। 26जब दूसरा बच्चा पैदा हुआ, वह एसाव की एड़ी को मजबूती से पकड़े था। इसलिए उस बच्चे का नाम याकूब पड़ा। इसहाक की उम्र उस समय साठ वर्ष की थी। जब याकूब और एसाव पैदा हुए।

27लड़के बड़े हुए। एसाव एक कुशल शिकारी हुआ। वह मैदानों में रहना पसन्द करने लगा। किन्तु याकूब शान्त व्यक्ति था। वह अपने तम्बू में रहता था। 28इसहाक एसाव को प्यार करता था। वह उन जानवरों को खाना पसन्द करता था जो एसाव मार कर लाता था। किन्तु रिबका याकूब को प्यार करती थी। 29एक बार एसाव शिकार से लौटा। वह थका हुआ और भूख से परेशान था। याकूब कुछ दाल* पका रहा था।

30इसलिए एसाव ने याकूब से कहा, "मैं भूख से कमजोर हो रहा हूँ। तुम उस लाल दाल में से कुछ मुझे दो।" (यही कारण है कि लोग उसे एदोम कहते हैं।)

विचरण इस शब्द का अर्थ "प्रार्थना करना" या "टहलना" है।

दासियों शाब्दिक "रखैल" दास स्त्रियाँ जो उसके लिये पत्नियाँ थीं।

अपने भाईयों ... रहे देखें उत्पत्ति 16:12

दाल या "अरहर।"

31किन्तु याकूब ने कहा, "तुम्हे पहलौठा होने का
अधिकार* मुझको आज बेचना होगा।"
32एसाव ने कहा, "मैं भूख से मरा जा रहा हूँ। यदि मैं
मर जाता हूँ तो मेरे पिता का सारा धन भी मेरी सहायता
नहीं कर पाएगा। इसलिए तुमको मैं अपना हिस्सा दूँगा।"
33किन्तु याकूब ने कहा, "पहले वचन दो कि तुम यह
मुझे दोगे।" इसलिए एसाव ने याकूब को वचन दिया।
एसाव ने अपने पिता के धन का अपना हिस्सा याकूब
को बेच दिया। 34तब याकूब ने एसाव को रोटी और
भोजन दिया। एसाव ने खाया, पिया और तब चला गया।
इस तरह एसाव ने यह दिखाया कि वह पहलौठे होने के
अपने हक की परवाह नहीं करता।

इसहाक अबीमेलेक से झूठ बोलता है

26 एक बार अकाल* पड़ा। यह अकाल वैसा ही
था जैसा इब्राहीम के समय में पड़ा था। इसलिए
इसहाक गरार नगर में पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक
के पास गया। 2यहोवा ने इसहाक से बात की। यहोवा ने
इसहाक से यह कहा, "मिस्र को न जाओ। उसी देश में
रहो जिसमें रहने का आदेश मैंने तुम्हें दिया है। 3उसी
देश में रहो और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें आशीर्वाद
दूँगा। मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार को यह सारा प्रदेश
दूँगा। मैं वही करूँगा जो मैंने तुम्हारे पिता इब्राहीम को
वचन दिया है। 4मैं तुम्हारे परिवार को आकाश के
तारागणों की तरह बहुत से बनाऊँगा और मैं सारा प्रदेश
तुम्हारे परिवार को दूँगा। पृथ्वी के सभी राष्ट्र तुम्हारे
परिवार के कारण मेरा आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। 5मैं यह
इसलिए करूँगा कि तुम्हारे पिता इब्राहीम ने मेरी आज्ञा
का पालन किया और मैंने जो कुछ कहा, उसने किया।
इब्राहीम ने मेरे आदेशों, मेरे विधियों और मेरे नियमों
का पालन किया।"
6इसहाक ठहरा और गरार में रहा। 7इसहाक की
पत्नी रिबका बहुत ही सुन्दर थी। उस जगह के लोगों ने
इसहाक से रिबका के बारे में पूछा। इसहाक ने कहा,
"यह मेरी बहन है।" इसहाक यह कहने से डर रहा था
कि रिबका मेरी पत्नी है। इसहाक डरता था कि लोग
उसकी पत्नी को पाने के लिए उसको मार डालेंगे।
8जब इसहाक वहाँ बहुत समय तक रह चुका,
अबीमेलेक ने अपनी खिड़की से बाहर झाँका और
देखा कि इसहाक, रिबका के साथ छेड़ खानी कर रहा
है। 9अबीमेलेक ने इसहाक को बुलाया और कहा, "यह
स्त्री तुम्हारी पत्नी है। तुमने हम लोगों से यह क्यों कहा
कि यह मेरी बहन है।"
इसहाक ने उससे कहा, "मैं डरता था कि तुम उसे
पाने के लिए मुझे मार डालोगे।"
10अबीमेलेक ने कहा, "तुमने हम लोगों के लिए बुरा
किया है। हम लोगों का कोई भी पुरुष तुम्हारी पत्नी के
साथ सो सकता था। तब वह बड़े पाप का दोषी होता।"
11इसलिए अबीमेलेक ने सभी लोगों को चेतावनी दी।
उसने कहा, "इस पुरुष और इस स्त्री को कोई चोट नहीं
पहुँचाएगा। यदि कोई इन्हें चोट पहुँचाएगा तो वह व्यक्ति
जान से मार दिया जाएगा।"

इसहाक धनी बना

12इसहाक ने उस भूमि पर खेती की और उस साल
उसे बहुत फसल हुई। यहोवा ने उस पर बहुत अधिक
कृपा की। 13इसहाक धनी हो गया। वह अधिक से
अधिक धन तब तक बटोरता रहा जब तक बहुत धनी
नहीं हो गया।14उसके पास बहुत सी रेवड़े और
मवेशियों के झुण्ड थे। उसके पास अनेक दास भी थे।
सभी पलिश्ती उससे डाह रखते थे। 15इसलिए
पलिश्तियों ने उन सभी कुओं को नष्ट कर दिया जिन्हें
इसहाक के पिता इब्राहीम और उसके साथियों ने वर्षों
पहले खोदा था। पलिश्तियों ने उन्हें मिट्टी से भर दिया
16और अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, "हमारा देश
छोड़ दो। तुम हम लोगों से बहुत अधिक शक्तिशाली हो
गए हो।"
17इसलिए इसहाक ने वह जगह छोड़ दी और गरार
की छोटी नदी के पास पड़ाव डाला। इसहाक वहीं ठहरा
और वहीं रहा। 18इसके बहुत पहले इब्राहीम ने कई
कुएँ खोदे थे। जब इब्राहीम मरा तो पलिश्तियों ने मिट्टी
से कुओं को भर दिया। इसलिए वहीं इसहाक लौटा और
उन कुओं को फिर खोद डाला। 19इसहाक के नौकरों
ने छोटी दी के पास एक कुआँ खोदा। उस कुएँ से एक
पानी का सोता फूट पड़ा। 20तब गरार के गड़ेरिये उस
कुएँ की वजह से इसहाक के नौकरों से झगड़ा करने
लगे। उन्होंने कहा, "यह पानी हमारा है।" इसलिए इसहाक
ने उसका नाम एसेक रखा।
उसने यह नाम इसलिए दिया कि उसी जगह पर उन
लोगों ने उससे झगड़ा किया था।
21तब इसहाक के नौकरों ने दूसरा कुआँ खोदा। वहाँ
के लोगों ने उस कुएँ के लिए भी झगड़ा किया। इसलिए
इसहाक ने उस कुएँ का नाम सित्रा रखा।
22इसहाक वहाँ से हटा और दूसरा कुआँ खोदा। उस
कुएँ के लिए झगड़ा करने कोई नहीं आया। इसलिए
इसहाक ने उस कुएँ का नाम रहोबोत रखा। इसहाक ने
कहा, "यहोवा ने यहाँ हमारे लिए जगह उपलब्ध कराई
है। हम लोग बढ़ेंगे और इसी भूमि पर सफल होंगे।"

पहलौठा ... अधिकार पिता के मरने के बाद पिता की अधिक से अधिक सम्पत्ति पहलौठे पुत्र को प्राय: मिलती थी और बड़ा पुत्र ही परिवार का नया संरक्षक होता था।

अकाल वह समय जब बहुत समय तक वर्षा न हो और कोई फसल न उग सके। आमतौर पर आदमी और जानवर पर्याप्त खाना और पानी न मिलने से मर जाते हैं।

23उस जगह से इसहाक बेर्शेबा को गया। 24यहोवा
उस रात इसहाक से बोला, "मैं तुम्हारे पिता इब्राहीम का
परमेश्वर हूँ। डरो मत। मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं तुम्हें
आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को महान बनाऊँगा।
मैं अपने सेवक इब्राहीम के कारण यह करूँगा।" 25इसलिए
इसहाक ने उस जगह यहोवा की उपासना के लिए एक
वेदी बनाई। इसहाक ने वहाँ पड़ाव डाला और उसके
नौकरों ने एक कुआँ खोदा। 26अबीमेलेक गरार से
इसहाक को देखने आया। अबीमेलेक अपने साथ
सलाहकार अहुज्जत और सेनापति पीकोल को लाया।

27इसहाक ने पूछा, "तुम मुझे देखने क्यों आए हो?
तुम इसके पहले मेरे साथ मित्रता नहीं रखते थे। तुमने
मुझे अपना देश छोड़ने को विवश किया।"

28उन्होंने जवाब दिया, "अब हम लोग जानते हैं कि
यहोवा तुम्हारे साथ है। हम चाहते हैं कि हम तुम्हारे
साथ एक वाचा करें। हम चाहते हैं कि तुम हमें एक
वचन दो। 29हम लोगो ने तुम्हें चोट नहीं पहुँचाई, अब
तुम्हें यह वचन देना चाहिए कि तुम हम लोगों को चोट
नहीं पहुँचाओगे। हम लोगों ने तुमको भेजा। लेकिन हम
लोगों ने तुम्हें शान्ति से भेजा। अब साफ है कि यहोवा ने
तुम्हें आशीर्वाद दिया है।"

30इसलिए इसहाक ने उन्हें दावत दी। सभी ने खाया
और पीया। 31दूसरे दिन सवेरे हर एक व्यक्ति ने वचन
दिया और शपथ खाई। तब इसहाक ने उनको शान्ति से
विदा किया और वे सकुशल उसके पास से चले आये।

32उस दिन इसहाक के नौकर आए और उन्होंने
अपने खोदे हुए कुएँ के बारे में बताया। नौकरों ने कहा,
"हम लोगों ने उस कुएँ से पानी पीया।" 33इसलिए इसहाक
ने उसका नाम शिबा रखा और वह नगर अभी भी
बेर्शेबा कहलाता है।

एसाव की पत्नियाँ

34जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, उसने हित्ती स्त्रियों
से विवाह किया। एक बेरी की पुत्री यहूदीत थी। दूसरी
एलोन की पुत्री बाशमत थी। 35इन विवाहों ने इसहाक
और रिबका का मन दुःखी कर दिया।

वसीयत के झगड़े

27 जब इसहाक बूढ़ा हो गया तो उसकी आँखे
अच्छी न रहीं। इसहाक साफ–साफ नहीं देख
सकता था। एक दिन उसने अपने बड़े पुत्र एसाव को
बुलाया। इसहाक ने कहा, "पुत्र।"

एसाव ने उत्तर दिया, "हाँ, पिताजी।"

2इसहाक ने कहा, "देखो, मैं बूढ़ा हो गया। हो सकता
है मैं जल्दी ही मर जाऊँ। 3अब तू अपना तरकश और
धनुष लेकर, मेरे लिए शिकार पर जाओ। मेरे खाने के
लिए एक जानवर मार लाओ। 4मेरा प्रिय भोजन बनाओ।
उसे मेरे पास लाओ, और मैं इसे खाऊँगा। तब मैं मरने
से पहले तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" 5इसलिए एसाव शिकार
करने गया।

याकूब ने इसहाक से चाल चली

रिबका ने वे बातें सुन ली थी, जो इसहाक ने अपने
पुत्र एसाव से कहीं। 6रिबका ने अपने पुत्र याकूब से
कहा, "सुनों, मैंने तुम्हारे पिता को, तुम्हारे भाई से बातें
करते सुना है। 7तुम्हारे पिता ने कहा, 'मेरे खाने के
लिए एक जानवर मारो। मेरे लिए भोजन बनाओ और
मैं उसे खाऊँगा। तब मैं मरने के पहले तुमको आशीर्वाद
दूँगा।' 8इसलिए पुत्र सुनो। मैं जो कहती हूँ, करो। 9अपनी
बकरियों के बीच जाओ और दो नयी बकरियाँ लाओ।
मैं उन्हें वैसा बनाऊँगी जैसा तुम्हारे पिता को प्रिय है।
10तब तुम वह भोजन अपने पिता के पास ले जाओगे
और वह मरने के पहले तुमको ही आशीर्वाद देगा।"

11लेकिन याकूब ने अपनी माँ रिबका से कहा, "किन्तु
मेरा भाई रोयेंदार है और मैं उसकी तरह रोयेंदार नहीं
हूँ। 12यदि मेरे पिता मुझको छूते हैं, तो जान जाएंगे कि मैं
एसाव नहीं हूँ। तब वे मुझे आशीर्वाद नहीं देंगे। वे मुझे
शाप* देंगे क्योंकि मैंने उनके साथ चाल चलने का
प्रयत्न किया।"

13इस पर रिबका ने उससे कहा, "यदि कोई परेशानी
होगी तो मैं अपना दोष मान लूँगी। जो मैं कहती हूँ करो।
जाओ, और मेरे लिए बकरियाँ लाओ।"

14इसलिए याकूब बाहर गया और उसने दो बकरियों
को पकड़ा और अपनी माँ के पास लाया। उसकी माँ ने
इसहाक की पसंद के अनुसार विशेष ढंग से उन्हें
पकाया। 15तब रिबका ने उस पोशाक को उठाया जो
उसका बड़ा पुत्र एसाव पहनना पसंद करता था। रिबका
ने अपने छोटे पुत्र याकूब को वे कपड़े पहना दिए।
16रिबका ने बकरियों के चमड़े को लिया और याकूब
के हाथों और गले पर बांध दिया। 17तब रिबका ने
अपना पकाया भोजन उठाया और उसे याकूब को
दिया।

18याकूब पिता के पास गया और बोला, "पिताजी।"
और उसके पिता ने पूछा, "हाँ पुत्र, तुम कौन हो?"

19याकूब ने अपने पिता से कहा, "मैं आपका बड़ा
पुत्र एसाव हूँ। आपने जो कहा है, मैंने कर दिया है। अब
आप बैठें और उन जानवरों को खाएं जिनका शिकार
मैंने आपके लिए किया है। तब आप मुझे आशीर्वाद दे
सकते हैं।"

20लेकिन इसहाक ने अपने पुत्र से कहा, "तुमने
इतनी जल्दी शिकार करके जानवरों को कैसे मारा
है?"

शाप यह माँगना कि किसी का बुरा हो।

याकूब ने उत्तर दिया, "क्योंकि आपके परमेश्वर यहोवा ने मुझे जल्दी ही जानवरों को प्राप्त करा दिया।"

21तब इसहाक ने याकूब से कहा, "मेरे पुत्र मेरे पास आओ जिससे मैं तुम्हें छू सकूँ। यदि मैं तुम्हें छू सकूँगा तो मैं यह जान जाऊँगा कि तुम वास्तव में मेरे पुत्र एसाव ही हो।"

22याकूब अपने पिता इसहाक के पास गया। इसहाक ने उसे छुआ और कहा,"तुम्हारी आवाज याकूब की आवाज जैसी है। लेकिन तुम्हारी बाहें एसाव की रोंयेदार बाहों की तरह है।" 23इसहाक यह नहीं जान पाया कि यह याकूब है क्योंकि उसकी बाहें एसाव की बाहों की तरह रोंयेदार थीं। इसलिए इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया।

24इसहाक ने कहा, "क्या सचमुच तुम मेरे पुत्र एसाव हो?"

याकूब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ।"

याकूब के लिए "आशीर्वाद"

25तब इसहाक ने कहा, "भोजन लाओ। मैं इसे खाऊँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" इसलिए याकूब ने उसे भोजन दिया और उसने खाया। याकूब ने उसे दाखमधु दी, और उसने उसे पीया।

26तब इसहाक ने उससे कहा, "पुत्र, मेरे करीब आओ और मुझे चूमों।" 27इसलिए याकूब अपने पिता के पास गया और उसे चूमा। इसहाक ने एसाव के कपड़ों की गन्ध पाई और उसको आशीर्वाद दिया। इसहाक ने कहा,

"अहा, मेरे पुत्र की सुगन्ध यहोवा से वरदान पाए खेतों की सुगन्ध की तरह है। 28यहोवा तुम्हें बहुत वर्षा दे। जिससे तुम्हें बहुत फसल और दाखमधु मिले।

29सभी लोग तुम्हारी सेवा करें। राष्ट्र तुम्हारे सामने झुकें। तुम अपने भाईयों के ऊपर शासक होगे। तुम्हारी माँ के पुत्र तुम्हारे सामने झुकेंगे और तुम्हारी आज्ञा मानेंगे। हर एक व्यक्ति जो तुम्हें शाप देगा, शाप पाएगा और हर एक व्यक्ति जो तुम्हें आशीर्वाद देगा, आशीर्वाद पाएगा।"

एसाव को "आशीर्वाद"

30इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देना पूरा किया। तब ज्योंही याकूब अपने पिता इसहाक के पास से गया त्योंही एसाव शिकार करके अन्दर आया। 31एसाव ने अपने पिता की पसंद का विशेष भोजन बनाया। एसाव इसे अपने पिता के पास लाया। उसने अपने पिता से कहा, "पिताजी, उठें और उस भोजन को खाएं जो आपके पुत्र ने आपके लिए मारा है। तब आप मुझे आशीर्वाद दे सकते है।"

32किन्तु इसहाक ने उससे कहा, "तुम कौन हो?"

उसने उत्तर दिया, "मैं आपका पहलौठा पुत्र एसाव हूँ।"

33तब इसहाक बहुत झल्ला गया और बोला, "तब तुम्हारे आने से पहले वह कौन था? जिसने भोजन पकाया और जो मेरे पास लाया। मैंने वह सब खाया और उसको आशीर्वाद दिया। अब अपने आशीर्वादों को लौटाने का समय निकल चुका है।"

34एसाव ने अपने पिता की बात सुनी। उसका मन बहुत गुस्से और कड़वाहट से भर गया। वह चीखा। वह अपने पिता से बोला, "पिताजी, तब मुझे भी आशीर्वादें!"

35इसहाक ने कहा, "तुम्हारे भाई ने मुझे धोखा दिया। वह आया और तुम्हारा आशीर्वाद लेकर गया।"

36एसाव ने कहा, "उसका नाम ही याकूब ("चालबाज") है। यह नाम उसके लिए ठीक ही है। उसका यह नाम बिल्कुल सही रखा गया है वह सचमुच में चालबाज है। उसने मुझे दो बार धोखा दिया। उसने पहलौठा होने के मेरे अधिकार को ले ही चुका था और अब उसने मेरे हिस्से के आशीर्वाद को भी ले लिया। क्या आपने मेरे लिए कोई आशीर्वाद बचा रखा है?"

37इसहाक ने जवाब दिया, "नहीं, अब बहुत देर हो गई। मैंनें याकूब को तुम्हारे ऊपर शासन करने का अधिकार दे दिया है। मैंने यह भी कह दिया कि सभी भाई उसके सेवक होंगे। मैंने उसे बहुत अधिक अन्न और दाखमधु का आशीर्वाद दिया है। पुत्र तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं बचा है।"

38किन्तु एसाव अपने पिता से माँगता रहा। "पिताजी, क्या आपके पास एक भी आशीर्वाद नहीं है? पिताजी, मुझे भी आशीर्वाद दें।" यों एसाव रोने लगा।

39तब इसहाक ने उससे कहा, "तुम अच्छी भूमि पर नहीं रहोगे। तुम्हारे पास बहुत अन्न नहीं होगा।

40तुम्हें जीने के लिए संघर्ष करना होगा। और तुम अपने भाई के दास होगे। किन्तु तुम आजादी के लिए लड़ोगे, और उसके शासन से आजाद हो जाओगे।"

41इसके बाद इस आशीर्वाद के कारण एसाव याकूब से घृणा करता रहा। एसाव ने मन ही मन सोचा, "मेरा पिता जल्दी ही मरेगा और मैं उसका शोक मनाऊँगा। लेकिन उसके बाद मैं याकूब को मार डालूँगा।"

42रिबका ने एसाव द्वारा याकूब को मारने का षड़यन्त्र सुना। उसने याकूब को बुलाया और उससे कहा, "सुनो, तुम्हारा भाई एसाव तुम्हें मारने का षड़यन्त्र कर रहा है। 43इसलिए पुत्र जो मैं कहती हूँ, करो। मेरा भाई लाबान हारान में रहता है। उसके पास जाओ और छिपे रहो। 44उसके पास थोड़े समय तक ही रहो जब तक तुम्हारे भाई का गुस्सा नहीं उतरता। 45थोड़े समय बाद तुम्हारा भाई भूल जाएगा कि तुमने उसके साथ क्या किया? तब मैं तुम्हें लौटाने के लिए एक नौकर को भेजूँगी। मैं एक ही दिन दोनों पुत्रों को खोना नहीं चाहती।"

46तब रिबका ने इसहाक से कहा, "तुम्हारे पुत्र एसाव ने हित्ती स्त्रियों से विवाह कर लिया है। मैं इन स्त्रियों से परेशान हूँ क्योंकि ये हमारे लोगों में से नहीं हैं। यदि याकूब भी इन्हीं स्त्रियों में से किसी के साथ विवाह करता है तो मैं मर जाना चाहूँगी।"

याकूब पत्नी की खोज करता है

28 इसहाक ने याकूब को बुलाया और उसको आशीर्वाद दिया। तब इसहाक ने उसे आदेश दिया। इसहाक ने कहा, "तुम कनानी स्त्री से विवाह नहीं कर सकते। 2इसलिए इस जगह को छोड़ो और पद्दनराम को जाओ। अपने नाना बतूएल के घराने में जाओ। वहाँ तुम्हारा मामा लाबान रहता है। उसकी किसी एक पुत्री से विवाह करो। 3मैं प्रार्थना करता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे और तुम्हें बहुत से पुत्र दे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम एक महान राष्ट्र के पिता बनो। 4मैं प्रार्थना करता हूँ कि जिस तरह परमेश्वर ने इब्राहीम को वरदान दिया था उसी तरह वह तुमको भी आशीर्वाद दे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हें इब्राहीम का आशीर्वाद दे, यानी वह तुम्हें और तुम्हारी आने वाली पीढ़ी को, यह जगह जहाँ तुम आज परदेशी की तरह रहते हो, हमेशा के लिए तुम्हारी सम्पत्ति बना दे।"

5इस तरह इसहाक ने याकूब को पद्दनराम के प्रदेश को भेजा। याकूब अपने मामा लाबान के पास गया। अरामी बतूएल लाबान और रिबका का पिता था और रिबका याकूब और एसाव की माँ थी।

6एसाव को पता चला कि उसके पिता इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया है और उसने याकूब को पद्दरनाम में एक पत्नी की खोज के लिए भेजा है। एसाव को यह भी पता लगा कि इसहाक ने याकूब को आदेश दिया है कि वह कनानी स्त्री से विवाह न करे। 7एसाव ने यह समझा कि याकूब ने अपने पिता और माँ की आज्ञा मानी और वह पद्दरनाम को चला गया। 8एसाव ने इससे यह समझा कि उसका पिता नहीं चाहता कि उसके पुत्र कनानी स्त्रियों से विवाह करें। 9एसाव की दो पत्नियाँ पहले से ही थीं। किन्तु उसने इश्माएल की पुत्री महलत से विवाह किया। इश्माएल इब्राहीम का पुत्र था। महलत नबायोत की बहन थी।

परमेश्वर का घर बेतेल

10याकूब ने बेर्शेबा को छोड़ा और वह हारान को गया। 11याकूब के यात्रा करते समय ही सूरज डूब गया था। इसलिए याकूब रात बिताने के लिए एक जगह ठहरने गया। याकूब ने उस जगह एक चट्टान देखी और सोने के लिए इस पर अपना सिर रखा। 12याकूब ने सपना देखा। उसने देखा कि एक सीढ़ी पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुँची है। 13याकूब ने स्वर्गदूतों को उस सीढ़ी पर चढ़ते उतरते देखा और यहोवा को सीढ़ी के पास खड़ा देखा। यहोवा ने कहा, "मैं तुम्हारे पितामह इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं इसहाक का परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें वह भूमि दूँगा जिस पर तुम अब सो रहे हो। मैं यह भूमि तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को दूँगा। 14तुम्हारे वंशज उतने होंगे जितने पृथ्वी पर मिट्टी के कण हैं। वे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, तथा दक्षिण में फैलेंगे। पृथ्वी के सभी परिवार तुम्हारे वंशजों के कारण वरदान पाएंगे।

15"मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा जहाँ भी जाओगे और मैं इस भूमि पर तुम्हें लौटा ले आऊँगा। मैं तुमको तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक मैं वह नहीं कर लूँगा जो मैंने करने का वचन दिया है।"

16तब याकूब अपनी नींद से उठा और बोला, "मैं जानता हूँ कि यहोवा इस जगह पर है। किन्तु यहाँ जब तक मैं सोया नहीं था, मैं नहीं जानता था कि वह यहाँ है।"

17याकूब डर गया। उसने कहा, "यह बहुत महान जगह है। यह तो परमेश्वर का घर है। यह तो स्वर्ग का द्वार है।"

18याकूब दूसरे दिन बहुत सवेरे उठा। याकूब ने उस शिला को उठाया और उसे किनारे से खड़ा कर दिया। तब उसने इस पर तेल चढ़ाया। इस तरह उसने इसे परमेश्वर का स्मरण स्तम्भ बनाया। 19उस जगह का नाम लूज था किन्तु याकूब ने उसे बेतेल नाम दिया।

20तब याकूब ने एक वचन दिया। उसने कहा, "यदि परमेश्वर मेरे साथ रहेगा और अगर परमेश्वर, जहाँ भी मैं जाता हूँ, वहाँ मेरी रक्षा करेगा, अगर परमेश्वर मुझे खाने को भोजन और पहनने को वस्त्र देगा। 21अगर मैं अपने पिता के पास शान्ति से लौटूँगा, यदि परमेश्वर ये सभी चीज़ें करेगा, तो यहोवा मेरा परमेश्वर होगा। 22इस जगह, जहाँ मैंने यह पत्थर खड़ा किया है, परमेश्वर का पवित्र स्थान होगा, और परमेश्वर जो कुछ तू मुझे देगा उसका दशमांश मैं तुझे दूँगा।"

याकूब राहेल से मिलता है

29 तब याकूब ने अपनी यात्रा जारी रखी। वह पूर्व के प्रदेश में गया। 2याकूब ने दृष्टि डाली, उसने मैदान में एक कुआँ देखा। वहाँ कुएँ के पास भेड़ों की तीन रेवड़े पड़ी हुई थीं। यही वह कुआँ था जहाँ ये भेड़े पानी पीती थी। वहाँ एक बड़े शिला से कुएँ का मुँह ढका था। 3जब सभी भेड़े वहाँ इकट्ठी हो जातीं तो गड़ेरिये चट्टान को कुएँ के मुँह पर से हटाते थे। तब सभी भेड़े उसका जल पी सकती थी। जब भेड़े पी चुकती थी तब गड़ेरिये शिला को फिर अपनी जगह पर रख देते थे। 4याकूब ने वहाँ गड़ेरियों से कहा, "भाईयों, आप लोग कहाँ के हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम हारान के हैं।"

5तब याकूब ने कहा, "क्या आप लोग नाहोर के पुत्र लाबान को जानते हैं?"

गड़ेरियों ने जवाब दिया, "हम लोग उसे जानते हैं।"

6तब याकूब ने पूछा, "वह कुशल से तो है?"

उन्होंने कहा, "वे ठीक हैं। सब कुछ बहुत अच्छा है। देखो, वह उसकी पुत्री राहेल अपनी भेड़ों के साथ आ रही है।"

7याकूब ने कहा, "देखो, अभी दिन है और सूरज डूबने में अभी काफी देर है। रात के लिए जानवरों को इकट्ठा करने का अभी समय नहीं है। इसलिए उन्हें पानी दो और उन्हें मैदान में लौट जाने दो।"

8लेकिन उस गड़ेरियें ने कहा, "हम लोग यह तब तक नहीं कर सकते जब तक सभी रेवड़े इकट्ठी नहीं हो जाती। तब हम लोग शिला को कुएँ से हटाएंगें और सभी भेड़े पानी पीएँगी।"

9याकूब जब तक गड़ेरियों से बातें कर रहा था तब राहेल अपने पिता की भेड़ों के साथ आई। (राहेल का काम भेड़ों की देखभाल करना था।) 10राहेल लाबान की पुत्री थी। लाबान, रिबका का भाई था, जो याकूब की माँ थी। जब याकूब ने राहेल को देखा तो जाकर शिला को हटाया और भेड़ों को पानी पिलाया। 11तब याकूब ने राहेल को चूमा और जोर से रोया। 12याकूब ने बताया कि मैं तुम्हारे पिता के खानदान से हूँ। उसने राहेल को बताया कि मैं रिबका का पुत्र हूँ। इसलिए राहेल घर को दौड़ गई और अपने पिता से यह सब कहा।

13लाबान ने अपनी बहन के पुत्र, याकूब के बारे में खबर सुनी। इसलिए लाबान उससे मिलने के लिए दौड़ा। लाबान उससे गले मिला, उसे चूमा और उसे अपने घर लाया।याकूब ने जो कुछ हुआ था, उसे लाबान को बताया।

14तब लाबान ने कहा, "आश्चर्य है, तुम हमारे खानदान से हो।" अत: याकूब लाबान के साथ एक महीने तक रुका।

लाबान याकूब के साथ धोखा करता है

15एक दिन लाबान ने याकूब से कहा, "यह ठीक नहीं है कि तुम हमारे यहाँ बिना वेतन में काम करते रहो। तुम रिश्तेदार हो, दास नहीं। मैं तुम्हें क्या वेतन दूँ?"

16लाबान की दो पुत्रियाँ थीं। बड़ी लिआ थी और छोटी राहेल।

17राहेल सुन्दर थी और लिआ की धुंधली आँखें थी।* 18याकूब राहेल से प्रेम करता था। याकूब ने लाबान से कहा, "यदि तुम मुझे अपनी पुत्री राहेल के साथ विवाह करने दो तो मैं तुम्हारे यहाँ सात साल तक काम कर सकता हूँ।"

19लाबान ने कहा, "यह उसके लिए अच्छा होगा कि किसी दूसरे के बजाय वह तुझसे विवाह करे। इसलिए मेरे साथ ठहरो।"

20इसलिए याकूब ठहरा और सात साल तक लाबान के लिए काम करता रहा। लेकिन यह समय उसे बहुत कम लगा क्योंकि वह राहेल से बहुत प्रेम करता था।

21सात साल के बाद उसने लाबान से कहा, "मुझे राहेल को दो जिससे मैं उससे विवाह करुँ। तुम्हारे यहाँ मेरे काम करने का समय पूरा हो गया।"

22इसलिए लाबान ने उस जगह के सभी लोगों को एक दावत दी। 23उस रात लाबान अपनी पुत्री लिआ को याकूब के पास लाया। याकूब और लिआ ने परस्पर शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया। 24(लाबान ने अपनी पुत्री को, सेविका के रूप में अपनी नौकरानी जिल्पा को दिया।) 25सवेरे याकूब ने जाना कि वह लिआ के साथ सोया था। याकूब ने लाबान से कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया है। मैंने तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम इसलिए किया कि मैं राहेल से विवाह कर सकूँ। तुमने मुझे धोखा क्यों दिया?"

26लाबान ने कहा, "हम लोग अपने देश में छोटी पुत्री का बड़ी पुत्री से पहले विवाह नहीं करने देते। 27किन्तु विवाह के उत्सव को पूरे सप्ताह मनाते रहो और मैं राहेल को भी तुम्हें विवाह के लिए दूँगा। परन्तु तुम्हें और सात वर्ष तक मेरी सेवा करनी पड़ेगी।"

28इसलिए याकूब ने यही किया और सप्ताह को बिताया। तब लाबान ने अपनी पुत्री राहेल को भी उसे उसकी पत्नी के रूप में दिया। 29(लाबान ने अपनी पुत्री राहेल की सेविका के रूप में अपनी नौकरानी बिल्हा को दिया।) 30इसलिए याकूब ने राहेल के साथ भी शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया और याकूब ने राहेल को लिआ से अधिक प्यार किया। याकूब ने लाबान के लिए और सात वर्ष तक काम किया।

याकूब का परिवार बढ़ता है

31यहोवा ने देखा कि याकूब लिआ से अधिक राहेल को प्यार करता है। इसलिए यहोवा ने लिआ को इस योग्य बनाया कि वह बच्चों को जन्म दे सके। लेकिन राहेल को कोई बच्चा नहीं हुआ।

32लिआ ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम रूबेन रखा। लिआ ने उसका यह नाम इसलिये रखा क्योंकि उसने कहा, "यहोवा ने मेरे कष्टों को देखा है। मेरा पति मुझको प्यार नहीं करता, इसलिए हो सकता है कि मेरा पति अब मुझसे प्यार करे।" 33लिआ फिर गर्भवती हुई और उसने दूसरे पुत्र को जन्म दिया।

लिआ ... थी यह यही कहने का एक विनम्र ढँग हो सकता है कि लिआ बहुत सुन्दर नहीं थी।

उसने इस पुत्र का नाम शिमोन रखा। लिआ ने कहा,
"यहोवा ने सुना कि मुझे प्यार नहीं मिलता, इसलिए
उसने मुझे यह पुत्र दिया।"
34लिआ फिर गर्भवती हुई और एक ओर पुत्र को
जन्म दिया। उसने पुत्र का नाम लेवी रखा। लिआ ने
कहा, "अब निश्चय ही मेरा पति मुझको प्यार करेगा।
मैंने उसे तीन पुत्र दिए हैं।"
35तब लिआ ने एक और पुत्र को जन्म दिया। उसने
इस लड़के का नाम यहूदा रखा। लिआ ने उसे यह नाम
दिया क्योंकि उसने कहा, "अब मैं यहोवा की स्तुति
करूँगी।" तब लिआ को बच्चा होना बन्द हो गया।

30 राहेल ने देखा कि वह याकूब के लिए किसी
बच्चे को जन्म नहीं दे रही है। राहेल अपनी
बहन लिआ से ईर्ष्या करने लगी। इसलिए राहेल ने
याकूब से कहा, "मुझे बच्चे दो, वरना मैं मर जाऊँगी।"
2याकूब राहेल पर क्रुद्ध हुआ। उसने कहा, "मैं
परमेश्वर नहीं हूँ। वह परमेश्वर ही है जिसने तुम्हें
बच्चों को जन्म देने से रोका है।"
3तब राहेल ने कहा, "तुम मेरी दासी बिल्हा को ले
सकते हो। उसके साथ सोओ और वह मेरे लिए बच्चे
को जन्म देगी। * तब मैं उसके द्वारा माँ बनूँगी।"
4इस प्रकार राहेल ने अपने पति याकूब के लिए
बिल्हा को दिया। याकूब ने बिल्हा के साथ शारीरिक
सम्बन्ध किया। 5बिल्हा गर्भवती हुई और याकूब के
लिए एक पुत्र को जन्म दिया।
6राहेल ने कहा, "परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली
है। उसने मुझे एक पुत्र देने का निश्चय किया।" इसलिए
राहेल ने इस पुत्र का नाम दान रखा।
7बिल्हा दूसरी बार गर्भवती हुई और उसने याकूब
को दूसरा पुत्र दिया। 8राहेल ने कहा, "अपनी बहन से
मुकाबले के लिए मैंने कठिन लड़ाई लड़ी है और मैंने
विजय पा ली है।" इसलिए उसने इस पुत्र का नाम
नप्ताली रखा। 9लिआ ने सोचा कि वह और अधिक
बच्चों को जन्म नहीं दे सकती। इसलिए उसने अपनी
दासी जिल्पा को याकूब के लिए दिया। 10तब जिल्पा ने
एक पुत्र को जन्म दिया। 11लिआ ने कहा, "मैं भाग्यवती
हूँ। अब स्त्रियाँ मुझे भाग्यवती कहेंगी।" इसलिए उसने
पुत्र का नाम गाद रखा। 12जिल्पा ने दूसरे पुत्र को जन्म
दिया। 13लिआ ने कहा, "मैं बहुत प्रसन्न हूँ।" इसलिए
उसने लड़के का नाम आशेर रखा।
14गेहूँ कटने के समय रूबेन खेतों में गया और कुछ
विशेष फूलों को देखा। रूबेन इन फूलों को अपनी माँ
लिआ के पास लाया। लेकिन राहेल ने लिआ से कहा,
"कृपाकर अपने पुत्र के फूलों में से कुछ मुझे दे दो।"
15लिआ ने उत्तर दिया, "तुमने तो मेरे पति को पहले
ही ले लिया है। अब तुम मेरे पुत्र के फूलों को भी ले
लेना चाहती हो।"
लेकिन राहेल ने उत्तर दिया, "यदि तुम अपने पुत्र के
फूल मुझे दोगी तो तुम आज रात याकूब के साथ सो
सकती हो।"
16उस रात याकूब खेतों से लौटा। लिआ ने उसे देखा
और उससे मिलने गई। उसने कहा, "आज रात तुम मेरे
साथ सोओगे। मैंने अपने पुत्र के फूलों को तुम्हारी
कीमत के रूप में दिया है।" इसलिए याकूब उस रात
लिआ के साथ सोया।
17तब परमेश्वर ने लिआ को फिर गर्भवती होने
दिया। उसने पाँचवें पुत्र को जन्म दिया। 18लिआ ने
कहा, "परमेश्वर ने मुझे इस बात का पुरस्कार दिया है
कि मैंने अपनी दासी को अपने पति को दिया।" इसलिए
लिआ ने अपने पुत्र का नाम इस्साकार रखा।
19लिआ फिर गर्भवती हुई और उसने छठे पुत्र को
जन्म दिया। 20लिआ ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे एक
सुन्दर भेंट दी है। अब निश्चय ही याकूब मुझे अपनाएगा,
क्योंकि मैंने उसे छ: बच्चे दिए हैं।"
इसलिए लिआ ने पुत्र का नाम जबूलून रखा। 21इसके
बाद लिआ ने एक पुत्री को जन्म दिया। उसने पुत्री का
नाम दीना रखा।
22तब परमेश्वर ने राहेल की प्रार्थना सुनी। परमेश्वर
ने राहेल के लिए बच्चे उत्पन्न करना संभव बनाया।
23-24राहेल गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म
दिया। राहेल ने कहा, "परमेश्वर ने मेरी लज्जा समाप्त
कर दी है और मुझे एक पुत्र दिया है।" इसलिए राहेल ने
अपने पुत्र का नाम यूसुफ रखा।

याकूब ने लाबान के साथ चाल चली

25यूसुफ के जन्म के बाद याकूब ने लाबान से कहा,
"अब मुझे अपने घर लौटने दो। 26मुझे मेरी पत्नियाँ
और बच्चे दो। मैंने चौदह वर्ष तक तुम्हारे लिए काम
करके उन्हें कमाया है। तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारी
अच्छी सेवा की है।"
27लाबान ने उससे कहा, "मुझे कुछ कहने दो। * मैं
अनुभव करता हूँ * कि यहोवा ने तुम्हारी वजह से मुझ
पर कृपा की है। 28बताओ कि तुम्हें मैं क्या दूँ और मैं
वही तुमको दूँगा।"
29याकूब ने उत्तर दिया, "तुम जानते हो, कि मैंने
तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम किया है। तुम्हारी रेवड़े

वह ... देगी शाब्दिक "वह मेरी गोद में ही बच्चे को जन्म देगी और उसके द्वारा मेरा भी पुत्र होगा।

मुझे कुछ कहने दो "यदि आपकी दृष्टि में मैं कृपापात्र हूँ।" कुछ कहने के लिए आज्ञा पाने का यह तरीका प्राय: प्रयोग में आता है।

मैं अनुभव करता हूँ "अनुमान किया" "दिव्य ज्ञान हुआ" या "निर्णय किया।"

बड़ी हैं और जब तक मैंने उनकी देखभाल की है, ठीक रही हैं। 30जब मैं आया था, तुम्हारे पास थोड़ी सी थीं। अब तुम्हारे पास बहुत अधिक है। हर बार जब मैंने तुम्हारे लिए कुछ किया है यहोवा ने तुम पर कृपा की है। अब मेरे लिए समय आ गया है कि मैं अपने लिए काम करुँ, यह मेरे लिए अपना घर बनाने का समय है।"

31लाबान ने पूछा, "तब मैं तुम्हें क्या दूँ?"

याकूब ने उत्तर दिया, "मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे कुछ दो। मैं केवल चाहता हूँ कि तुम जो मैंने काम किया है उसकी कीमत चुका दो। केवल यही एक काम करो। मैं लौटूँगा और तुम्हारी भेड़ों की देखभाल करूँगा। 32मुझे अपनी सभी रेवड़ों के बीच से जाने दो और दागदार या धारीदार हर एक मेमने को मुझे ले लेने दो और काली नई बकरी को ले लेने दो हर एक दागदार और धारीदार बकरी को ले लेने दो। यही मेरा वेतन होगा। 33भविष्य में तुम सरलता से देख लोगे कि मैं ईमानदार हूँ। तुम मेरी रेवड़ों को देखने आ सकते हो। यदि कोई बकरी दागदार नहीं होगी या कोई भेड़ काली नहीं होगी तो तुम जान लोगे कि मैंने उसे चुराया है।"

34लाबान ने उत्तर दिया, "मैं इसे स्वीकार करता हूँ। हम तुमको जो कुछ मागोगे देंगे।" 35लेकिन उस दिन लाबान ने दागदार बकरों को छिपा दिया और लाबान ने सभी दागदार या धारीदार बकरियों को छिपा दिया। लाबान ने सभी काली भेड़ों को भी छिपा दिया। लाबान ने अपने पुत्रों को इन भेड़ों की देखभाल करने को कहा। 36इसलिए पुत्रों ने सभी दागदार जानवरों को लिया और वे दूसरी जगह चले गए। उन्होंने तीन दिन तक यात्रा की। याकूब रूक गया और बचे हुए जानवरों की देखभाल करने लगा। किन्तु उनमें कोई जानवर दागदार या काला नहींथा।

37इसलिए याकूब ने चिनार, बादाम और अर्मोन पेड़ों की हरी शाखाएँ काटी। उसने उनकी छाल इस तरह उतारी कि शाखाएँ सफेद धारीदार बन गई। 38याकूब ने पानी पिलाने की जगह पर शाखाओं को रेवड़े के सामने रख दिया। जब जानवर पानी पीने आए तो उस जगह पर वे गाभिन होने के लिए मिले। 39तब बकरियाँ जब शाखाओं के सामने गाभिन होने के लिए मिली तो जो बच्चे पैदा हुए वे दागदार, धारीदार या काले हुए।

40याकूब ने दागदार और काले जानवरो को रेवड़ के अन्य जानवरों से अलग किया। सो इस प्रकार, याकूब ने अपने जानवरों को लाबान के जानवरों से अलग किया। उसने अपनी भेड़ों को लाबान की भेड़ों के पास नहीं भटकने दिया। 41जब कभी रेवड़ में स्वस्थ जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे तब याकूब उनकी आँखों के सामने शाखाएँ रख देता था, उन शाखाओं के करीब ही ये जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे। 42लेकिन जब कमजोर जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे। तो याकूब वहाँ शाखाएँ नहीं रखता था। इस प्रकार कमजोर जानवरों से पैदा बच्चे लाबान के थे। स्वस्थ जानवरों से पैदा बच्चे याकूब के थे। 43इस प्रकार याकूब बहुत धनी हो गया। उसके पास बड़ी रेवड़ें, बहुत से नौकर ऊँट और गधे थे।

विदा होने के समय याकूब भागता है

31 एक दिन याकूब ने लाबान के पुत्रों को बात करते सुना। उन्होंने कहा, "हम लोगों के पिता का सब कुछ याकूब ने ले लिया है। याकूब धनी हो गया है, और यह सारा धन उसने हमारे पिता से लिया है।" 2याकूब ने यह देखा कि लाबान पहले की तरह प्रेम भाव नहीं रखता है। 3परमेश्वर ने याकूब से कहा, "तुम अपने पूर्वजों के देश को वापस लौट जाओ जहाँ तुम पैदा हुए। मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

4इसलिए याकूब ने राहेल और लिआ से उस मैदान में मिलने के लिए कहा जहाँ वह बकरियों और भेड़ों की रेवड़े रखता था। 5याकूब ने राहेल और लिआ से कहा, "मैनें देखा है कि तुम्हारे पिता मुझ से क्रोधित हैं। उन का मेरे प्रति वह पहले जैसा प्रेम–भाव अब नहीं रहा। 6तुम दोनों जानती हो कि मैंने तुम लोगों के पिता के लिए उतनी कड़ी मेहनत की, जितनी कर सकता था। 7लेकिन तुम लोगों के पिता ने मुझे धोखा दिया। तुम्हारे पिता ने मेरा वेतन दस बार बदला है। लेकिन इस पूरे समय में परमेश्वर ने लाबान के सारे धोखों से मुझे बचाया है।

8"एक बार लाबान ने कहा, 'तुम दागदार सभी बकरियों को रख सकते हो। यह तुम्हारा वेतन होगा।' जब से उसने यह कहा तब से सभी जानवरों ने धारीदार बच्चे दिये। इस प्रकार वे सभी मेरे थे। लेकिन लाबान ने तब कहा, 'मैं दागदार बकरियों को रखूँगा। तुम सारी धारीदार बकरियाँ ले सकते हो। यही तुम्हारा वेतन होगा।' उसके इस तरह कहने के बाद सभी जानवरों ने धारीदार बच्चे दिये। 9इस प्रकार परमेश्वर ने जानवरों को तुम लोगों के पिता से ले लिया है और मुझे दे दिया है।

10"जिस समय जानवर गाभिन होने के लिए मिल रहे थे मैंने एक स्वप्न देखा। मैंने देखा कि केवल नर जानवर जो गाभिन करने के लिए मिल रहे थे धारीदार और दागदार थे। 11स्वप्न में परमेश्वर के दूत ने मुझ से बातें की। स्वर्गदूत ने कहा, 'याकूब!'

"मैंने उत्तर दिया 'हाँ।'

12"स्वर्गदूत कहा, 'देखो, केवल दागदार और धारीदार बकरियाँ ही गाभिन होने के लिए मिल रही हैं। मैं ऐसा कर रहा हूँ। मैंने वह सब बुरा देखा है जो लाबान तुम्हारे लिए करता है। मैं यह इसलिए कर रहा हूँ कि सभी नये बकरियों के बच्चे तुम्हारे हो जायें। 13मैं वही परमेश्वर

हूँ जिससे तुमने बेतेल में वाचा बाँधी थी। उस जगह तुमने एक स्मरण स्तम्भ बनाया था और जैतून के तेल से उसका अभिषेक किया था और उस जगह तुमने मुझसे एक प्रतिज्ञा की थी। अब, उठो और यह जगह छोड़ दो और वापस अपने जन्म भूमि को लौट जाओ।'"

14-15राहेल और लिआ ने याकूब को उत्तर दिया, "हम लोगों के पिता के पास मरने पर हम लोगों को देने के लिए कुछ नहीं है। उसने हम लोगों के साथ अजनबी जैसा व्यवहार किया है। उसने हम लोगों को और तुमको बेच दिया और इस प्रकार हम लोगों का सारा धन उसने खर्च कर दिया। 16परमेश्वर ने यह सारा धन हमारे पिता से ले लिया है और अब यह हमारा है। इसलिए तुम वही करो जो परमेश्वर ने करने के लिए कहा है।"

17इसलिए याकूब ने यात्रा की तैयारी की। उसने अपनी पत्नियों और पुत्रों को ऊँटों पर बैठाया। 18तब वे कनान की ओर लौटने लगे जहाँ उसका पिता रहता था। जानवरों की भी सभी रेवड़े, जो याकूब की थीं, उनके आगे चल रही थीं। वह वो सभी चीज़ें साथ ले जा रहा था जो उसने पद्दनराम में रहते हुए प्राप्त की थी। 19इस समय लाबान अपनी भेड़ों का ऊन काटने गया था। जब वह बाहर गया तब राहेल उसके घर में घुसी और अपने पिता के गृह देवताओं को चुरा लाई।

20याकूब ने अरामी लाबान को धोखा दिया। उसने लाबान को यह नहीं बताया कि वह वहाँ से जा रहा है। 21याकूब ने अपने परिवार और अपनी सभी चीज़ों को लिया तथा शीघ्रता से चल पड़ा। उन्होंने फरात नदी को पार किया और गिलाद पहाड़ की ओर यात्रा की।

22तीन दिन बाद लाबान को पता चला कि याकूब भाग गया। 23इसलिए लाबान ने अपने आदमियों को इकट्ठा किया और याकूब का पीछा करना आरम्भ किया। सात दिन बाद लाबान ने याकूब को गिलाद पहाड़ के पास पाया।24उस रात परमेश्वर लाबान के पास स्वप्न में प्रकट हुआ। परमेश्वर ने कहा, "याकूब से तुम जो कुछ कहो उसके एक-एक शब्द के लिए सावधान रहो।"

चुराए गए देवताओं की खोज

25दूसरे दिन सवेरे लाबान ने याकूब को जा पकड़ा। याकूब ने अपना तम्बू पहाड़ पर लगाया था। इसलिए लाबान और उसके आदमियों ने अपने तम्बू गिलाद पहाड़ पर लगाये।

26लाबान ने याकूब से कहा, "तुमने मुझे धोखा क्यों दिया? तुम मेरी पुत्रियों को ऐसे क्यों ले जा रहे हो मानो वे युद्ध में पकड़ी गई स्त्रियाँ हो? 27मुझसे बिना कहे तुम क्यों भागे? यदि तुमने कहा होता तो मैं तुम्हें दावत देता। उसमें बाजे के साथ नाचना और गाना होता। 28तुमने मुझे अपने नातियों को चूमने तक नहीं दिया और न ही पुत्रियों को विदा कहने दिया। तुमने यह करके बड़ी भारी मूर्खता की। 29तुम्हें सचमुच चोट पहुँचाने की शक्ति मुझमें है। किन्तु पिछली रात तुम्हारे पिता का परमेश्वर मेरे स्वप्न में आया। उसने मुझे चेतावनी दी कि मैं किसी प्रकार तुमको चोट न पहुँचाऊँ। 30मैं जानता हूँ कि तुम अपने घर लौटना चाहते हो। यही कारण है कि तुम वहाँ से चल पड़े हो। किन्तु तुमने मेरे घर से देवताओं को क्यों चुराया?"

31याकूब ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे बिना कहे चल पड़ा, क्योंकि मैं डरा हुआ था। मैंने सोचा कि तुम अपनी पुत्रियों को मुझसे ले लोगे। 32किन्तु मैंने तुम्हारे देवताओं को नहीं चुराया। यदि तुम यहाँ मेरे पास किसी व्यक्ति को, जो तुम्हारे देवताओं को चुरा लाया है, पाओ, तो वह मार दिया जाएगा। तुम्हारे लोग ही मेरे गवाह होंगे। तुम अपनी किसी भी चीज़ को यहाँ ढूँढ सकते हो। जो कुछ भी तुम्हारा हो, ले लो।" (याकूब को यह पता नहीं था कि राहेल ने लाबान के गृह देवता चुराये हैं।) 33इसलिए लाबान याकूब के तम्बू में गया और उसमें ढूँढा। उसने याकूब के तम्बू में ढूँढा और तब लिआ के तम्बू में भी। तब उसने उस तम्बू में ढूँढा जिसमें दोनो दासियाँ ठहरी थी। किन्तु उसने उसके घर से देवताओं को नहीं पाया। तब लाबान राहेल के तम्बू में गया। 34राहेल ने ऊँट की जीन में देवताओं को छिपा रखा था और वह उन्ही पर बैठी थी। लाबान ने पूरे तम्बू में ढूँढा किन्तु वह देवताओं को न खोज सका।

35और राहेल ने अपने पिता से कहा, "पिताजी, मुझ पर क्रुद्ध न हों। मैं आपके सामने खड़ी होने में असमर्थ हूँ। इस समय मेरा मासिकधर्म चल रहा है।" इसलिए लाबान ने पूरे तम्बू में ढूँढा, लेकिन वह उसके घर से देवताओं को नहीं पा सका।

36तब याकूब बहुत क्रुद्ध हुआ। याकूब ने कहा, "मैंने क्या बुरा किया है? मैंने कौन सा नियम तोड़ा है? मेरा पीछा करने और मुझे रोकने का अधिकार तुम्हें कैसे है? 37मेरा जो कुछ है उसमें तुमने ढूँढ लिया। तुमने ऐसी कोई चीज़ नहीं पाई जो तुम्हारी है। यदि तुमने कोई चीज़ पाई हो तो मुझे दिखाओ। उसे यहीं रखो जिससे हमारे साथी देख सकें। हमारे साथियों को तय करने दो कि हम दोनों में कौन ठीक है। 38मैंने तुम्हारे लिए बीस वर्ष तक काम किया है। इस पूरे समय में बच्चा देते समय कोई भी बच्चा या भेड़ नहीं मरे और मैंने कोई मेमना तुम्हारी रेवड़ में से नहीं खाया है। 39यदि कभी जंगली जानवरों ने कोई भेड़ मारी तो मैंने तुरन्त उसकी कीमत स्वयं दे दी। मैंने कभी मरे जानवर को तुम्हारे पास ले जाकर यह नहीं कहा कि इसमें मेरा दोष नहीं। किन्तु रात-दिन मुझे लूटा गया। 40दिन में सूरज मेरी ताकत छीनता था और रात को सर्दी मेरी आँखों से नींद चुरा

लेती थी। 41मैंने बीस वर्ष तक तुम्हारे लिए एक दास की तरह काम किया। पहले के चौदह वर्ष मैंने तुम्हारी दो पुत्रियों को पाने के लिये काम किया। बाद के छ: वर्ष मैंने तुम्हारे जानवरों को पाने के लिए काम किया और इस बीच तुमने मेरा वेतन दस बार बदला। 42लेकिन मेरे पूर्वजों के परमेश्वर इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का भय* मेरे साथ था। यदि परमेश्वर मेरे साथ नहीं होता तो तुम मुझे खाली हाथ भेज देते। किन्तु परमेश्वर ने मेरी परेशानियों को देखा। परमेश्वर ने मेरे किए काम को देखा और पिछली रात परमेश्वर ने प्रमाणित कर दिया कि मैं ठीक हूँ।"

याकूब और लाबान की सन्धि

43लाबान ने याकूब से कहा, "ये लड़कियाँ मेरी पुत्रियाँ हैं। उनके बच्चे मेरे हैं। ये जानवर मेरे हैं। जो कुछ भी तुम यहाँ देखते हो, मेरा है। लेकिन मैं अपनी पुत्रियों और उनके बच्चों को रखने के लिए कुछ नहीं कर सकता। 44इसलिए मैं तुमसे एक सन्धि करना चाहता हूँ। हम लोग पत्थरों का एक ढेर लगाएगें जो यह बताएगा कि हम लोग सन्धि कर चुके हैं।"

45इसलिए याकूब ने एक बड़ी चट्टान ढूँढी और उसे यह पता देने के लिए वहाँ रखा कि उसने सन्धि की है। 46उसने अपने पुरुषों को और अधिक चट्टानें ढूँढने और चट्टानों का एक ढेर लगाने को कहा। तब उन्होंने चट्टानों के समीप भोजन किया। 47लाबान ने उस जगह का नाम यज्र सहादूथा रखा। लेकिन याकूब ने उस जगह का नाम गिलियाद रखा।

48लाबान ने याकूब से कहा, "यह चट्टानों का ढेर हम दोनों को हमारी सन्धि की याद दिलाने में सहायता करेगा।" यह कारण है कि याकूब ने उस जगह को गिलियाद कहा।

49तब लाबान ने कहा, "यहोवा हम लोगों के एक दूसरे से अलग होने का साक्षी रहे।" इसलिए उस जगह का नाम मिजपा भी होगा।

50तब लाबान ने कहा, "यदि तुम मेरी पुत्रियों को चोट पहुँचाओगे तो याद रखो, परमेश्वर तुमको दण्ड देगा। यदि तुम दूसरी स्त्री से विवाह करोगे तो याद रखो, परमेश्वर तुमको देख रहा है। 51यहाँ ये चट्टानें हैं, जो हमारे बीच में रखी हैं और यह विशेष चट्टान है जो बताएगी कि हमने सन्धि की है। 52चट्टानों का ढेर तथा यह विशेष चट्टान हमें अपनी सन्धि को याद कराने में सहायता करेगा। तुमसे लड़ने के लिए मैं इन चट्टानों के पार कभी नहीं जाऊँगा और तुम मुझसे लड़ने के लिए इन चट्टानों से आगे मेरी ओर कभी नहीं आओगे।

53यदि हम लोग इस सन्धि को तोड़ें तो इब्राहीम का परमेश्वर, नाहोर का परमेश्वर और उनके पूर्वजों का परमेश्वर हम लोगों का न्याय करेगा।"

याकूब के पिता इसहाक ने परमेश्वर को "भय" नाम से पुकारा। इसलिए याकूब ने सन्धि के लिए उस नाम का प्रयोग किया। 54तब याकूब ने एक पशु को मारा और पहाड़ पर बलि के रूप में भेंट किया और उसने अपने पुरुषो को भोजन में सम्मिलित होने के लिए बुलाया। भोजन करने के बाद उन्होंने पहाड़ पर रात बिताई। 55दूसरे दिन सवेरे लाबान ने अपने नातियों को चूमा और पुत्रियों को विदा दी। उसने उन्हें आशीर्वाद दिया और घर लौट गया।

एसाव के साथ फिर मेल

32 याकूब ने भी वह जगह छोड़ी। जब वह यात्रा कर रहा था। उसने परमेश्वर के स्वर्गदूत को देखा। 2जब याकूब ने उन्हें देखा तो कहा, "यह परमेश्वर का पड़ाव है।" इसलिए याकूब ने उस जगह का नाम महनैम रखा।

3याकूब का भाई एसाव सेईर नामक प्रदेश में रहता था। यह एदोम का पहाड़ी प्रदेश था। याकूब ने एसाव के पास दूत भेजा। 4याकूब ने दूत से कहा, "मेरे स्वामी एसाव को यह खबर दो: 'तुम्हारा सेवक याकूब कहता है, मैं इन सारे वर्षों लाबान के साथ रहा हूँ। 5मेरे पास मवेशी, गधे, रेवड़े और बहुत से नौकर हैं। मैं इन्हें तुम्हारे पास भेजता हूँ और चाहता हूँ कि तुम हमें स्वीकार करो।'"

6दूत याकूब के पास लौटा और बोला, "हम तुम्हारे भाई एसाव के पास गए। वह तुमसे मिलने आ रहा है। उसके साथ चार सौ सशस्त्र वीर हैं।"

7उस सन्देश ने याकूब को डरा दिया। उसने अपने सभी साथीयों को दो दलों में बाँट दिया। उसने अपनी सभी रेवड़ों, मवेशियों के झुण्ड और ऊँटों को दो भागों में बाँटा। 8याकूब ने सोचा, "यदि एसाव आकर एक भाग को नष्ट करता है तो दूसरा भाग सकता है और बच सकता है।"

9याकूब ने कहा, "हे मेरे पूर्वज इब्राहीम के परमेश्वर। हे मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर। तूने मुझे अपने देश में लौटने और अपने परिवार में आने के लिए कहा। तूने कहा कि तू मेरी भलाई करेगा। 10तू मुझ पर बहुत दयालु रहा है। तूने मेरे लिए बहुत अच्छी चीज़ें की हैं। पहली बार मैंने यरदन नदी के पास यात्रा की, मेरे पास टहलने की छड़ी* के अतिरिक्त कुछ भी न था। किन्तु मेरे पास अब इतनी चीज़ें हैं कि मैं उनको पूरे दो दलों में बाँट सकूँ। 11तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि कृपा करके

इसहाक का भय परमेश्वर का ही एक नाम। इससे पता चलता है कि परमेश्वर बहुत शक्तिशाली है जिससे बहुत लोग डरते हैं।

छड़ी या गड़रिये की लाठी।

मुझे मेरे भाई एसाव से बचा। मैं उससे डरा हुआ हूँ। इसलिए कि वह आएगा और हम सभी को, यहाँ तक कि बच्चों सहित माताओं को भी जान से मार डालेगा। 12हे यहोवा, तूने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हारी भलाई करूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को बढ़ाऊँगा और तुम्हारे वंशजो को समुद्र के बालू के कणों के समान बढ़ा दूँगा। वे इतने अधिक होंगे कि गिने नहीं जा सकेंगे।'"

13याकूब रात को उस जगह ठहरा। याकूब ने कुछ चीजें एसाव को भेंट देने के लिए तैयार कीं। 14याकूब ने दो सौ बकरियाँ, बीस बकरे, दो सौ भेड़ें तथा बीस नर भेड़े लिए। 15याकूब ने तीस ऊँट और उनके बच्चें, चालीस गायें और दस बैल, बीस गदहियाँ और दस गदहे लिए। 16याकूब ने जानवरों का हर एक झुण्ड नौकरों को दिया। तब याकूब ने नौकरों से कहा, "सब जानवरों के हर झुण्ड को अलग कर लो। मेरे आगे–आगे चलो और हर झुण्ड के बीच कुछ दूरी रखो।" 17याकूब ने उन्हें आदेश दिया। जानवरों के पहले झुण्ड वाले नौकर से याकूब ने कहा, "मेरा भाई एसाव जब तुम्हारे पास आए और तुमसे पूछे, 'यह किसके जानवर हैं? तुम कहाँ जा रहे हो? तुम किसके नौकर हो? 18तब तुम उत्तर देना, "ये जानवर आपके सेवक याकूब के हैं। याकूब ने इन्हें अपने स्वामी एसाव को भेंट के रूप में भेजे है, और याकूब भी हम लोगों के पीछे आ रहा है।'"

19याकूब ने दूसरे नौकर, तीसरे नौकर, और सभी अन्य नौकरों को यही बात करने का आदेश दिया। उसने कहा, "जब तुम लोग एसाव से मिलो तो यही एक बात कहोगे। 20तुम लोग कहोगे, 'यह आपकी भेंट हैं, और आपका सेवक याकूब भी लोगों के पीछे आ रहा है।'"

याकूब ने सोचा, "यदि मैं भेंट के साथ इन पुरुषों को आगे भेजता हूँ तो यह हो सकता है कि एसाव मुझे क्षमा कर दे और मुझको स्वीकार कर ले।" 21इसलिए याकूब ने एसाव को भेंट भेजी। किन्तु याकूब उस रात अपने पड़ाव में ही ठहरा।

22बाद में उसी रात याकूब उठा और उस जगह को छोड़ दिया। याकूब ने अपनी दोनों पत्नियों, अपनी दोनों दासियों और अपने ग्यारह पुत्रों को साथ लिया। घाट पर जाकर याकूब ने यब्बोक नदी को पार किया। 23याकूब ने अपने परिवार को नदी के उस पार भेजा। तब याकूब ने अपनी सभी चीज़ें नदी के उस पार भेज दीं।

परमेश्वर से मल्ल युद्ध

24याकूब नदी को पार करने वाला अन्तिम व्यक्ति था। किन्तु पार करने से पहले जब तक वह अकेला ही था, एक व्यक्ति आया और उससे मल्ल युद्ध करने लगा। उस व्यक्ति ने उससे तब तक मल्ल युद्ध किया जब तक सूरज न निकला। 25व्यक्ति ने देखा कि वह याकूब को हरा नहीं सकता। इसलिए उसने याकूब के पैर को उसके कूल्हे के जोड़ पर छुआ। उस समय याकूब के कूल्हे का जोड़ अपने स्थान से हट गया।

26तब उस व्यक्ति ने याकूब से कहा, "मुझे छोड़ दो। सूरज ऊपर चढ़ रहा है।"

किन्तु याकूब ने कहा, "मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा। मुझको तुम्हें आशीर्वाद देना होगा।"

27और उस व्यक्ति ने उससे कहा, "तुम्हारा क्या नाम है?" और याकूब ने कहा, "मेरा नाम याकूब है।"

28तब व्यक्ति ने कहा, "तुम्हारा नाम याकूब नहीं रहेगा। अब तुम्हारा नाम इस्राएल होगा। मैं तुम्हें यह नाम इसलिए देता हूँ कि तुमने परमेश्वर के साथ और मनुष्यों के साथ युद्ध किया है और तुम हराए नहीं जा सके हो।"

29तब याकूब ने उससे पूछा, "कृपया मुझे अपना नाम बताएं।"

किन्तु उस व्यक्ति ने कहा, "तुम मेरा नाम क्यों पूछते हो?" उस समय उस व्यक्ति ने याकूब को आशीर्वाद दिया। 30इसलिए याकूब ने उस जगह का नाम पनीएल रखा। याकूब ने कहा, "इस जगह मैंने परमेश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन किया है। किन्तु मेरे जीवन की रक्षा हो गई।"

31जैसे ही वह पनीएल से गुजरा, सूरज निकल आया। याकूब अपने पैरों के कारण लंगड़ाकर चल रहा था। 32इसलिए आज भी इस्राएल के लोग पुट्ठे की माँसपेशी को नहीं खाते क्योंकि इसी माँसपेशी पर याकूब को चोट लगी थी।

याकूब अपनी वीरता दिखाता है

33 याकूब ने दृष्टि उठाई और एसाव को आते हुए देखा। एसाव आ रहा था और उसके साथ चार सौ पुरूष थे। याकूब ने अपने परिवार को चार समूहों मे बाँटा। लिआ और उसके बच्चे एक समूह में थे, राहेल और यूसुफ एक समूह में थे, दासी और उनके बच्चे दो समूहों में थे। 2याकूब ने दासियों और उनके बच्चों को आगे रखा। उसके बाद उनके पीछे लिआ और उसके बच्चों को रखा और याकूब ने राहेल और यूसुफ को सबके अन्त में रखा। 3याकूब स्वयं एसाव की ओर गया। इसलिए वह पहला व्यक्ति था जिसके पास एसाव आया। अपने भाई की ओर बढ़ते समय याकूब ने सात बार जमीन पर झुककर प्रणाम किया।

4जब एसाव ने याकूब को देखा, वह उससे मिलने को दौड़ पड़ा। एसाव ने याकूब को अपनी बाहों में भर लिया और छाती से लगाया। तब एसाव ने उसकी गर्दन को चूमा और दोनों आनन्द में रो पड़े। 5एसाव ने नजर उठाई और स्त्रियों तथा बच्चों को देखा। उसने कहा, "तुम्हारे साथ ये कौन लोग हैं?"

याकूब ने उत्तर दिया, "ये वे बच्चे हैं जो परमेश्वर ने मुझे दिए हैं। परमेश्वर मुझ पर दयालु रहा है।"

6तब दोनों दासियाँ अपने बच्चों के साथ एसाव के पास गए। उन्होंने उसको झुककर प्रणाम किया। 7तब लिआ अपने बच्चों के साथ एसाव के सामने गई और उसने प्रणाम किया और तब राहेल और यूसुफ एसाव के सामने गए और उन्होंने भी प्रणाम किया। 8एसाव ने कहा, "मैंने जिन सब लोगों को यहाँ आते समय देखा वे कौन थे? और वे सभी जानवर किसलिए थे?"

याकूब ने उत्तर दिया, "वे तुमको मेरी भेंट हैं जिससे तुम मुझे स्वीकार कर सको।"

9किन्तु एसाव ने कहा, "भाई, तुम्हें मुझको कोई भेंट नहीं देनी चाहिए क्योंकि मेरे पास सब कुछ बहुतायत से हैं।"

10याकूब ने कहा, "नहीं! मैं तुमसे विनती करता हूँ। यदि तुम सचमुच मुझे स्वीकार करते हो तो कृपया जो भेंटें देता हूँ तुम स्वीकार करो। मैं तुमको दुबारा देख कर बहुत प्रसन्न हूँ। यह तो परमेश्वर को देखने जैसा है। मैं यह देखकर बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने मुझे स्वीकार किया है। 11इसलिए मैं विनती करता हूँ कि जो भेंट मैं देता हूँ उसे भी स्वीकार करो। परमेश्वर मेरे ऊपर बहुत कृपालु रहा है। मेरे पास अपनी आवश्यकता से अधिक है।" इस प्रकार याकूब ने एसाव से भेंट स्वीकार करने को विनती की। इसलिए एसाव ने भेंट स्वीकार की।

12तब एसाव ने कहा, "अब तुम अपनी यात्रा जारी रख सकते हो। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

13किन्तु याकूब ने उससे कहा, "तुम यह जानते हो कि मेरे बच्चे अभी कमजोर हैं और मुझे अपनी रेवड़ों और उनके बच्चों की विशेष देख-रेख करनी चाहिए। यदि मैं उन्हें बहुत दूर एक दिन में चलने के लिए विवश करता हूँ तो सभी पशु मर जाएंगें। 14इसलिए तुम आगे चलो और मैं धीरे-धीरे तुम्हारे पीछे आऊँगा। मैं पशुओं और अन्य जानवरों की रक्षा के लिए काफी धीरे-धीरे बढ़ूँगा और मैं काफी धीरे-धीरे इसलिए चलूँगा कि मेरे बच्चे बहुत अधिक थक न जायें। मैं सेईर में तुमसे मिलूँगा।"

15इसलिए एसाव ने कहा, "तब मैं अपने कुछ साथियों को तुम्हारी सहायता के लिए छोड़ दूँगा।"

किन्तु याकूब ने कहा, "यह तुम्हारी विशेष दया है।" किन्तु ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।" 16इसलिए उस दिन एसाव सेईर की वापसी यात्रा पर चल पड़ा। 17किन्तु याकूब सुक्कोत को गया। वहाँ उसने अपने लिए एक घर बनाया और अपने मवेशियों के लिये छोटी पशुशालाऐं बनाई। इसी कारण इस जगह का नाम सुक्कोत रखा।

18बाद में याकूब ने अपना जो कुछ था उसे कनान प्रदेश से शकेम नगर को भेज दिया। याकूब ने नगर के समीप मैदान में अपना डेरा डाला। 19याकूब ने उस भूमि को शकेम के पिता हमोर के परिवार से खरीदा। याकूब ने चाँदी के सौ सिक्के दिए। 20याकूब ने परमेश्वर की उपासना के लिए वहाँ एक विशेष स्मरण स्तम्भ बनाया। याकूब ने जगह का नाम "एले, इस्राएल का परमेश्वर" रखा।

दीना के साथ कुकर्म

34 दीना लिआ और याकूब की पुत्री थी। एक दिन दीना उस प्रदेश की स्त्रियों को देखने के लिए बाहर गई। 2उस प्रदेश के राजा हमोर के पुत्र शकेम ने दीना को देखा। उसने उसे पकड़ लिया और अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध करने के लिए उसे विवश किया। 3शकेम दीना से प्रेम करने लगा और उससे विवाह करना चाहा। 4शकेम ने अपने पिता से कहा, "कृपया इस लड़की को प्राप्त करें जिससे मैं इसके साथ विवाह कर सकूँ।"

5याकूब ने यह जान लिया कि शकेम ने उसकी पुत्री के साथ ऐसी बुरी बात की है। किन्तु याकूब के सभी पुत्र अपने पशुओं के साथ मैदान में गए थे। इसलिए वे जब तक नहीं आए, याकूब ने कुछ नहीं किया। 6उस समय शकेम का पिता हमोर याकूब के साथ बात करने गया। 7खेतों में याकूब के पुत्रों ने जो कुछ हुआ था, उसकी खबर सुनी। जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत क्रुद्ध हुए। वे पागल से हो गए क्योंकि शकेम ने याकूब की पुत्री के साथ सोकर इस्राएल को कलंकित किया था। शकेम ने बहुत घिनौनी बात की थी। इसलिए सभी भाई खेतों से घर लौटे।

8किन्तु हमोर ने भाईयों से बात की। उसने कहा, "मेरा पुत्र शकेम दीना से बहुत प्रेम करता है। कृपया उसे इसके साथ विवाह करने दो। 9यह विवाह इस बात का प्रमाण होगा कि हम लोगों ने विशेष सन्धि की है। तब हमारे लोग तुम लोगों की स्त्रियों और तुम्हारे लोग हम लोगों की स्त्रियों के साथ विवाह कर सकते हैं। 10तुम लोग हमारे साथ एक प्रदेश में रह सकते हो। तुम भूमि के स्वामी बनने और यहाँ व्यापार करने के लिए स्वतन्त्र होगे।"

11शकेम ने भी याकूब और भाईयों से बात की। शकेम ने कहा, "कृपया मुझे स्वीकार करें और मैंने जो किया उसके लिए क्षमा करें। मुझे जो कुछ आप लोग करने को कहेंगे, करूँगा। 12मैं कोई भी भेंट* जो तुम चाहोगे, दूँगा, अगर तुम मुझे दीना के साथ विवाह करने दोगे।"

भेंट या दहेज। यहाँ इसका अर्थ वह धन है जो पत्नी को पाने के लिए दिया जाता है।

13याकूब के पुत्रों ने शकेम और उसके पिता से झूठ
बोलने का निश्चय किया। भाई अभी भी पागल हो रहे
थे क्योंकि शकेम ने उनकी बहन दीना के साथ ऐसा
घिनौना व्यवहार किया था। 14इसलिए भाईयों ने उससे
कहा, "हम लोग तुम्हें अपनी बहन के साथ विवाह नहीं
करने देंगे क्योंकि तुम्हारा खतना अभी नहीं हुआ है।
हमारी बहन का तुमसे विवाह करना अनुचित होगा।
15किन्तु हम लोग तुम्हें उसके साथ विवाह करने देंगे
यदि तुम यही एक काम करो कि तुम्हारे नगर के हर
पुरुष का खतना हम लोगों की तरह हो जाये। 16तब
तुम्हारे पुरुष हमारी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं और
हमारे पुरुष तुम्हारी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं। तब
हम एक ही लोग बन जाएंगे। 17यदि तुम खतना कराना
अस्वीकार करते हो तो हम लोग दीना को ले जाएंगे।"
18इस सन्धि ने हमोर और शकेम को बहुत प्रसन्न
किया। 19दीना के भाईयों ने जो कुछ कहा उसे करने में
शकेम बहुत प्रसन्न हुआ।

बदला

शकेम परिवार का सबसे अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति
था। 20हमोर और शकेम अपने नगर के सभास्थल को
गए। उन्होंने नगर के लोगों से बातें कीं और कहा
21"इब्राएल के ये लोग हमारे मित्र होना चाहते हैं। हम
लोग उन्हें अपने प्रदेश में रहने देना चाहते हैं और
अपने साथ शान्ति बनाए रखना चाहते हैं। हम लोगों के
पास अपने सभी लोगों के लिए काफी भूमि है। हम लोग
इनकी स्त्रियों के साथ विवाह करने को स्वतन्त्र हैं
और हम लोग अपनी स्त्रियाँ उनको विवाह के लिए देने
में प्रसन्न हैं। 22किन्तु एक बात है जिसे करने के लिए
हम सभी को सन्धि करनी होगी। 23यदि हम ऐसा करेगें
तो उनके पशुओं तथा जानवरों से हम धनी हो जाएंगे।
इसलिए हम लोग उनके साथ यह सन्धि करें और वे
यहाँ हम लोगों के साथ रहेंगे।" 24सभास्थल पर जिन
लोगों ने यह बात सुनी वे हमोर और शकेम के साथ
सहमत हो गए और उस समय हर एक पुरुष का खतना
कर दिया गया।

25तीन दिन बाद खतना कर दिए गए पुरुष अभी
जख्मी थे। याकूब के दो पुत्र शिमोन और लेवी जानते
थे कि इस समय लोग कमजोर होगें, इसलिए वे नगर
को गए और उन्होंने सभी पुरुषों को मार डाला। 26दीना
के भाई शिमोन और लेवी ने हमोर और उसके पुत्र
शकेम को मार डाला। उन्होंने दीना को शकेम के घर
से निकाल लिया और वे चले आए। 27याकूब के अन्य
पुत्र नगर में गए और उन्होंने वहाँ जो कुछ था, लूट
लिया। शकेम ने उनकी बहन के साथ जो कुछ किया
था, उससे वे तब तक क्रुद्ध थे। 28इसलिए भाईयों ने
उनके सभी जानवर ले लिए। उन्होंने उनके गधे तथा
नगर और खेतों में अन्य जो कुछ था सब से लिया।
29भाईयों ने उन लोगों का सब कुछ ले लिया। भाईयों ने
उनकी पत्नियों और बच्चों तक को ले लिया।

30किन्तु याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा, "तुम
लोगों ने मुझे बहुत कष्ट दिया है और इस प्रदेश के
निवासियों के मन में घृणा उत्पन्न करायी। सभी कनानी
और परिज्जी लोग हमारे विरुद्ध हो जाएंगे। यहाँ हम बहुत
थोड़े हैं। यदि इस प्रदेश के लोग हम लोगों के विरुद्ध
लड़ने के लिए इकट्ठे होंगे तो मैं नष्ट हो जाऊँगा और
हमारे साथ हमारे सभी लोग नष्ट हो जाएंगे।"
31किन्तु भाईयों ने उत्तर दिया, "क्या हम लोग उन
लोगों को अपनी बहन के साथ वेश्या जैसा व्यवहार
करने दें? नहीं हमारी बहन के साथ वैसा व्यवहार
करने वाले लोग बुरे थे।"

याकूब बेतेल में

35 परमेश्वर ने याकूब से कहा, "बेतेल नगर को
जाओ, वहाँ बस जाओ और वहाँ उपासना की
वेदी बनाओ। परमेश्वर को याद करो, वह जो तुम्हारे
सामने प्रकट हुआ था जब तुम अपने भाई एसाव से बच
कर भाग रहे थे। उस परमेश्वर की उपासना के लिए
वहाँ वेदी बनाओ।"
2इसलिए याकूब ने अपने परिवार और अपने सभी
सेवकों से कहा, "लकड़ी और धातु के बने जो झूठे
देवता तुम लोगों के पास हैं उन्हें नष्ट कर दो। अपने
को पवित्र करो। साफ कपड़े पहनो। 3हम लोग इस
जगह को छोड़ेंगे और बेतेल को जाएंगे। उस जगह में
अपने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनायेंगे। यह वही
परमेश्वर है जो मेरे कष्टों के समय में मेरी सहायता
की और जहाँ कहीं मैं गया वह मेरे साथ रहा।"
4इसलिए लोगों के पास जो झूठे देवता थे, उन सभी
को उन्होंने याकूब को दे दिया। उन्होंने अपने कानों में
पहनी हुई सभी बालियों को भी याकूब को दे दिया।
याकूब ने शकेम नाम के शहर के समीप एक सिन्दूर
के पेड़ के नीचे इन सभी चीज़ों को गाड़ दिया। 5याकूब
और उसके पुत्रों ने वह जगह छोड़ दी। उस क्षेत्र के लोग
उनका पीछा करना चाहते थे और उन्हें मार डालना
चाहते थे। किन्तु वे बहुत डर गए और उन्होंने याकूब
का पीछा नहीं किया। 6इसलिए याकूब और उसके लोग
लूज़ पहुँचे। अब लूज़ को बेतेल कहते हैं। यह कनान
प्रदेश में है। 7याकूब ने वहाँ एक वेदी बनायी। याकूब ने
उस जगह का नाम "एलबेतेल" रखा। याकूब ने इस
नाम को इसलिए चुना कि जब वह अपने भाई के यहाँ
से भाग रहा था, तब पहली बार परमेश्वर यहीं प्रकट
हुआ था। 8रिबका की धाय दबोरा यहाँ मरी थी, उन्होंने
बेतेल में सिन्दूर के पेड़ के नीचे उसे दफनाया। उन्होंने
उस स्थान का नाम अल्लोन बक्कूत रखा।

याकूब का नया नाम

9जब याकूब पद्दनराम से लौटा तब परमेश्वर फिर
उसके सामने प्रकट हुआ। परमेश्वर ने याकूब को
आशीर्वाद दिया। 10परमेश्वर ने याकूब से कहा, "तुम्हारा
नाम याकूब है। किन्तु मैं उस नाम को बदलूँगा। अब
तुम याकूब नहीं कहलाओगे। तुम्हारा नया नाम इस्राएल
होगा।" इसलिए इसके बाद याकूब का नाम इस्राएल
हुआ।
11परमेश्वर ने उससे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर
हूँ और तुमको मैं यह आशीर्वाद देता हूँ तुम्हारे बहुत
बच्चे हों और तुम एक महान राष्ट्र बन जाओ। तुम ऐसा
राष्ट्र बनोगे जिसका सम्मान अन्य सभी राष्ट्र करेंगे।
अन्य राष्ट्र और राजा तुमसे पैदा होंगे। 12मैंने इब्राहीम
और इसहाक को कुछ विशेष प्रदेश दिए थे। अब वह
प्रदेश मैं तुमको देता हूँ।" 13तब परमेश्वर ने वह जगह
छोड़ दी। 14-15याकूब ने इस स्थान पर एक विशेष
चट्टान खड़ी की। याकूब ने उस पर दाखरस और तेल
चढ़ाकर उस चट्टान को पवित्र बनाया। यह एक विशेष
स्थान था क्योंकि परमेश्वर ने वहाँ याकूब से बात की
थी और याकूब ने उस स्थान का नाम बेतेल रखा।

राहेल जन्म देते समय मरी

16याकूब और उसके दल ने बेतेल को छोड़ा। एप्राता
(बेतलेहेम) आने से ठीक पहले राहेल अपने बच्चे को
जन्म देने लगी। 17लेकिन राहेल को इस जन्म से बहुत
कष्ट होने लगा। उसे बहुत दर्द हो रहा था। राहेल की
धाय ने उसे देखा और कहा, "राहेल, डरो नहीं। तुम
एक और पुत्र को जन्म दे रही हो।"
18पुत्र को जन्म देते समय राहेल मर गई। मरने के
पहले राहेल ने बच्चे का नाम बेनोनी रखा। किन्तु
याकूब ने उसका नाम बिन्यामीन रखा। 19एप्राता को
आनेवाली सड़क पर राहेल को दफनाया गया। (एप्राता
बेतलेहेम है) 20और याकूब ने राहेल के सम्मान में
उसकी कब्र पर एक विशेष चट्टान रखी। वह विशेष
चट्टान वहाँ आज तक है। 21तब इस्राएल (याकूब) ने
अपनी यात्रा जारी रखी। उसने एदेर स्तम्भ के ठीक
दक्षिण में अपना डेरा डाला।
22इस्राएल वहाँ थोड़े समय ठहरा। जब वह वहाँ था
तब रूबेन इस्राएल की दासी बिल्हा के साथ सोया।
इस्राएल ने इस बारे में सुना और बहुत क्रुद्ध हुआ।

इस्राएल का परिवार

याकूब (इस्राएल) के बारह पुत्र थे।
23उसकी पत्नी लिआ से उसके छः पुत्र थे: रूबेन,
शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून।
24उसकी पत्नी राहेल से उसके दो पुत्र थे: यूसुफ,
बिन्यामीन।
25राहेल की दासी बिल्हा से उसके दो पुत्र थे: दान,
नप्ताली।
26और लिआ की दासी जिल्पा से उसके दो पुत्र थे:
गाद, आशेर।
ये याकूब (इस्राएल) के पुत्र हैं जो पद्दनराम में पैदा हुए
थे।
27ममरे के किर्यतर्बा (हेब्रोन) में याकूब अपने पिता
इसहाक के पास गया। यह वही जगह है जहाँ इब्राहीम
और इसहाक रह चुके थे। 28इसहाक एक सौ अस्सी
वर्ष का था। 29इसहाक बहुत वर्षों तक जीवित रहा। जब
वह मरा, वह बहुत बुढ़ा था। उसके पुत्र एसाव और
याकूब ने उसे वहीं दफनाया जहाँ उसका पिता को
दफनाया गया था।

एसाव का परिवार

36 एसाव ने कनान देश की पुत्रियों से विवाह
किया। यह एसाव के परिवार की एक सूची
है। (जो एदोम भी कहा जाता है।) 2एसाव की पत्नियाँ
थीं: आदा, हित्ती एलोन की पुत्री। ओहोलीबामा हिव्वी
सिबोन की नतिनी और अना की पुत्री। 3बासमत इश्माएल
की पुत्री और नबायोत की बहन। 4आदा ने एसाव को
एक पुत्र एलीपज दिया। बासमत को रूएल नाम पुत्र
हुआ। 5ओहोलीबामा ने एसाव को तीन पुत्र दिए यूश,
यालाम और कोरह ये एसाव के पुत्र थे। ये कनान प्रदेश
में पैदा हुए थे।
6-8याकूब और एसाव के परिवार अब बहुत बढ़ गये
और कनान में इस बड़े परिवार का खान-पान जुटा
पाना कठिन हो गया। इसलिए एसाव ने कनान छोड़
दिया और अपने भाई याकूब से दूर दूसरे प्रदेश में चला
गया। एसाव अपनी सभी चीज़ों को अपने साथ लाया।
कनान में रहते हुए उसने ये चीज़ें प्राप्त की थीं। इसलिए
एसाव अपने साथ अपनी पत्नियों, पुत्रों, पुत्रियों सभी
सेवकों, पशु, और अन्य जानवरों को लाया। एसाव और
याकूब के परिवार इतने बड़े हो रहे थे कि उनका एक
स्थान पर रहना कठिन था। वह भूमि दोनों परिवारों के
पोषण के लिए काफी बड़ी नहीं थी। उनके पास अत्याधिक
पशु थे। एसाव पहाड़ी प्रदेश सेईर की ओर बढ़ा। (एसाव
का नाम एदोम भी है।)
9एसाव एदोम के लोगों का आदि पिता है। सेईर एदोम
के पहाड़ी प्रदेश में रहने वाले एसाव के परिवार के ये
नाम हैं।
10एसाव के पुत्र थे: एलीपज, आदा और एसाव का
पुत्र। रूएल बासमत और एसाव का पुत्र।
11एलीपज के पाँच पुत्र थे: तेमान, ओमार, सपो,
गाताम, कनज।
12एलीपज की एक तिम्ना नामक दासी भी थी। तिम्ना
और एलीपज ने अमालेक को जन्म दिया।

13रुएल के चार पुत्र थे : नहत, जेरह, शम्मा, मिज्जा।
ये एसाव की पत्नी बासमत से उसके पौत्र हैं।
14एसाव की तीसरी पत्नी अना की पुत्री ओहोलीबामा
थी। अना सिबोन का पुत्र था। एसाव और ओहोलीबामा
के पुत्र थे: यूश, यालाम, कोरह।
15एसाव से चलने वाले वंश ये ही हैं। एसाव का पहला
पुत्र एलीपज था। एलीपज से आए: तेमान, ओमार, सपो,
कनज, 16कोरह, गाताम, अमालेक। ये सभी परिवार
एसाव की पत्नी आदा से आए।
17एसाव का पुत्र रुएल इन परिवारों का आदि पिता
था: नहत, जेरह, शम्मा, मिज्जा। ये सभी परिवार एसाव
की पत्नी बासमत से आए।
18अना की पुत्री एसाव की पत्नी ओहोलीबामा ने
यूश, यालाम और कोरह को जन्म दिया। ये तीनों
अपने-अपने परिवारों के पिता थे। 19ये सभी परिवार
एसाव से चले।
20एसाव के पहले एदोम में सईर नामक एक होरी
व्यक्ति रहता था। सेईर के पुत्र ये हैं: लोतान, शोबाल,
शिबोन, अना 21दीशोन, एसेर, दिशान। ये पुत्र अपने
परिवारों के मुखिया थे।
22लोतान, होरी, हेमाम का पिता था। (तिम्ना लोतान
की बहन थी।) 23शोबाल, आल्वान, मानहत एबल शपो,
ओनाम का पिता था।
24शिबोन के दो पुत्र थे: अय्या, अना, (अना वह
व्यक्ति है जिसने अपने पिता के गधों की देखभाल करते
समय पहाड़ों में गर्म पानी का सोता ढूँढा।)
25अना, दीशोन और ओहोलीबामा का पिता था।
26दीशोन के चार पुत्र थे: हेमदान, एश्बान, यित्रान,
करान।
27एसेर के तीन पुत्र थे: बिल्हान, जावान, अकान।
28दीशान के दो पुत्र थे: ऊस और अरान।
29ये होरी परिवारों के मुखियाओं के नाम हैं। लोतान,
शोबाल, शिबोन, अना। 30दिशोन, एसेर, दीशोन। ये व्यक्ति
उन परिवारों के मुखिया थे जो सेईर (एदोम) प्रदेश में
रहते थे। 31उस समय एदोम में कई राजा थे। इस्राएल में
राजाओं के होने के बहुत पहले ही एदोम में राजा थे।
32बोर का पुत्र बेला एदोम में शासन करने वाला राजा
था। वह दिन्हाबा नगर पर शासन करता था। 33जब
बेला मरा तो योबाब राजा हुआ। योबाब बोस्रा से जेरह
का पुत्र था। 34जब योबाब मरा, हूशाम ने शासन किया।
हूशाम तेमानी लोगों के देश का था। 35जब हूशाम मरा,
हदद ने उस क्षेत्र पर शासन किया। हदद बदद का पुत्र
था। (हदद वह व्यक्ति था जिसने मिद्यानी लोगों को
मोआब देश में हराया था।) हदद अबीत नगर का था।
36जब हदद मरा, सम्ला ने उस प्रदेश पर शासन किया।
सम्ला मस्रेका का था। 37जब सम्ला मरा, शाऊल ने उस
क्षेत्र पर शासन किया। शाऊल फरात नदी के किनारे
रहोबोत का था। 38जब शाऊल मरा, बाल्हानान ने उस
देश पर शासन किया। बाल्हानान अकबोर का पुत्र था।
39जब बाल्हानान मरा, हदर ने उस देश पर शासन
किया। हदर पाऊ नगर का था। मत्रेद की पुत्री हदर की
पत्नी का नाम महेतबेल था। मत्रेद का पिता मेजाहब
था।
40-43एदोमी परिवारों, तिम्ना, अल्बा, यतेत,
ओहोलीबामा, एला, पीपोन, कनज, तेमान, मिबसार,
मग्दीएल और ईराम आदि का पिता एसाव था। हर एक
परिवार एक ऐसे प्रदेश में रहता था जिसका नाम वही
था जो उनका पारिवारिक नाम था।

स्वप्नदृष्टा यूसुफ

37 याकूब ठहर गया और कनान प्रदेश में रहने
लगा। यह वही प्रदेश है जहाँ उसका पिता
आकर बस गया था। 2याकूब के परिवार की यही कथा
है। यूसुफ एक सत्रह वर्ष का युवक था। उसका काम
भेड़ बकरियों कि देख भाल करना था। यूसुफ यह
काम अपने भाईयों यानि कि बिल्हा और जिल्पा के
पुत्रों के साथ करता था। (बिल्हा और जिल्पा उस के
पिता की पत्नियाँ थी।) 3यूसुफ अपने पिता को अपने
भाईयों की बुरी बातें बताया करता था। यूसुफ उस समय
उत्पन्न हुआ जब उसका पिता इस्राएल (याकूब) बहुत
बुढ़ा था। इसलिए इस्राएल (याकूब), यूसुफ को अपने
अन्य पुत्रों से अधिक प्यार करता था। याकूब ने अपने
पुत्र को एक विशेष अंगरखा दिया। यह अंगरखा लम्बा
और बहुत सुन्दर था। 4यूसुफ के भाईयों ने देखा कि
उनका पिता उनकी अपेक्षा यूसुफ को अधिक प्यार
करता है। वे इसी कारण अपने भाई से घृणा करते थे।
वे यूसुफ से अच्छी तरह बात नहीं करते थे।
5एक बार यूसुफ ने एक विशेष सपना देखा। बाद में
यूसुफ ने अपने इस सपने के बारे मे अपने भाईयों को
बताया। इसके बाद उसके भाई पहले से भी अधिक
उससे घृणा करने लगे।
6यूसुफ ने कहा, "मैंने एक सपना देखा। 7हम सभी
खेत में काम कर रहे थे। हम लोग गेहूँ को एक साथ
गट्ठे बाँध रहे थे। मेरा गट्ठा खड़ा हुआ और तुम लोगों
के गट्ठों ने मेरे गट्ठें के चारों ओर घेरा बनाया। तब
तुम्हारे सभी गट्ठों ने मेरे गट्ठे को झुककर प्रणाम
किया।"
8उसके भाईयों ने कहा, "क्या, तुम सोचते हो कि
इसका अर्थ है कि तुम राजा बनोगे और हम लोगों पर
शासन करोगे?" उसके भाईयों ने यूसुफ से अब और
अधिक घृणा करनी आरम्भ की क्योंकि उसने उनके
बारे में सपना देखा था।
9तब यूसुफ ने दूसरा सपना देखा। यूसुफ ने अपने
भाईयों से इस सपने के बारे में बताया। यूसुफ ने कहा,

"मैंने दूसरा सपना देखा है। मैंने सूरज, चाँद और ग्यारह नक्षत्रों को अपने को प्रणाम करते देखा।"

10यूसुफ ने अपने पिता को भी इस सपने के बारे में बताया। किन्तु उसके पिता ने इसकी आलोचना की। उसके पिता ने कहा, "यह किस प्रकार का सपना है? क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारी माँ, तुम्हारे भाई और हम तुमको प्रणाम करेंगे?" 11यूसुफ के भाई उससे लगातार इर्षा करते रहे। किन्तु यूसुफ के पिता ने इन सभी बातों के बारे में बहुत गहराई से विचार किया और सोचा कि उनका अर्थ क्या होगा? 12एक दिन यूसुफ के भाई अपने पिता की भेड़ों की देखभाल के लिए शकेम गए। 13याकूब ने यूसुफ से कहा, "शकेम जाओ। तुम्हारे भाई मेरी भेड़ों के साथ वहाँ हैं।"

यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं जाऊँगा।"

14यूसुफ के पिता ने कहा, "जाओ और देखो कि तुम्हारे भाई सुरक्षित हैं। लौटकर आओ और बताओ कि क्या मेरी भेड़ें ठीक हैं?" इस प्रकार यूसुफ के पिता ने उसे हेब्रोन की घाटी से शकेम को भेजा।

15शकेम में यूसुफ खो गया। एक व्यक्ति ने उसे खेतों में भटकते हुए पाया। उस व्यक्ति ने कहा, "तुम क्या खोज रहे हो?" 16यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं अपने भाईयों को खोज रहा हूँ। क्या तुम बता सकते हो कि वे अपनी भेड़ों के साथ कहाँ हैं?"

17व्यक्ति ने उत्तर दिया, "वे पहले ही चले गए हैं। मैंने उन्हें कहते हुए सुना कि वे दोतान को जा रहें हैं।" इसलिए यूसुफ अपने भाईयों के पीछे गया और उसने उन्हें दोतान में पाया।

यूसुफ दासता के लिए बेचा गया

18यूसुफ के भाईयों ने बहुत दूर से उसे आते देखा। उन्होंने उसे मार डालने की योजना बनाने का निश्चय किया। 19भाईयों ने एक दूसरे से कहा, "यह सपना देखने वाला यूसुफ आ रहा है। 20मौका मिले हम लोग उसे मार डाले हम उसका शरीर सूखे कुओं में से किसी एक में फेंक सकते हैं। हम अपने पिता से कह सकते हैं कि एक जंगली जानवर ने उसे मार डाला। तब हम लोग उसे दिखाएँगे कि उसके सपने व्यर्थ हैं।"

21किन्तु रूबेन यूसुफ को बचाना चाहता था। रूबेन ने कहा, "हम लोग उसे मारे नहीं। 22हम लोग उसे चोट पहुँचाए बिना एक कुएँ में डाल सकते हैं।" रूबेन ने यूसुफ को बचाने और उसके पिता के पास भेजने की योजना बनाई। 23यूसुफ अपने भाईयों के पास आया। उन्होंने उस पर आक्रमण किया और उसके लम्बे सुन्दर अंगरखा को फाड़ डाला। 24तब उन्होंने उसे खाली सूखे कुएँ में फेंक दिया।

25यूसुफ कुएँ में था, उसके भाई भोजन करने बैठे। तब उन्होंने नजर उठाई और व्यापारियों का एक दल को देखा। जो गिलाद से मिस्र की यात्रा पर थे। उनके ऊँट कई प्रकार के मसाले और धन ले जा रहे थे।

26इसलिए यहूदा ने अपने भाईयों से कहा, अगर हम लोग अपने भाई को मार देंगे और उसकी मृत्यु को छिपाएंगे तो उससे हमें क्या लाभ होगा? 27हम लोगों को अधिक लाभ तब होगा जब हम उसे इन व्यापारियों के हाथ बेच देंगे। अन्य भाई मान गए। 28जब मिद्यानी व्यापारी पास आए, भाईयों ने यूसुफ को कुएँ से बाहर निकाला। उन्होंने बीस चाँदी के टुकड़ों में उसे व्यापारियों को बेच दिया। व्यापारी उसे मिस्र ले गए।

29इस पूरे समय रूबेन भाईयों के साथ वहाँ नहीं था। वह नहीं जानता था कि उन्होंने यूसुफ को बेच दिया था। जब रूबेन कुएँ पर लौटकर आया तो उसने देखा कि यूसुफ वहाँ नहीं है। रूबेन बहुत अधिक दु:खी हुआ। उसने अपने कपड़ों को फाड़ा। 30रूबेन भाईयों के पास गया और उसने उनसे कहा, "लड़का कुएँ पर नहीं है। मैं क्या करूँ?" 31भाईयों ने एक बकरी को मारा और उसके खून को यूसुफ के सुन्दर अंगरखे पर डाला। 32तब भाईयों ने उस अंगरखे को अपने पिता को दिखाया और भाईयों ने कहा, "हमे यह अंगरखा मिला है, क्या यह यूसुफ का अंगरखा है?"

33पिता ने अंगरखे को देखा और पहचाना कि यह यूसुफ का है। पिता ने कहा, "हाँ, यह उसी का है। संभव है उसे किसी जंगली जानवर ने मार डाला हो। मेरे पुत्र यूसुफ को कोई जंगली जानवर खा गया।" 34याकूब अपने पुत्र के लिए इतना दु:खी हुआ कि उसने अपने कपड़े फाड़ डाले। तब याकूब ने विशेष वस्त्र पहने जो उसके शोक के प्रतीक थे। याकूब लम्बे समय तक अपने पुत्र के शोक में पड़ा रहा। 35याकूब के सभी पुत्रों, पुत्रियों ने उसे धीरज बँधाने का प्रयत्न किया। किन्तु याकूब कभी धीरज न धर सका। याकूब ने कहा, "मैं मरने के दिन तक अपने पुत्र यूसुफ के शोक में डूबा रहूँगा।"

36उन मिद्यानी व्यापारियों ने जिन्होनें यूसुफ को खरीदा था, बाद में उसे मिस्र में बेच दिया। उन्होंने फ़िरौन के अंगरक्षकों के सेनापति पोतीपर के हाथ उसे बेचा।

यहूदा और तामार

38 उन्हीं दिनों यहूदा ने अपने भाइयों को छोड़ दिया और हीरा नामक व्यक्ति के साथ रहने चला गया। हीरा अदुल्लाम नगर का था। 2यहूदा एक कनानी स्त्री से वहाँ मिला और उसने उससे विवाह कर लिया। स्त्री के पिता का नाम शूआ था। 3कनानी स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम एर रखा। 4बाद में उसने दूसरे पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने लड़के का नाम ओनान रखा। 5बाद में उसे अन्य पुत्र शेला

नाम का हुआ। यहूदा तीसरे बच्चे के जन्म के समय कजीब में रहता था।

6यहूदा ने अपने पहले पुत्र एर के लिए पत्नी के रूप में एक स्त्री को चुना। स्त्री का नाम तामार था। 7किन्तु एर ने बहुत सी बुरी बातें की। यहोवा उससे प्रसन्न नहीं था। इसलिए यहोवा ने उसे मार डाला। 8तब यहूदा ने एर के भाई ओनान से कहा, "जाओ और मृत भाई की पत्नी के साथ सोओ।"* तुम उसके पति के समान बनो। अगर बच्चे होंगे तो वे तुम्हारे भाई एर के होंगे।"

9ओनान जानता था कि इस जोड़े से पैदा बच्चे उसके नही होंगे। ओनान ने तामार के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। किन्तु उसने उसे अपना गर्भधारण करने नहीं दिया। 10इससे यहोवा क्रुद्ध हुआ। इसलिए यहोवा ने ओनान को भी मार डाला। 11तब यहूदा ने अपनी पुत्रवधू तामार से कहा, "अपने पिता के घर लौट जाओ। वहीं रहो और तब तक विवाह न करो जब तक मेरा छोटा पुत्र शेला बड़ा न हो जाए।" यहूदा को डर था कि शेला भी अपने भाईयों की तरह मार डाला जाएगा। तामार अपने पिता के घर लौट गई।

12बाद में शुआ की पुत्री यहूदा की पत्नी मर गई। यहूदा अपने शोक के समय के बाद अदुल्लाम के अपने मित्र हीरा के साथ तिम्नाथ गया। यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन काटने तिम्नाथ गया। 13तामार को यह मालुम हुआ कि उसके ससुर यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन काटने तिम्नाथ को जा रहा है। 14तामार सदा ऐसे वस्त्र पहनती थी जिससे मालुम हो कि वह विधवा है। इसलिए उसने कुछ अन्य वस्त्र पहने और मुँह को पर्दे में ढक लिया। तब वह तिम्नाथ नगर के पास एनैम को जाने वाली सड़क के किनारे बैठ गई। तामार जानती थी कि यहूदा का छोटा पुत्र शेला अब बड़ा हो गया है। लेकिन यहूदा उससे उसके विवाह की कोई योजना नहीं बना रहा था।

15यहूदा ने उसी सड़क से यात्रा की। उसने उसे देखा, किन्तु सोचा कि वह वेश्या है। (उसका मुख वेश्या की तरह ढका हुआ था।)

16इसलिए यहूदा उसके पास गया और बोला, "मुझे अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध करने दो।" (यहूदा नहीं जानता था कि वह उसकी पुत्र वधू तामार है।) तामार बोली, "तुम मुझे कितना दोगे?"

17यहूदा ने उत्तर दिया, "मैं अपनी रेवड़ से तुम्हें एक नयी बकरी भेजूँगा।" उसने उत्तर दिया, "मैं इसे स्वीकार करती हूँ किन्तु पहले तुम मुझे कुछ रखने को दो जब तक तुम बकरी नहीं भेजते।"

18यहूदा ने पूछा, "मैं बकरी भेजूँगा इसके प्रमाण के लिए तुम मुझ से क्या लेना चाहोगी?"

तामार ने उत्तर दिया, "मुझे विशेष मुहर और इसकी रस्सी,* जो तुम अपने पत्रों के लिए प्रयोग करते हो, दो और मुझे अपने टहलने की छड़ी दो।" यहूदा ने ये चीजें उसे दे दी। तब यहूदा और तामार ने शारीरिक सम्बन्ध किया और तामार गर्भवती हो गई। 19तामार घर गई और मुख को ढकने वाले पर्दे को हटा दिया। तब उसने फिर अपने को विधवा बताने वाले विशेष वस्त्र पहन लिए।

20यहूदा ने अपने मित्र हीरा को तामार के घर उसको वचन दी हुई बकरी देने के लिए भेजा। यहूदा ने हीरा से विशेष मुहर तथा टहलने की छड़ी भी उससे लेने के लिए कहा। किन्तु हीरा उसका पता न लगा सका। 21हीरा ने एनैम नगर के कुछ लोगों से पूछा, "सड़क के किनारे जो वेश्या थी वह कहाँ है?"

लोगों ने कहा, "यहाँ कभी कोई वेश्या नहीं थी।"

22इसलिए यहूदा का मित्र यहूदा के पास लौट गया और उससे कहा, "मैं उस स्त्री का पता नहीं लगा सका। जो लोग उस स्थान पर रहते हैं उन्होंने बताया कि वहाँ कभी कोई वेश्या नहीं थी।"

23इसलिए यहूदा ने कहा, "उसे वे चीज़ें रखने दो। मैं नहीं चाहता कि लोग हम पर हँसे। मैंने उसे बकरी देनी चाही, किन्तु हम उसका पता नहीं लगा सके यही पर्याप्त है।"

तामार गर्भवती है

24लगभग तीन महीने बाद किसी ने यहूदा से कहा, "तुम्हारी पुत्रवधु तामार ने वेश्या की तरह पाप किया है और अब वह गर्भवती है।"

तब यहूदा ने कहा, "उसे बाहर निकालो और मार डालो। उसके शरीर को जला दो।"

25उसके आदमी तामार को मारने गए। किन्तु तामार ने अपने ससुर के पास सन्देश भेजा। तामार ने कहा, "जिस पुरुष ने मुझे गर्भवती किया है उसी की ये चीज़ें हैं। तब उसने उसे विशेष मुहर बाजूबन्द और टहलने की छड़ी दिखाई। इन चीज़ों को देखो। ये किसकी है? यह किस की विशेष मुहर बाजूबन्द और रस्सी है? किसकी यह टहलने की छड़ी है?"

26यहूदा ने उन चीज़ों को पहचाना और कहा, "यह ठीक कहती है। मैं गलती पर था। मैंने अपने वचन के अनुसार अपने पुत्र शेला को इसे नहीं दिया" और यहूदा उसके साथ फिर नहीं सोया।

जाओं ... सोओ इस्राएल में यह रिवाज था कि यदि कोई व्यक्ति बिना सन्तान के मर जाता था तो विधवा को भाईयों में से कोई एक रख लेता था। यदि कोई बच्चा पैदा होता था तो वह मृत व्यक्ति का बच्चा समझा जाता था।

विशेष ... रस्सी मुहर रबर की मुहर की तरह प्रयुक्त होती थी। लोग वाचा लिखते थे, उसकी तय करते थे, उसे रस्सी से बाँधते थे, रस्सी पर मोम या मिट्टी लगाते थे और हस्ताक्षर के रूप में मुहर लगाते थे।

27तामार के बच्चा देने का समय आया और उन्होंने
देखा कि वह जुड़वे बच्चों को जन्म देगी। 28जिस समय
वह जन्म दे रही थी एक बच्चे ने बाहर हाथ निकाला।
धाय ने हाथ पर लाल धागा बाँधा और कहा, "यह बच्चा
पहले पैदा हुआ।" 29लेकिन उस बच्चे ने अपना हाथ
वापस भीतर खींच लिया। तब दूसरा बच्चा पहले पैदा
हुआ। तब धाय ने कहा, "तुम ही पहले बाहर निकलने
में समर्थ हुए।" इसलिए उन्होंने उसका नाम पेरेस रखा।
(इस नाम का अर्थ "खुल पड़ना" या "फट पड़ना" है।)
30इसके बाद दूसरा बच्चा उत्पन्न हुआ। यह बच्चा हाथ
पर लाल धागा था। उन्होंने उसका नाम जेरह रखा।

यूसुफ मिस्री पोतीपर को बेचा गया

39 व्यापारी जिसने यूसुफ को खरीदा वह उसे
मिस्र ले गए। उन्होंने फ़िरौन के अंगरक्षक के
नायक के हाथ उसे बेचा। 2किन्तु यहोवा ने यूसुफ की
सहायता की। यूसुफ एक सफल व्यक्ति बन गया। यूसुफ
अपने मिस्री स्वामी पोतीपर के घर में रहा।

3पोतीपर ने देखा कि यहोवा यूसुफ के साथ है। पोतीपर
ने यह भी देखा कि यहोवा जो कुछ यूसुफ करता है,
उसमें उसे सफल बनाने में सहायक है। 4इसलिए पोतीपर
यूसुफ को पाकर बहुत प्रसन्न था। पोतीपर ने उसे
अपने लिए काम करने तथा घर के प्रबन्ध में सहायता
करने में लगाया। पोतीपर की अपनी हर एक चीज़ का
यूसुफ अधिकारी था। 5जब यूसुफ घर का अधिकारी
बना दिया गया तब यहोवा ने उस घर और पोतीपर की
हर एक चीज़ को आशीर्वाद दिया। यहोवा ने यह यूसुफ
के कारण किया और यहोवा ने पोतीपर के खेतों में
उगने वाली हर चीज़ को आशीर्वाद दिया। 6इसलिए
पोतीपर ने घर की हर चीज़ की जिम्मेदारी यूसुफ को
दी। पोतीपर किसी चीज़ की चिन्ता नहीं करता था वह
जो भोजन करता था एक मात्र उसकी उसे चिन्ता थी।

यूसुफ पोतीपर की पत्नी को मना करता है

यूसुफ बहुत सुन्दर और सुरूप था। 7कुछ समय बाद
यूसुफ के मालिक की पत्नी यूसुफ से प्रेम करने लगी।
एक दिन उसने कहा, "मेरे साथ सोओ।"

8किन्तु यूसुफ ने मना कर दिया। उसने कहा, "मेरा
मालिक घर की अपनी हर चीज़ के लिए मुझ पर
विश्वास करता है। उसने यहाँ की हर एक चीज़ की
जिम्मेवारी मुझे दी है। 9मेरे मालिक ने अपने घर में मुझे
लगभग अपने बराबर मान दिया है। किन्तु मुझे उसकी
पत्नी के साथ नहीं सोना चाहिए। यह अनुचित है। यह
परमेश्वर के विरुद्ध पाप है।"

10वह स्त्री हर दिन यूसुफ से बात करती थी किन्तु
यूसुफ ने उसके साथ सोने से मना कर दिया। 11एक
दिन यूसुफ अपना काम करने घर में गया। उस समय
वह घर में अकेला व्यक्ति था। 12उसके मालिक की
पत्नी ने उसका अंगरखा पकड़ लिया और उससे कहा,
"आओ और मेरे साथ सोओ।" किन्तु यूसुफ घर से
बाहर भाग गया और उसने अपना अंगरखा उसके हाथ
में छोड़ दिया। 13स्त्री ने देखा कि यूसुफ ने अपना
अंगरखा उसके हाथों में छोड़ दिया है और उसने जो
कुछ हुआ उसके बारे में झूठ बोलने का निश्चय किया।
वह बाहर दौड़ी। 14और उसने बाहर के लोगों को
पुकारा। उसने कहा, "देखो, यह हिब्रू दास हम लोगों का
उपहास करने यहाँ आया था। वह अन्दर आया और
मेरे साथ सोने की कोशिश की। किन्तु मैं जोर से
चिल्ला पड़ी। 15मेरी चिल्लाहट ने उसे डरा दिया और
वह भाग गया। किन्तु वह अपना अंगरखा मेरे पास छोड़
गया।" 16इसलिए उसने यूसुफ के मालिक अपने पति
के घर लौटने के समय तक उसके अंगरखे को अपने
पास रखा। 17और उसने अपने पति को वही कहानी
सुनाई। उसने कहा, "जिस हिब्रू दास को तुम यहाँ लाए
उसने मुझ पर हमला करने का प्रयास किया। 18किन्तु
जब वह मेरे पास आया तो मैं चिल्लाई। वह भाग गया,
किन्तु अपना अंगरखा छोड़ गया।"

यूसुफ कारागार में

19यूसुफ के मालिक ने जो उसकी पत्नी ने कहा, उसे
सुना और वह बहुत क्रुद्ध हुआ। 20वहाँ एक कारागार
था जिसमें राजा के शत्रु रखे जाते थे। इसलिए पोतीपर
ने यूसुफ को उसी बंदी खाने में डाल दिया और यूसुफ
वहाँ पड़ा रहा।

21किन्तु यहोवा यूसुफ के साथ था। यहोवा उस पर
कृपा करता रहा। 22कुछ समय बाद कारागार के रक्षकों
का मुखिया युसूफ से स्नेह करने लगा। रक्षकों के
मुखिया ने सभी कैदियों का अधिकारी यूसुफ को बनाया।
यूसुफ उनका मुखिया था, किन्तु काम वही करता था
जो वे करते थे। 23रक्षकों का अधिकारी कारागार की
सभी चीज़ों के लिए यूसुफ पर विश्वास करता था। यह
इसलिए हुआ कि यहोवा यूसुफ के साथ था। यहोवा
यूसुफ को, वह जो कुछ करता था, सफल करने में
सहायता करता था।

यूसुफ दो सपनों की व्याख्या करता है

40 बाद में फ़िरौन के दो नौकरों ने फ़िरौन का
कुछ नुकसान किया। इन नौकरों में से एक
रोटी पकाने वाला तथा दूसरा फ़िरौन को दाखमधु देने
की सेवा करता था। 2फ़िरौन अपने रोटी पकाने वाले
तथा दाखमधु देने वाले नौकर पर क्रुद्ध हुआ। 3इसलिए
फ़िरौन ने उसी कारागार में उन्हें भेजा जिसमें यूसुफ
था। फ़िरौन के अंगरक्षकों का नायक पोतीपर उस
कारागार का अधिकारी था। 4नायक ने दोनों कैदियों

को यूसुफ की देख रेख में रखा। दोनों कुछ समय तक कारागार में रहे। 5एक रात दोनों कैदियों ने एक सपना देखा। (दोनों कैदी मिस्र के राजा के रोटी पकानेवाले तथा दाखमधु देने वाले नौकर थे।) हर एक कैदी के अपने-अपने सपने थे और हर एक सपने का अपना अलग अलग अर्थ था। 6यूसुफ अगली सुबह उनके पास गया। यूसुफ ने देखा कि दोनों व्यक्ति परेशान थे। 7यूसुफ ने पूछा, "आज तुम लोग इतने परेशान क्यों दिखाई पड़ते हो?"

8दोनों व्यक्तियों ने उत्तर दिया, "पिछली रात हम लोगों ने सपना देखा, किन्तु हम लोग नहीं समझते कि सपने का क्या अर्थ है? कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो सपनों की व्याख्या करे या हम लोगों को स्पष्ट बताए।"

यूसुफ ने उनसे कहा, "केवल परमेश्वर ही ऐसा है जो सपने को समझता और उसकी व्याख्या करता है। इसलिए मैं निवेदन करता हूँ कि अपने सपने मुझे बताओ।"

दाखमधु देने वाले नौकर का सपना

9इसलिए दाखमधु देने वाले नौकर ने यूसुफ को अपना सपना बताया। नौकर ने कहा, "मैंने सपने में अँगूर की बेल देखी। 10उस अँगूर की बेल की तीन शाखाएँ थी। मैंने शाखाओं में फूल आते और उन्हें अँगूर बनते देखा। 11मैं फ़िरौन का प्याला लिए था। इसलिए मैंने अँगूरों को लिया और प्याले में रस निचोड़ा। तब मैंने प्याला फ़िरौन को दिया।"

12तब यूसुफ ने कहा, "मैं तुमको सपने की व्याख्या समझाऊँगा। तीन शाखाओं का अर्थ तीन दिन है। 13तीन दिन बीतने के पहले फ़िरौन तुमको क्षमा करेगा और तुम्हें तुम्हारे काम पर लौटने देगा। तुम फ़िरौन के लिए वही काम करोगे और जो पहले करते थे। 14किन्तु जब तुम स्वतन्त्र हो जाओगे तो मुझे याद रखना। मेरी सहायता करना। फिरौन से मेरे बारे में कहना जिससे मैं इस कारागार से बाहर हो सकूँ। 15मुझे अपने घर से लाया गया था जो मेरे अपने लोगों हिब्रूओं का देश है। मैंने कोई अपराध नहीं किया है। इसलिए मुझे कारागार में नहीं होना चाहिए।"

रोटी बनाने वाले का सपना

16रोटी बनाने वाले ने देखा कि दूसरे नौकर का सपना अच्छा था। इसलिए रोटी बनाने वाले ने यूसुफ से कहा, "मैंने भी सपना देखा। मैंने देखा कि मेरे सिर पर तीन रोटियों की टोकरियाँ हैं। 17सबसे ऊपर की टोकरी में हर प्रकार के पके भोजन थे। यह भोजन राजा के लिए था। किन्तु इस भोजन को चिड़ियाँ खा रही थीं।"

18यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें बताऊँगा कि सपने का क्या अर्थ है? तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है। 19तीन दिन बीतने के पहले राजा तुमको इस जेल से बाहर निकालेगा। तब राजा तुम्हारा सिर काट डालेगा। वह तुम्हारे शरीर को एक खम्भे पर लटकाएगा और चिड़ियाँ तुम्हारे शरीर को खाएंगी।"

यूसुफ को भुला दिया गया

20तीन दिन बाद फ़िरौन का जन्म दिन था। फ़िरौन ने अपने सभी नौकरों को दावत दी। दावत के समय फ़िरौन ने दाखमधु देने वाले तथा रोटी पकाने वाले नौकरों को कारागार से बाहर आने दिया। 21फ़िरौन ने दाखमधु देने वाले नौकर को स्वतन्त्र कर दिया। फ़िरौन ने उसे नौकरी पर लौटा लिया और दाखमधु देने वाले नौकर ने फ़िरौन के हाथ में एक दाखमधु का प्याला दिया। 22लेकिन फ़िरौन ने रोटी बनाने वाले को मार डाला। सभी बातें जैसे यूसुफ ने होनी बताई थी वैसे ही हुई। 23किन्तु दाखमधु देने वाले नौकर को यूसुफ की सहायता करना याद नहीं रहा। उसने यूसुफ के बारे में फ़िरौन से कुछ नहीं कहा। दाखमधु देने वाला नौकर यूसुफ के बारे में भूल गया।

फ़िरौन के सपने

41 दो वर्ष बाद फ़िरौन ने सपना देखा। फ़िरौन ने सपने में देखा कि वह नील नदी के किनारे खड़ा है। 2तब फ़िरौन ने सपने में नदी से सात गायों को बाहर आते देखा। गायें मोटी और सुन्दर थीं। गायें वहाँ खड़ी थी और घास पर चर रही थीं। 3तब सात अन्य गायें नदी से बाहर आई, और नदी के किनारे मोटी गायों के पास खड़ी हो गई। किन्तु ये गायें दुबली और भद्दी थी। 4ये सातों दुबली गायें, सुन्दर मोटी सात गायों को खा गई। तब फ़िरौन जाग उठा।

5फ़िरौन फिर सोया और दूसरी बार सपना देखा। उसने सपने में अनाज की सात बालें* एक अनाज के पीछे उगी हुई देखीं। अनाज की बालें मोटी और अच्छी थी। 6तब उसने उसी अनाज के पीछे सात अन्न बालें उगी देखीं। अनाज की ये बालें पतली और गर्म हवा से नष्ट हो गई थीं।

7तब सात पतली बालों ने सात मोटी और अच्छी बालों को खा लिया। फ़िरौन फिर जाग उठा और उसने समझा कि यह केवल सपना ही है। 8अगली सुबह फ़िरौन इन सपनों के बारे में परेशान था। इसलिए उसने मिस्र के सभी जादूगरों को और सभी गुणी लोगों को बुलाया। फ़िरौन ने उनको सपना बताया। किन्तु उन लोगों में से कोई भी सपने को स्पष्ट या उसकी व्याख्या न कर सका।

बालें "अन्नों के अग्र भाग।"

नौकर फ़िरौन को यूसुफ के बारे में बताता है

9तब दाखमधु देने वाले नौकर को यूसुफ याद आ
गया। नौकर ने फ़िरौन से कहा, "मेरे साथ जो कुछ
घटा वह मुझे याद आ रहा है। 10आप मुझ पर और एक
दूसरे नौकर पर क्रुद्ध थे और आपने हम दोनों को
कारागार में डाल दिया था। 11कारागार में एक ही रात
हम दोनों ने सपने देखे। हर सपना अलग अर्थ रखता
था। 12एक हिब्रू युवक हम लोगों के साथ कारागार में
था। वह अंगरक्षकों के नायक का नौकर था। हम
लोगों ने अपने सपने उसको बताए, और उसने सपने
की व्याख्या हम लोगों को समझाई। उसने हर सपने का
अर्थ हम लोगों को बताया। 13जो अर्थ उसने बताए वे
ठीक निकले। उसने बताया कि मैं स्वतन्त्र होऊँगा और
अपनी पुरानी नौकरी फिर पाऊँगा और यही हुआ।
उसने कहा कि रोटी पकाने वाला मरेगा और वही
हुआ।"

यूसुफ सपनें की व्याख्या करने के लिए बुलाया गया

14इसलिए फ़िरौन ने यूसुफ को कारागार से बुलाया।
रक्षक जल्दी से यूसुफ को कारागार से बाहर लाए।
यूसुफ ने बाल कटाए और साफ कपड़े पहने। तब वह
गया और फ़िरौन के सामने खड़ा हुआ। 15तब फ़िरौन
ने यूसुफ से कहा, "मैंने एक सपना देखा है। किन्तु कोई
ऐसा नहीं है जो सपने की व्याख्या मुझको समझा सके।
मैंने सुना है कि जब कोई सपने के बारे में तुमसे कहता
है तब तुम सपनों की व्याख्या और उन्हें स्पष्ट कर
सकते हो।"

16यूसुफ ने उत्तर दिया, "मेरी अपनी बुद्धि नहीं है कि
मैं सपनों को समझ सकूँ केवल परमेश्वर ही है जो ऐसी
शक्ति रखता है और फ़िरौन के लिए परमेश्वर ही यह
करेगा।"

17तब फ़िरौन ने कहा, "अपने सपने में, मैं नील नदी
के किनारे खड़ा था। 18मैंने सात गायों को नदी से बाहर
आते देखा और घास चरते देखा। ये गायें मोटी और
सुन्दर थीं। 19तब मैंने अन्य सात गायों को नदी से बाहर
आते देखा। ये गाये पतली और भद्दी थीं। मैंने मिस्र देश
में जितनी गायें देखी हैं उनमें वे सब से अधिक बुरी थीं।
20और इन भद्दी और पतली गायों ने पहली सुन्दर सात
गायों को खा डाला। 21लेकिन सात गायों को खाने के
बाद तक भी वे पतली और भद्दी ही रहीं। तुम उनको
देखो तो नहीं जान सकते कि उन्होंने अन्य सात गायों
को खाया है। वे उतनी ही भद्दी और पतली दिखाई
पड़ती थीं जितनी आरम्भ में थीं। तब मैं जाग गया।

22"तब मैंने अपने दूसरे सपने में अनाज की सात
बालें एक ही अनाज के पीछे उगी देखीं। ये अनाज की
बालें भरी हुई, अच्छी और सुन्दर थीं। 23तब उनके बाद
सात अन्य बालें उगीं। किन्तु ये बाले पतली, भद्दी और
गर्म हवा से नष्ट थीं। 24तब पतली बालों ने सात अच्छी
बालों को खा डाला।

"मैनें इस सपने को अपने लोगों को बताया जो जादूगर
और गुणी हैं। किन्तु किसी ने सपने की व्याख्या मुझको
नहीं समझाई। इसका अर्थ क्या हैं?"

यूसुफ सपने का अर्थ बताता है

25तब यूसुफ ने फ़िरौन से कहा, "ये दोनों सपने एक
ही अर्थ रखते हैं। परमेश्वर तुम्हें बता र हा है जो
जल्दी ही होगा। 26सात अच्छी गायें और सात अच्छी
अनाज की बालें* सात वर्ष हैं दोनों सपने एक ही हैं।
27सात दुबली और भददी गायें तथा सात बुरी अनाज
की बालें देश में भूखमरी के सात वर्ष हैं। ये सात वर्ष,
अच्छे सात वर्षों के बाद आयेंगे। 28परमेश्वर ने आपको
यह दिखा दिया है कि जल्दी ही क्या होने वाला है। यह
वैसा ही होगा जैसा मैंने कहा है। 29आपके सात वर्ष पूरे
मिस्र में अच्छी पैदावार और भोजन बहुतायत के होंगे।
30लेकिन इन सात वर्षों के बाद पूरे देश में भूखमरी के
सात वर्ष आएंगे। जो सारा भोजन मिस्र में पैदा हुआ है
उसे लोग भूल जाएंगे। यह अकाल देश को नष्ट कर
देगा। 31भरपूर भोजनस्मरण रखना लोग भूल जायेंगे कि
क्या होता है?

32"हे फ़िरौन, आपने एक ही बात के बारे में दो सपने
देखे थे। यह इस बात को दिखाने के लिए हुआ कि
परमेश्वर निश्चय ही ऐसा होने देगा और यह बताया है
कि परमेश्वर इसे जल्दी ही होने देगा। 33इसलिए हे
फ़िरौन आप एक ऐसा व्यक्ति चुनें जो बहुत चुस्त और
बुद्धिमान हो। आप उसे मिस्र देश का प्रशासक बनाएँ।
34तब आप दूसरे व्यक्तियों को जनता से भोजन इकट्ठा
करने के लिए चुने। हर व्यक्ति सात अच्छे वर्षों में
जितना भोजन उत्पन्न करे, उसका पाँचवाँ हिस्सा दे।
35इन लोगों को आदेश दें कि जो अच्छे वर्ष आ रहे हैं
उनमें सारा भोजन इकट्ठा करें। व्यक्तियों से कह दें
कि उन्हें नगरों में भोजन जमा करने का अधिकार है।
तब वे भोजन की रक्षा उस समय तक करेंगे जब
उनकी आवश्यकता होगी। 36वह भोजन मिस्र देश में
आने वाले भूखमरी के सात वर्षों में सहायता करेगा।
तब मिस्र में सात वर्षों में लोग भोजन के अभाव में मरेंगे
नहीं।"

37फ़िरौन को यह अच्छा विचार मालूम हुआ। इससे
सभी अधिकारी सहमत थे। 38फ़िरौन ने अपने
अधिकारियों से पूछा, "क्या तुम लोगों में से कोई इस
काम को करने के लिए यूसुफ से अच्छा व्यक्ति ढूँढ
सकता है? परमेश्वर की आत्मा ने इस व्यक्ति को
सचमुच बुद्धिमान बना दिया है।"

सात ... बालें या अनाज का अग्र भाग सात वर्ष है।

39फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "परमेश्वर ने ये सभी
चीज़ें तुम को दिखाई हैं। इसलिये तुम ही सर्वाधिक
बुद्धिमान हो। 40इसलिए मैं तुमको देश का प्रशासक
बनाऊँगा। जनता तुम्हारे आदेशों का पालन करेगी। मैं
अकेला इस देश में तुम से बड़ा प्रशासक रहूँगा।"

41एक विशेष समारोह और प्रदर्शन था जिसमें फ़िरौन
ने यूसुफ को प्रशासक बनाया तब फ़िरौन ने यूसुफ से
कहा, "मैं अब तुम्हें मिस्र के पूरे देश का प्रशासक
बनाता हूँ।" 42तब फ़िरौन ने अपनी राजकीय मुहर
वाली अगूँठी यूसुफ को दी और यूसुफ को एक सुन्दर
रेशमी वस्त्र पहनने को दिया। फ़िरौन ने यूसुफ के गले
में एक सोने का हार डाला। 43फ़िरौन ने दूसरे श्रेणी के
राजकीय रथ पर यूसुफ को सवार होने को कहा।
उसके रथ के आगे विशेष रक्षक चलते थे। वे लोगों से
कहते थे, "हे लोगों, यूसुफ को झुककर प्रणाम करो।
इस तरह यूसुफ पूरे मिस्र का प्रशासक बना। 44फ़िरौन
ने उससे कहा, "मैं सम्राट फ़िरौन हूँ। इसलिए मैं जो
करना चाहूँगा, करूँगा। किन्तु मिस्र में कोई अन्य व्यक्ति
हाथ पैर नहीं हिला सकता है जब तक तुम उसे न
कहो।"

45फ़िरौन ने उसे दूसरा नाम सापन तपानेह दिया।
फ़िरौन ने आसनत नाम की एक स्त्री, जो ओन के
याजक पोतीपेरा का पुत्री थी, यूसुफ को पत्नी के रूप में
दी। इस प्रकार यूसुफ पूरे मिस्र देश का प्रशासक हो
गया। 46यूसुफ उस समय तीस वर्ष का था जब वह मिस्र
के सम्राट की सेवा करने लगा। यूसुफ ने पूरे मिस्र देश
में यात्राएँ की। 47अच्छे सात वर्षों में देश में पैदावार बहुत
अच्छी हुई 48और यूसुफ ने मिस्र में सात वर्ष खाने की
चीज़ें बचायीं। यूसुफ ने भोजन नगरों में जमा किया।
यूसुफ ने नगर के चारों ओर के खेतों के उपजे अन्न
को हर नगर में जमा किया। 49यूसुफ ने बहुत अन्न
इकट्ठा किया। यह समुद्र के बालू के सदृश था। उसने
इतना अन्न इकट्ठा किया कि उसके वजन को भी न
आँका जासके।

50यूसुफ की पत्नी आसनत ओन के याजक पोतीपरा
कि पुत्री थी। भूखमरी के पहले वर्ष के आने के पूर्व
यूसुफ और आसनेत के दो पुत्र हुए। 51पहले पुत्र का
नाम मनश्शे रखा गया। यूसुफ ने उसका यह नाम रखा
क्योंकि उसने बताया, "मुझे जितने सारे कष्ट हुए तथा
घर की हर बात परमेश्वर ने मुझसे भुला दी।" 52यूसुफ
ने दूसरे पुत्र का नाम एप्रैम रखा। यूसुफ ने उसका नाम
यह रखा क्योंकि उसने बताया, "मुझे बहुत दुःख मिला,
लेकिन परमेश्वर ने मुझे फुलाया−फलाया।"

भूखमरी का समय आरम्भ होता है

53सात वर्ष तक लोगों के पास खाने के लिए वह सब
भोजन था जिसकी उन्हें आवश्यकता थी और जो चीज़ें
उन्हें आवश्यक थीं वे सभी उगती थीं। 54किन्तु सात
वर्ष बाद भूखमरी के दिन शुरु हुए। यह ठीक वैसा ही
हुआ जैसा यूसुफ ने कहा था। सारी भूमि में चारों ओर
अन्न पैदा न हुआ। लोगों के पास खाने को कुछ न था।
किन्तु मिस्र में लोगों के खाने के लिए काफी था,
क्योंकि यूसुफ ने अन्न जमा कर रखा था। 55भूखमरी
का समय शुरू हुआ और लोग भोजन के लिए फ़िरौन
के सामने रोने लगे। फ़िरौन ने मिस्री लोगों से कहा,
"यूसुफ से पूछो। वही करो जो वह करने को कहता
है।"

56इसलिए जब देश में सर्वत्र भूखमरी थी, यूसुफ ने
अनाज के गोदामों से लोगों को अन्न दिया। यूसुफ ने
जमा अन्न को मिस्र के लोगों को बेचा। मिस्र में बहुत
भयंकर अकाल था। 57मिस्र के चारों ओर के देशों के
लोग अनाज खरीदने मिस्र आए। वे यूसुफ के पास आए
क्योंकि वहाँ संसार के उस भाग में सर्वत्र भूखमरी थी।

स्वप्न सच हुआ

42 इस समय याकूब के प्रदेश में भूखमरी थी।
किन्तु याकूब को यह पता लगा कि मिस्र में
अन्न है। इसलिए याकूब ने अपने पुत्रों से कहा, "हम
लोग यहाँ हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठे हैं? 2मैंने सुना है
कि मिस्र में खरीदने के लिए अन्न है। इसलिए हम लोग
वहाँ चलें और वहाँ से अपने खाने के लिए अन्न खरीदें,
तब हम लोग जीवित रहेंगे, मरेंगे नहीं।"

3इसलिए यूसुफ के भाईयों में से दस अन्न खरीदने
मिस्र गए। 4याकूब ने बिन्यामीन को नहीं भेजा। (बिन्यामीन
यूसुफ का एकमात्र सगा भाई* था।)

5कनान में भूखमरी का समय बहुत भयंकर था।
इसलिए कनान के बहुत से लोग अन्न खरीदने मिस्र
गए। उन्हीं लोगों में इस्राएल के पुत्र भी थे।

6इस समय यूसुफ मिस्र का प्रशासक था। केवल
यूसुफ ही था जो मिस्र आने वाले लोगों को अन्न बेचने
का आदेश देता था। यूसुफ के भाई उसके पास आए
और उन्होंने उसे झुककर प्रणाम किया। 7यूसुफ ने
अपने भाईयों को देखा और उसने उन्हें पहचान लिया
कि वे कौन हैं। किन्तु यूसुफ उनसे इस तरह बात
करता रहा जैसे वह उन्हें पहचानता ही नहीं। उसने
उनके साथ क्रूरता से बात की। उसने कहा, "तुम लोग
कहाँ से आए हो?" भाईयों ने उत्तर दिया, "हम कनान
देश से आए हैं। हम लोग अन्न खरीदने आये हैं।"
8यूसुफ जानता था कि ये लोग उसके भाई हैं। किन्तु वे
नहीं जानते थे कि वह कौन हैं? 9यूसुफ ने उन सपनों
को याद किया जिन्हें उसने अपने भाईयों के बारे में
देखा था।

सगा भाई शाब्दिक "भाई" यूसुफ और बिन्यामीन की एक ही माँ थी।

यूसुफ अपने भाईयों को जासूस कहता है

यूसुफ ने अपने भाईयों से कहा, "तुम लोग अन्न खरीदने नहीं आए हो। तुम लोग जासूस हो। तुम लोग यह पता लगाने आए हो कि हम कहाँ कमज़ोर हैं?"

10किन्तु भाईयों ने उससे कहा, "नहीं, महोदय! हम तो आपके सेवक के रूप में आए हैं। हम लोग केवल अन्न खरीदने आए हैं। 11हम सभी लोग भाई हैं, हम लोगों का एक ही पिता है। हम लोग ईमानदार हैं। हम लोग केवल अन्न खरीदने आए हैं।"

12तब यूसुफ ने उनसे कहा, "नहीं, तुम लोग यह पता लगाने आए हो कि हम कहाँ कमजोर हैं?"

13भाईयों ने कहा, "नहीं, हम सभी भाई हैं। हमारे परिवार में बारह भाई हैं। हम सबका एक ही पिता है। हम लोगों का सबसे छोटा भाई अभी भी हमारे पिता के साथ घर पर है और दूसरा भाई बहुत समय पहले मर गया। हम लोग आपके सामने सेवक की तरह हैं। हम लोग कनान देश के हैं।"

14किन्तु यूसुफ ने कहा, "नहीं मुझे पता है कि मैं ठीक हूँ। तुम भेदिये हो। 15किन्तु मैं तुम लोगों को यह प्रमाणित करने का अवसर दूँगा कि तुम लोग सच कह रहे हो। तुम लोग यह जगह तब तक नहीं छोड़ सकते जब तक तुम लोगों का छोटा भाई यहाँ नहीं आता। 16इसलिए तुम लोगों में से एक लौटे और अपने छोटे भाई को यहाँ लाए। उस समय तक अन्य यहाँ कारागार में रहेंगे। हम देखेंगे कि क्या तुम लोग सच बोल रहे हो। किन्तु मुझे विश्वास है कि तुम लोग जासूस हो।" 17तब यूसुफ ने उन सभी को तीन दिन के लिए कारागार में डाल दिया।

शिमोन बन्धक के रूप में रखा गया

18तीन दिन बाद यूसुफ ने उनसे कहा, "मैं परमेश्वर का भय मानता हूँ। इसलिए मैं तुम लोगों को यह प्रमाणित करने का एक अवसर दूँगा कि तुम लोग सच बोल रहे हो। तुम लोग यह काम करो और मैं तुम लोगों को जीवित रहने दूँगा। 19अगर तुम लोग ईमानदार व्यक्ति हो तो अपने भाईयों में से एक को कारागार में रहने दो। अन्य जा सकते हैं और अपने लोगों के लिए अन्न ले जा सकते है। 20तब अपने सबसे छोटे भाई को लेकर यहाँ मेरे पास आओ। इस प्रकार मैं विश्वास करूँगा कि तुम लोग सच बोल रहे हो।"

भाईयों ने इस बात को मान लिया। 21उन्होंने आपस में बात की, "हम लोग दण्डित किए गए हैं।"* क्योंकि हम लोगों ने अपने छोटे भाई के साथ बुरा किया है। हम लोगों ने उसके कष्टों को देखा जिसमें वह था। उसने अपनी रक्षा के लिए हम लोगों से प्रार्थना की। किन्तु हम लोगों ने उसकी एक न सुनी। इसलिए हम लोग दु:खों में है।"

22तब रूबेन ने उनसे कहा, "मैंने तुमसे कहा था कि उस लड़के का कुछ भी बुरा न करो। लेकिन तुम लोगों ने मेरी एक न सुनी। इसलिए अब हम उसकी मृत्यु के लिए दण्डित हो रहे हैं।"

23यूसुफ अपने भाईयों से बात करने के लिए एक दुभाषिये से काम ले रहा था। इसलिए भाई नहीं जानते थे कि यूसुफ उनकी भाषा जानता है। किन्तु वे जो कुछ कहते थे उसे यूसुफ सुनता और समझता था। 24उनकी बातों से यूसुफ बहुत दु:खी हुआ। इसलिए यूसुफ उनसे अलग हट गया और रो पड़ा। थोड़ी देर में यूसुफ उनके पास लौटा। उसने भाईयों में से शिमोन को पकड़ा और उसे बाँधा जब कि अन्य भाई देखते रहे। 25यूसुफ ने कुछ सेवकों को उनकी बोरियों को अन्न से भरने को कहा। भाईयों ने इस अन्न का मूल्य यूसुफ को दिया। किन्तु यूसुफ ने उस धन को अपने पास नहीं रखा। उसने उस धन को उनकी अनाज की बोरियों में रख दिया। तब यूसुफ ने उन्हें वे चीज़ें दी, जिनकी आवश्यकता उन्हें घर तक लौटने की यात्रा में हो सकती थी।

26इसलिए भाईयों ने अन्न को अपने गधों पर लादा और वहाँ से चल पड़े। 27वे सभी भाई रात को ठहरे और भाईयों में से एक ने कुछ अन्न के लिए अपनी बोरी खोली और उसने अपना धन अपनी बोरी में पाया। 28उसने अन्य भाईयों से कहा, "देखो, जो मूल्य मैंने अन्न के लिए चुकाया, वह यहाँ है। किसी ने मेरी बोरी में ये धन लौटा दिया है। वे सभी भाई बहुत अधिक भयभीत हो गए। उन्होंने आपस में बातें की, परमेश्वर हम लोगों के साथ क्या कर रहा है?"

भाईयों ने याकूब को सूचित किया

29वे भाई कनान देश में अपने पिता याकूब के पास गए। उन्होंने जो कुछ हुआ था अपने पिता को बताया। 30उन्होंने कहा, "उस देश का प्रशासक हम लोगों से बहुत रूखाई से बोला। उसने सोचा कि हम लोग उस सेना की ओर से भेजे गए हैं जो वहाँ के लोगों को नष्ट करना चाहती है। 31लेकिन हम लोगों ने कहा कि हम लोग ईमानदार हैं। हम लोग किसी सेना में से नहीं हैं। 32हम लोगों ने उसे बताया कि हम लोग बारह भाई हैं। हम लोगों ने अपने पिता के बारे में बताया, और यह कहा कि हम लोगों का सबसे छोटा भाई अब भी कनान देश में है।

33"तब देश के प्रशासक ने हम लोगों से यह कहा, 'यह प्रमाणित करने के लिये कि तुम ईमानदार हो यह रास्ता है: अपने भाईयों में से एक को हमारे पास यहाँ छोड़ दो। अपना अन्न लेकर अपने परिवारों के पास लौट जाओ। 34अपने सबसे छोटे भाई को हमारे पास

हम ... गये हैं शाब्दिक "हम अपराधी हैं।"

लाओ। तब मैं समझूँगा कि तुम लोग ईमानदार हो अथवा तुम लोग हम लोगों को नष्ट करने वाली सेना की ओर नहीं भेजे गए हो। यदि तुम लोग सच बोल रहे हो तो मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें दे दूँगा।'"

35तब सब भाई अपनी बोरियों से अन्न लेने गए और हर एक भाई ने अपने धन की थैली अपने अन्न की बोरी में पाई। भाईयों और उनके पिता ने धन को देखा, और वे बहुत डर गए।

36याकूब ने उनसे कहा, "क्या तुम लोग चाहते हो कि मैं अपने सभी पुत्रों से हाथ धो बैठूँ। यूसुफ तो चला ही गया। शिमोन भी गया और तुम लोग बिन्यामीन को भी मुझसे दूर ले जाना चाहते हो।"

37तब रूबेन ने अपने पिता से कहा, "पिताजी आप मेरे दो पुत्रों को मार देना यदि मैं बिन्यामीन को आपके पास न लौटाऊँ। मुझ पर विश्वास करें। मैं आपके पास बिन्यामीन को लौटा लाऊँगा।"

38किन्तु याकूब ने कहा, "मैं बिन्यामीन को तुम लोगों के साथ नहीं जाने दूँगा। उसका भाई मर चुका है और मेरी पत्नी राहेल का वही अकेला पुत्र बचा है। मिस्र तक की यात्रा में यदि उसके साथ कुछ हुआ तो वह घटना मुझे मार डालेगी। तुम लोग मुझ वृद्ध को कब्र में बहुत दुःखी करके भेजोगे।"

याकूब ने बिन्यामीन को मिस्र जाने की आज्ञा दी

43 देश में भूखमरी का समय बहुत ही बुरा था। वहाँ कोई भी खाने की चीज़ नहीं उग रही थी। 2लोग वह सारा अन्न खा गए जो वे मिस्र से लाये थे। जब अन्न समाप्त हो गया, याकूब ने अपने पुत्रों से कहा, "फिर मिस्र जाओ। हम लोगों के खाने के लिए कुछ और अन्न खरीदो।"

3किन्तु यहूदा ने याकूब से कहा, "उस देश के प्रशासक ने हम लोगों को चेतावनी दी है। उसने कहा है, 'यदि तुम लोग अपने भाई को मेरे पास वापस नहीं लाओगे तो मैं तुम लोगों से बात करने से मना भी कर दूँगा।' 4यदि तुम हम लोगों के साथ बिन्यामीन को भेजोगे तो हम लोग जाएंगे और अन्न खरीदेंगे। 5किन्तु यदि तुम बिन्यामीन को भेजना मना करोगे तब हम लोग नहीं जाएंगे। उस व्यक्ति ने चेतावनी दी कि हम लोग उसके बिना वापस न आयें।"

6इस्राएल (याकूब) ने कहा, "तुम लोगों ने उस व्यक्ति से क्यों कहा, कि तुम्हारा अन्य भाई भी है।" तुम लोगों ने मेरे साथ ऐसी बुरी बात क्यों की?"

7भाईयों ने उत्तर दिया, "उस व्यक्ति ने सावधानी से हम लोगों से प्रश्न पूछे। वह हम लोगों तथा हम लोगों के परिवार के बारे में जानना चाहता था। उसने हम लोगों से पूछा, 'क्या तुम लोगों का पिता अभी जीवित है? क्या तुम लोगों का अन्य भाई घर पर है?' हम लोगों ने केवल उसके प्रश्नों के उत्तर दिए। हम लोग नहीं जानते थे कि वह हमारे दूसरे भाई को अपने पास लाने को कहेगा।"

8तब यहूदा ने अपने पिता इस्राएल से कहा, "बिन्यामीन को मेरे साथ भेजो। मैं उसकी देखभाल करूँगा हम लोग मिस्र अवश्य जाएंगे और भोजन लाएंगे। यदि हम लोग नहीं जाते हैं तो हम लोगों के बच्चे भी मर जाएंगे।

9"मैं विश्वास दिलाता हूँ कि वह सुरक्षित रहेगा। मैं इसका उत्तरदायी रहूँगा। यदि मैं उसे तुम्हारे पास लौटाकर न लाऊँ तो तुम सदा के लिए मुझे दोषी ठहरा सकते हो। 10यदि तुमने हमें पहले जाने दिया होता तो भोजन के लिए हम लोग दो यात्राएँ अभी तक कर चुके होते।"

11तब उनके पिता इस्राएल ने कहा, "यदि यह सचमुच सही है तो बिन्यामीन को अपने साथ ले जाओ। किन्तु प्रशासक के लिए कुछ भेंट ले जाओ। उन चीज़ों में से कुछ ले जाओ जो हम लोग अपने देश में इकट्ठा कर सके हैं उसके लिए कुछ शहद, पिस्ते बादाम, गोंद और लोबान ले जाओ। 12इस समय, पहले से दुगना धन भी ले लो जो पिछली बार देने के बाद लौटा दिया गया था। संभव है कि प्रशासक से गलती हुई हो। 13बिन्यामीन को साथ लो और उस व्यक्ति के पास ले जाओ। 14मैं प्रार्थना करता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम लोगों की उस समय सहायता करेगा जब तुम प्रशासक के सामने खड़े होओगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह बिन्यामीन और शिमोन को भी सुरक्षित आने देगा। यदि नहीं तो मैं अपने पुत्र से हाथ धोकर फिर दुःखी होऊँगा।"

15इसलिए भाईयों ने प्रशासक को देने के लिए भेंटें ली और उन्होंने जितना धन पहले लिया था उसका दुगना धन अपने साथ लिया। बिन्यामीन भाईयों के साथ मिस्र गया।

भाई यूसुफ के घर निमन्त्रित होते हैं

16मिस्र में यूसुफ ने उनके साथ बिन्यामीन को देखा। यूसुफ ने अपने सेवक से कहा, "उन व्यक्तियों को मेरे घर लाओ। एक जानवर मारो और पकाओ। वे व्यक्ति आज दोपहर को मेरे साथ भोजन करेंगे।" 17सेवक को जैसा कहा गया था वैसा किया। वह उन व्यक्तियों को यूसुफ के घर लाया।

18भाई डरे हुए थे जब वे यूसुफ के घर लाए गए। उन्होंने कहा, "हम लोग यहाँ उस धन के लिए लाए गए हैं जो पिछली बार हम लोगों की बोरियों में रख दिया गया था। वे हम लोगों को अपराधी सिद्ध करने लिए उनका उपयोग करेंगे। तब वे हम लोगों के गधों को चुरा लेंगे और हम लोगों को दास बनाएंगे।"

19अतः यूसुफ के घर की देख-रेख करने वाले सेवक के पास सभी भाई गए। 20उन्होंने कहा, "महोदय मैं प्रतिज्ञापूर्वक सच कहता हूँ कि पिछली बार हम आए

थे। हम लोग भोजन खरीदने आए थे। 21-22घर लौटते समय हम लोगों ने अपनी बोरियाँ खोलीं और हर एक बोरी में अपना धन पाया। हम लोग नहीं जानते कि उनमें धन कैसे पहुँचा। किन्तु हम वह धन आपको लौटाने के लिए साथ लाए हैं और इस समय हम लोग जो अन्न खरीदना चाहते हैं उसके लिए अधिक धन लाए हैं।"

23किन्तु सेवक ने उत्तर दिया, "डरो नहीं, मुझ पर विश्वास करो। तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने तुम लोगों के धन को तुम्हारी बोरियों में भेंट के रूप में रखा होगा। मुझे याद है कि तुम लोगों ने पिछली बार अन्न का मूल्य मुझे दे दिया था।"

सेवक शिमोन को कारागार से बाहर लाया। 24सेवक उन लोगों को यूसुफ के घर ले गया। उसने उन्हें पानी दिया और उन्होंने अपने पैर धोए। तब तक उसने उनके गधों को खाने के लिये चारा दिया।

25भाईयों ने सुना कि वे यूसुफ के साथ भोजन करेंगे। इसलिए उसके लिए अपनी भेंट तैयार करने में वे दोपहर तक लगे रहे। 26यूसुफ घर आया और भाईयों ने उसे भेंट दीं जो वे अपने साथ लाए थे। तब उन्होंने धरती पर झुककर प्रणाम किया।

27यूसुफ ने उनकी कुशल पूछी। यूसुफ ने कहा, "तुम लोगों का वृद्ध पिता जिसके बारे में तुम लोगों ने बताया, ठीक तो है? क्या वह अब तक जीवित है?"

28भाईयों ने उत्तर दिया, "महोदय, हम लोगों के पिता ठीक हैं। वे अब तक जीवित है" और वे फिर यूसुफ के सामने झुके।

यूसुफ अपने भाई बिन्यामीन से मिलता है

29तब यूसुफ ने अपने भाई बिन्यामीन को देखा। (बिन्यामीन और यूसुफ की एक ही माँ थी) यूसुफ ने कहा, "क्या यह तुम लोगों का सबसे छोटा भाई है जिसके बारे में तुम ने बताया था?" तब यूसुफ ने बिन्यामीन से कहा, "परमेश्वर तुम पर कृपालु हो।"

30तब यूसुफ कमरे से बाहर दौड़ गया। यूसुफ बहुत चाहता था कि वह अपने भाईयों को दिखाए कि वह उनसे बहुत प्रेम करता है। वह रोने–रोने सा हो रहा था, किन्तु वह नहीं चाहता था कि उसके भाई उसे रोता देखें। इसलिए वह अपने कमरे में दौड़ता हुआ पहुँचा और वहीं रोया। 31तब यूसुफ ने अपना मुँह धोया और बाहर आया। उसने अपने को संभाला और कहा, "अब भोजन करने का समय है।"

32यूसुफ ने अकेले एक मेज पर भोजन किया। उसके भाईयों ने दूसरी मेज पर एक साथ भोजन किया। मिस्री लोगों ने अन्य मेज पर एक साथ खाया। उनका विश्वास था कि उनके लिए यह अनुचित है कि वे हिब्रू लोगों के साथ खाएँ। 33यूसुफ के भाई उसके सामने की मेज पर बैठे थे। सभी भाई सबसे बड़े भाई से आरम्भ कर सबसे छोटे भाई तक क्रम में बैठे थे। सभी भाई एक दूसरे को, जो हो रहा था उस पर आश्चर्य करते हुए देखते जा रहे थे। 34सेवक यूसुफ की मेज से उनको भोजन ले जाते थे। किन्तु औरों की तुलना में सेवकों ने बिन्यामीन को पाँच गुना अधिक दिया। यूसुफ के साथ वे सभी भाई तब तक खाते और दाखमधु पीते रहे जब तक वे नशे में चूर नहीं हो गया।

यूसुफ जाल बिछाता है

44 तब यूसुफ ने अपने नौकर को आदेश दिया। यूसुफ ने कहा, "उन व्यक्तियों की बोरियों में इतना अन्न भरो जितना ये ले जा सके और हर एक का धन उस की अन्न की बोरी में रख दो। 2सबसे छोटे भाई की बोरी में धन रखो। किन्तु उसकी बोरी में मेरी विशेष चाँदी का प्याला भी रख दो।" सेवक ने यूसुफ का आदेश पूरा किया।

3अगले दिन बहुत सुबह सब भाई अपने गधों के साथ अपने देश को वापस भेज दिये गए। 4जब वे नगर को छोड़ चुके, यूसुफ ने अपने सेवक से कहा, "जाओ और उन लोगों का पीछा करो। उन्हें रोको और उनसे कहो, 'हम लोग आप लोगों के प्रति अच्छे रहे। किन्तु आप लोगों ने हमारे यहाँ चोरी क्यों की? आप लोगों ने यूसुफ का चाँदी का प्याला क्यों चुराया? 5हमारे मालिक यूसुफ इसी प्याले से पीते हैं। वे सपने की व्याख्या के लिए इसी प्याले का उपयोग करते हैं। इस प्याले को चुराकर आप लोगों ने अपराध किया है।'"

6अत: सेवक ने आदेश का पालन किया। वह सवार हो कर भाईयों तक गया और उन्हें रोका। सेवक ने उनसे वे ही बातें कहीं जो यूसुफ ने उनसे कहने के लिए कही थीं।

7किन्तु भाईयों ने सेवक से कहा, "प्रशासक ऐसी बातें क्यों कहते हैं? हम लोग ऐसा कुछ नहीं कर सकते। 8हम लोग वह धन लौटाकर लाए जो पहले हम लोगों की बोरियों में मिले थे। इसलिए निश्चय ही हम तुम्हारे मालिक के घर से चाँदी या सोना नहीं चुराएंगे। 9यदि आप किसी बोरी में चाँदी का वह प्याला पा जाये तो उस व्यक्ति को मर जाने दिया जाये। तुम उसे मार सकते हो और हम लोग तुम्हारे दास होंगे।"

10सेवक ने कहा, "जैसा तुम कहते हो हम वैसा ही करेंगे, किन्तु मैं उस व्यक्ति को मारुँगा नहीं। यदि मुझे चाँदी का प्याला मिलेगा तो वह व्यक्ति मेरा दास होगा। अन्य भाई स्वतन्त्र होंगे।"

जाल फेंका गया, बिन्यामीन पकड़ा गया

11तब सभी भाईयों ने अपनी बोरियाँ जल्दी जल्दी जमीन पर खोलीं। 12सेवक ने बोरियों में देखा। उसने

सबसे बड़े भाई से आरम्भ किया और सबसे छोटे भाई पर अन्त किया। उसने बिन्यामीन की बोरी में प्याला पाया। 13भाई बहुत दुःखी हुए। उन्होंने दुःख के कारण अपने वस्त्र फाड़ डाले। उन्होंने अपनी बोरियाँ गधों पर लादीं और नगर को लौट पड़े।

14यहूदा और उसके भाई यूसुफ के घर लौटकर गए। यूसुफ तब तक वहाँ था। भाईयों ने पृथ्वी तक झुककर प्रणाम किया। 15यूसुफ ने उनसे कहा, "तुम लोगों ने यह क्यों किया? क्या तुम लोगों को पता नहीं है कि गुप्त बातों को जानने का मेरा विशेष ढंग है। मुझसे बढ़कर अच्छी तरह कोई दूसरा यह नहीं कर सकता।"

16यहूदा ने कहा, "महोदय, हम लोगों को कहने के लिए कुछ नहीं है। स्पष्ट करने का कोई रास्ता नहीं है। यह दिखाने का कोई तरीका नहीं है कि हम लोग अपराधी नहीं है। हम लोगों ने और कुछ किया होगा जिसके लिए परमेश्वर ने हमें अपराधी ठहराया। इसलिए हम सभी बिन्यामीन भी, आपके दास होंगे।"

17किन्तु यूसुफ ने कहा, "मैं तुम सभी को दास नहीं बनाऊँगा। केवल वह व्यक्ति जिसने प्याला चुराया है, मेरा दास होगा। अन्य तुम लोग शान्ति से अपने पिता के पास जा सकते हो।"

यहूदा बिन्यामीन की सिफारिश करता है

18तब यहूदा यूसुफ के पास गया और उसने कहा, "महोदय, कृपाकर मुझे स्वयं आपसे स्पष्ट कह लेने दें। कृपा कर मुझ से अप्रसन्न न हों। मैं जानता हूँ कि आप स्वयं फिरौन जैसे हैं। 19जब हम लोग पहले यहाँ आए थे, आपने पूछा था कि 'क्या तुम्हारे पिता या भाई हैं?' 20और हमने आपको उत्तर दिया, 'हमारे एक पिता है, वे बूढ़े हैं और हम लोगों का एक छोटा भाई है। हमारे पिता उससे बहुत प्यार करते हैं। क्योंकि उसका जन्म उनके बूढ़ापे में हुआ था, यह अकेला पुत्र है। हम लोगों के पिता उसे बहुत प्यार करते हैं।' 21तब आपने हमसे कहा था, 'उस भाई को मेरे पास लाओ। मैं उसे देखना चाहता हूँ।' 22और हम लोगों ने कहा था, 'वह छोटा लड़का नहीं आ सकता। वह अपने पिता को नहीं छोड़ सकता। यदि उसके पिता को उससे हाथ धोना पड़ा तो उसका पिता इतना दुःखी होगा कि वह मर जाएगा।' 23किन्तु आपने हमसे कहा, 'तुम लोग अपने छोटे भाई को अवश्य लाओ, नहीं तो मैं फिर तुम लोगों के हाथ अन्न नहीं बेचूँगा।'

24"इसलिए हम लोग अपने पिता के पास लौटे और आपने जो कुछ कहा, उन्हें बताया।

25"बाद में हम लोगों के पिता ने कहा, 'फिर जाओ और हम लोगों के लिए कुछ और अन्न खरीदो।' 26और हम लोगों ने अपने पिता से कहा, 'हम लोग अपने सबसे छोटे भाई के बिना नहीं जा सकते। शासक ने कहा है कि वह तब तक हम लोगों को फिर अन्न नहीं बेचेगा जब तक वह हमारे सबसे छोटे भाई को नहीं देख लेता।' 27तब मेरे पिता ने हम लोगों से कहा, 'तुम लोग जानते हो कि मेरी पत्नी राहेल ने मुझे दो पुत्र दिये। 28मैंने एक पुत्र को दूर जाने दिया और वह जंगली जानवर द्वारा मारा गया और तब से मैंने उसे नहीं देखा है। 29यदि तुम लोग मेरे दूसरे पुत्र को मुझसे दूर ले जाते हो और उसे कुछ हो जाता है तो मुझे इतना दुःख होगा कि मैं मर जाऊँगा।' 30इसलिए यदि अब हम लोग अपने सबसे छोटे भाई के बिना घर जायेंगे तब हम लोगों के पिता को यह देखना पड़ेगा। यह छोटा लड़का हमारे पिता के जीवन में सबसे अधिक महत्व रखता है। 31जब वे देखेंगे कि छोटा लड़का हम लोगों के साथ नहीं है वे मर जायेंगे और यह हम लोगों का दोष होगा। हम लोग अपने पिता के घोर दुःख एवं मृत्यु का कारण होंगे।

32"मैंने छोटे लड़के का उत्तरदायित्व लिया है। मैंने अपने पिता से कहा, 'यदि मैं उसे आपके पास लौटाकर न लाऊँ तो आप मेरे सारे जीवनभर मुझे दोषी ठहरा सकते हैं।' 33इसलिए अब मैं आपसे माँगता हूँ, और आप से प्रार्थना करता हूँ कि कृपया छोटे लड़के को अपने भाईयों के साथ लौट जाने दें और मैं यहाँ रुकूँगा और आपका दास होऊँगा। 34मैं अपने पिता के पास लौट नहीं सकता यदि हमारे साथ छोटा भाई नहीं रहेगा। मैं इस बात से बहुत भयभीत हूँ कि मेरे पिता के साथ क्या घटेगा।"

यूसुफ अपने को प्रकट करता है कि वह कौन है

45 यूसुफ अपने को और अधिक न संभाल सका। वह वहाँ उपस्थित सभी लोगों के सामने रो पड़ा। यूसुफ ने कहा, "हर एक से कहो कि यहाँ से हट जाये।" इसलिए सभी लोग चले गये। केवल उसके भाई ही यूसुफ के साथ रह गए। तब यूसुफ ने उन्हें बताया कि वह कौन है। 2यूसुफ रोता रहा, और फ़िरौन के महल के सभी मिस्री व्यक्तियों ने सुना। 3यूसुफ ने अपने भाईयों से कहा, "मैं आप लोगों का भाई यूसुफ हूँ। क्या मेरे पिता सकुशल हैं?" किन्तु भाईयों ने उसको उत्तर नहीं दिया। वे डरे हुए तथा उलझन में थे।

4इसलिए यूसुफ ने अपने भाईयों से फिर कहा, "मेरे पास आओ।" इसलिए यूसुफ के भाई निकट गए और यूसुफ ने उनसे कहा, "मैं आप लोगों का भाई यूसुफ हूँ।" मैं वही हूँ जिसे मिस्रियों के हाथ आप लोगों ने दास के रूप में बेचा था। 5अब परेशान न हों। आप लोग अपने किए हुए के लिए स्वयं भी पश्चाताप न करें। वह तो मेरे लिए परमेश्वर की योजना थी कि मैं यहाँ आऊँ। मैं यहाँ तुम लोगों का जीवन बचाने के लिए आया हूँ। 6यह भयंकर भूखमरी का समय दो वर्ष ही अभी बीता है और अभी पाँच वर्ष बिना पौधे रोपने या उपज के

आएंगे। 7इसलिए परमेश्वर ने तुम लोगों से पहले मुझे
यहाँ भेजा जिससे मैं इस देश में तुम लोगों को बचा सकूँ।
8यह आप लोगों का दोष नहीं था कि मैं यहाँ भेजा गया।
यह परमेश्वर की योजना थी। परमेश्वर ने मुझे फ़िरौन
के पिता सदृश बनाया। ताकि मैं उसके सारे घर और
सारे मिस्र का शासक रहूँ।"

इस्राएल मिस्र के लिए आमन्त्रित हुआ

9यूसुफ ने कहा, "इसलिए जल्दी मेरे पिता के पास
जाओ। मेरे पिता से कहो कि उसके पुत्र यूसुफ ने यह
सन्देश भेजा है।"

परमेश्वर ने मुझे पूरे मिस्र का शासक बनाया है। मेरे
पास आइये। प्रतीक्षा न करें। अभी आएँ।

10आप मेरे निकट गोशेन प्रदेश में रहेंगे। आपका,
आपके पुत्रों का, आपके सभी जानवरों एवं झुण्डों का
यहाँ स्वागत है। 11भुखमरी के अगले पाँच वर्षों में मैं
आपका देखभाल करूँगा। इस प्रकार आपके और आपके
परिवार की जो चीज़ें हैं उनसे आपको हाथ धोना नहीं
पड़ेगा।

12यूसुफ अपने भाईयों से बात करता रहा। उसने
कहा, "अब आप लोग देखते हैं कि यह सचमुच मैं ही
हूँ" और आप लोगों का भाई बिन्यामीन जानता है
कि यह मैं हूँ। मैं आप लोगों का भाई आप लोगों से
बात कर रहा हूँ। 13इसलिए मेरे पिता से मेरी मिस्र की
अत्याधिक सम्पत्ति के बारे में कहें। आप लोगों ने जो
यहाँ देखा है उस हर एक चीज़ के बारे में मेरे पिता को
बताएं। अब जल्दी करो और मेरे पिता को लेकर मेरे
पास लौटो।"

14तब यूसुफ ने अपने भाई बिन्यामीन को गले लगाया
और रो पड़ा और बिन्यामीन भी रो पड़ा। 15तब यूसुफ
ने सभी भाईयों को चूमा और उनके लिए रो पड़ा।
इसके बाद भाई उसके साथ बातें करने लगे।

16फ़िरौन को पता लगा कि यूसुफ के भाई उसके
पास आए हैं। यह खबर फ़िरौन के पूरे महल में फैल
गई। फ़िरौन और उसके सेवक इस बारे में बहुत प्रसन्न
हुए। 17इसलिये फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "अपने भाईयों
से कहो कि उन्हें जितना भोजन चाहिए, लें और कनान
देश को लौट जायें। 18अपने भाईयों से कहो कि वे
अपने पिता और अपने परिवारों को लेकर यहाँ मेरे
पास आयें। मैं तुम्हें जीविका के लिए मिस्र में सबसे
अच्छी भूमि दूँगा और तुम्हारा परिवार सबसे अच्छा
भोजन करेगा जो हमारे पास यहाँ है।" 19तब फ़िरौन ने
कहा, "हमारी सबसे अच्छी गाड़ियों में से कुछ अपने
भाईयों को दो। उन्हें कनान जाने और गाड़ियों में अपने
पिता, स्त्रियों और बच्चों को यहाँ लाने को कहो। 20उनकी
कोई भी चीज़ यहाँ लाने की चिन्ता न करो। हम उन्हें
मिस्र में जो कुछ सबसे अच्छा है, देंगे।"

21इसलिए इस्राएल के पुत्रों ने यही किया। यूसुफ ने
फ़िरौन के वचन के अनुसार अच्छी गाड़ियाँ दी और
यूसुफ ने यात्रा के लिए उन्हें भरपूर भोजन दिया। 22यूसुफ
ने हर एक भाई को एक एक जोड़ा सुन्दर वस्त्र दिया।
किन्तु यूसुफ ने बिन्यामीन को पाँच जोड़े सुन्दर वस्त्र
दिये और यूसुफ ने बिन्यामीन को तीन सौ चाँदी के
सिक्के भी दिए। 23यूसुफ ने अपने पिता को भी भेंटें
भेजी। उसने मिस्र से बहुत सी अच्छी चीज़ों से भरी
बोरियों से लदे दस गधों को भेजा और उसने अपने पिता
के लिए अन्न, रोटी और अन्य भोजन से लदी हुई दस
गदहियों को उनकी वापसी यात्रा के लिए भेजा। 24तब
यूसुफ ने अपने भाईयों को जाने के लिए कहा। जब वे
जाने को हुए थे यूसुफ ने उनसे कहा, "सीधे घर जाओ
और रास्ते में लड़ना नहीं।"

25इस प्रकार भाईयों ने मिस्र को छोड़ा और कनान
देश में अपने पिता के पास गए। 26भाईयों ने उससे कहा,
"पिताजी यूसुफ अभी जीवित है और वह पूरे मिस्र देश
का प्रशासक है।"

उनका पिता चकित हुआ। उसने उन पर विश्वास
नहीं किया। 27किन्तु यूसुफ ने जो बातें कहीं थी, भाईयों
ने हर एक बात अपने पिता से कहीं। तब याकूब ने उन
गाड़ियों को देखा जिन्हें यूसुफ ने उसे मिस्र की वापसी
यात्रा के लिए भेजा था। तब याकूब भावुक हो गया और
अत्यन्त प्रसन्न हुआ। 28इस्राएल ने कहा, "अब मुझे
विश्वास है कि मेरा पुत्र यूसुफ अभी जीवित है। मैं मरने
से पहले उसे देखने जा रहा हूँ।"

परमेश्वर इस्राएल को विश्वास दिलाता है

46 इसलिए इस्राएल ने मिस्र की अपनी यात्रा प्रारम्भ
की। पहले इस्राएल बेर्शेबा पहुँचा। वहाँ इस्राएल
ने अपने पिता इसहाक के परमेश्वर की उपासना की।
उसने बलि दी।

2रात में परमेश्वर इस्राएल से सपने में बोला। परमेश्वर
ने कहा, "याकूब, याकूब"

और इस्राएल ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ हूँ।"

3तब यहोवा ने कहा, "मैं यहोवा हूँ तुम्हारे पिता का
परमेश्वर। मिस्र जाने से न डरो। मिस्र में मैं तुम्हें महान
राष्ट्र बनाऊँगा। 4मैं तुम्हारे साथ मिस्र चलूँगा और मैं
तुम्हें फिर मिस्र से बाहर निकाल लाऊँगा। तुम मिस्र में
मरोगे। किन्तु यूसुफ तुम्हारे साथ रहेगा। जब तुम मरोगे
तो वह स्वयं अपने हाथों से तुम्हारी आँखे बन्द करेगा।"

इस्राएल मिस्र को जाता है

5तब याकूब ने बेर्शेबा छोड़ा और मिस्र तक यात्रा की।
उसके पुत्र, अर्थात् इस्राएल के पुत्र अपने पिता, अपनी
पत्नियों और अपने सभी बच्चों को मिस्र ले आए। उन्होंने
फिरौन द्वारा भेजी गयी गाड़ियों में यात्रा की। 6उनके

पास, उनके पशु और कनान देश में उनका अपना जो कुछ था, वह भी साथ था। इस प्रकार इस्राएल अपने सभी बच्चे और अपने परिवार के साथ मिस्र गया। 7उसके साथ उसके पुत्र और पुत्रियाँ एवं पौत्र और पौत्रियाँ थी। उसका सारा परिवार उसके साथ मिस्र को गया।

याकूब का परिवार

8यह इस्राएल के उन पुत्रों और परिवारों के नाम है जो उसके साथ मिस्र गए:

रूबेन याकूब का पहला पुत्र था। 9रुबेन के पुत्र थे: हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी।

10शिमोन के पुत्र: यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन और सोहर। वहाँ शाऊल भी था। (शाऊल कनानी पत्नी से पैदा हुआ था।)

11लेवी के पुत्र: गेर्शोन, कहात और मरारी

12यहूदा के पुत्र: एर, ओनान, शेला, पेरेस और जेरह। (एर और ओनान कनान में रहते समय मर गये थे।) पेरेस के पुत्र: हेस्रोन और हामूल।

13इस्साकार के पुत्र: तोला, पुब्बा, योब और शिम्रोन।

14जबूलून के पुत्र: सेरेद, एलोन और यहलेल।

15रूबेन, शिमोन लेवी, इस्साकार और जबूलून और याकूब की पत्नी लिआ से उसकी पुत्री दीना भी थी। इस परिवार में तैंतीस व्यक्ति थे।

16गाद के पुत्र: सिय्योन, हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी, और अरेली।

17आशेर के पुत्र: यिम्ना, यिश्वा, यिस्वी, बरीआ और उनकी बहन सेरह और बरीआ के पुत्र: हेबेर और मल्कीएल थे।

18ये सभी याकूब की पत्नी की दासी जिल्पा से उसके पुत्र थे। इस परिवार में सोलह व्यक्ति थे।

19याकूब के साथ उसकी पत्नी राहेल से पैदा हुआ पुत्र बिन्यामीन भी था। (यूसुफ भी राहेल से पैदा था, किन्तु वह पहले से ही मिस्र में था।)

20मिस्र में यूसुफ के दो पुत्र थे, मनश्शे, एप्रैम। (यूसुफ की पत्नी ओन के याजक पोतीपेरा की पुत्री आसनतथी।)

21बिन्यामीन के पुत्र: बेला, बेकेर, अश्बेल, गेरा, नामान, एही, रोश, हुप्पीम, मुप्पीम और आर्द।

22वे याकूब की पत्नी राहेल से पैदा हुए उसके पुत्र थे। इस परिवार में चौदह व्यक्ति थे।

23दान का पुत्र: हूशीम। 24नप्ताली के पुत्र: यहसेल गूनी, सेसेर शिल्लेम।

25वे याकूब और बिल्हा के पुत्र थे। (बिल्हा राहेल की सेविका थी।) इस परिवार में सात व्यक्ति थे।

26इस प्रकार याकूब का परिवार मिस्र में पहुँचा। उनमें छियासठ उसके सीधे वंशज थे। (इस संख्या में याकूब के पुत्रों की पत्नियाँ सम्मिलित नहीं थीं।) 27यूसुफ के भी दो पुत्र थे। वे मिस्र में पैदा हुए थे। इस प्रकार मिस्र में याकूब के परिवार में सत्तर व्यक्ति थे।

इस्राएल मिस्र पहुँचता है

28याकूब ने पहले यहूदा को यूसुफ के पास भेजा। यहूदा गोशेन प्रदेश में यूसुफ के पास गया। जब याकूब और उसके लोग उस प्रदेश में गए। 29यूसुफ को पता लगा कि उसका पिता निकट आ रहा है। इसलिए यूसुफ ने अपना रथ तैयार कराया और अपने पिता इस्राएल से गोशेन में मिलने चला। जब यूसुफ ने अपने पिता को देखा तब वह उसके गले से लिपट गया और देर तक रोतारहा।

30तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "अब मैं शान्ति से मर सकता हूँ। मैंने तुम्हारा मुँह देख लिया और मैं जानता हूँ कि तुम अभी जीवित हो।"

31यूसुफ ने अपने भाईयों और अपने पिता के परिवार से कहा, "मैं जाऊँगा और फ़िरौन से कहूँगा कि मेरे पिता यहाँ आ गए हैं। मैं फ़िरौन से कहूँगा, 'मेरे भाईयों और मेरे पिता के परिवार ने कनान देश छोड़ दिया है और यहाँ मेरे पास आ गए हैं। 32यह चरवाहों का परिवार है। उन्होंने सदैव पशु और रेवड़े रखी हैं। वे अपने सभी जानवर और उनका जो कुछ अपना है उसे अपने साथ लाए हैं।' 33जब फ़िरौन आप लोगों को बुलाएंगे और आप लोगों से पूछेंगे कि 'आप लोग क्या काम करते हैं?' 34आप लोग उनसे कहना, 'हम लोग चरवाहे हैं। हम लोगों ने पूरा जीवन अपने जानवरों की देखभाल में बिताया है। हम लोगों से पहले हमारे पूर्वज भी ऐसे ही रहे।' तब फ़िरौन तुम लोगों को गोशेन प्रदेश में रहने की आज्ञा दे देगा। मिस्री लोग चरवाहों को पसन्द नहीं करते, इसलिये अच्छा यही होगा कि आप लोग गोशेन में ही ठहरें।"

इस्राएल गोशेन में बसता है

47 यूसुफ फ़िरौन के पास गया और उसने कहा, "मेरे पिता, मेरे भाई और उनके सब परिवार यहाँ आ गए हैं।" वे अपने सभी जानवर तथा कनान में उनका अपना जो कुछ था, उसके साथ हैं। इस समय वे गोशेन प्रदेश में हैं।" 2यूसुफ ने अपने भाईयों में से पाँच को फ़िरौन के सामने अपने साथ रहने के लिए चुना।

3फ़िरौन ने भाईयों से पूछा, "तुम लोग क्या काम करते हो?"

भाईयों ने फ़िरौन से कहा, "मान्यवर. हम लोग चरवाहे हैं। हम लोगों से पहले हमारे पूर्वज भी चरवाहे थे।" 4उन्होंने फ़िरौन से कहा, "कनान में भूखमरी का यह समय बहुत बुरा है। हम लोगों के जानवरों के लिए घास वाला कोई भी खेत बचा नहीं रह गया है। इसलिए हम लोग इस देश में रहने आए हैं। आपसे हम लोग प्रार्थना

करते हैं कि आप कृपा करके हम लोगों को गोशेन
प्रदेश में रहने दें।"
5तब फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "तुम्हारे पिता और
तुम्हारे भाई तुम्हारे पास आए हैं। 6तुम मिस्र में कोई भी
स्थान उनके रहने के लिए चुन सकते हो। अपने पिता
और अपने भाईयों को सबसे अच्छी भूमि दो। उन्हें
गोशेन प्रदेश में रहने दो और यदि ये कुशल चरवाहे हैं,
तो वे मेरे जानवरों की भी देखभाल कर सकते हैं।"
7तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब को अन्दर फ़िरौन
के सामने बुलाया। याकूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद
दिया। 8तब फ़िरौन ने याकूब से पूछा, "आपकी उम्र
क्या है? 9याकूब ने फ़िरौन से कहा, "बहुत से कष्टों के
साथ मेरा छोटा जीवन रहा। मैं केवल एक सौ तीस वर्ष
जीवन बिताया हूँ। मेरे पिता और उनके पिता मुझसे
अधिक उम्र तक जीवित रहे।"
10याकूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। तब फ़िरौन
से विदा लेकर चल दिया। 11यूसुफ ने फ़िरौन का आदेश
माना। उसने अपने पिता और भाईयों को मिस्र में भूमि
दी। यह रामसेस नगर के निकट मिस्र में सबसे अच्छी
भूमि थी। 12यूसुफ ने अपने पिता, भाईयों और उनके
अपने लोगों को, जो भोजन उन्हें आवश्यक था, दिया।

यूसुफ फ़िरौन के लिए भूमि खरीदता है

13भूखमरी का समय और भी अधिक बुरा हो गया।
देश में कहीं भी भोजन न रहा। इस बुरे समय के
कारण मिस्र और कनान बहुत गरीब हो गए। 14देश में
लोग अधिक से अधिक अन्न खरीदने लगे। यूसुफ ने
धन बचाया और उसे फ़िरौन के महल में लाया। 15कुछ
समय बाद मिस्र और कनान में लोगों के पास पैसा नहीं
रहा। उन्होंने अपना सारा धन अन्न खरीदने में खर्च
कर दिया। इसलिए लोग यूसुफ के पास गए और बोले,
"कृपा कर हमें भोजन दें। हम लोगों का धन समाप्त हो
गया। यदि हम लोग नहीं खाएंगे तो आपके देखते–देखते
हम मर जायेंगे।"
16लेकिन यूसुफ ने उत्तर दिया, "अपने पशु मुझे दो
और मैं तुम लोगों को भोजन दूँगा।" 17इसलिए लोग
अपने पशु, घोड़े और अन्य सभी जानवरों को भोजन
खरीदने के लिए उपयोग में लाने लगे और उस वर्ष
यूसुफ ने उनके जानवरों को लिया तथा भोजन दिया।
18किन्तु दूसरे वर्ष लोगों के पास जानवर नहीं रह गए
और भोजन खरीदने के लिए कुछ भी न रहा। इसलिए
लोग यूसुफ के पास गए और बोले, "आप जानते हैं कि
हम लोगों के पास धन नहीं बचा है और हमारे सभी
जानवर आपके हो गये हैं। इसलिए हम लोगों के पास
कुछ नहीं बचा है। वह बचा है केवल, जो आप देखते हैं,
हमारा शरीर और हमारी भूमि। 19आपके देखते हुए ही
हम निश्चय ही मर जाएंगे। किन्तु यदि आप हमें भोजन
देते हैं तो हम फ़िरौन को अपनी भूमि देंगे और उसके
दास हो जाएंगे। हमें बीज दो जिन्हें हम बो सकें। तब हम
लोग जीवित रहेगें और मरेंगे नहीं और भूमि हम लोगों
के लिए फिर अन्न उगाएगी।"
20इसलिए यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि फ़िरौन के
लिए खरीद ली। मिस्र के सभी लोगों ने अपने खेतों को
यूसुफ के हाथ बेच दिया। उन्होंने यह इसलिए किया
क्योंकि वे बहुत भूखे थे। 21और सभी लोग फ़िरौन के
दास हो गए। मिस्र में सर्वत्र लोग फ़िरौन के दास थे।
22एक मात्र वही भूमि यूसुफ ने नहीं खरीदी जो याजकों
के अधिकार में थी। याजकों को भूमि बेचने की
आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि फ़िरौन उनके काम के
लिए उन्हें वेतन देता था। इसलिए उन्होंने इस धन को
खाने के लिए भोजन खरीदने में खर्च किया।
23यूसुफ ने लोगों से कहा, "अब मैंने तुम लोगों की
और तुम्हारी भूमि को फ़िरौन के लिए खरीद लिया है।
इसलिए मैं तुमको बीज दूँगा और तुम लोग अपने खेतों
में पौधे लगा सकते हो। 24फसल काटने के समय तुम
लोग फसल का पाँचवाँ हिस्सा फ़िरौन को अवश्य देना।
तुम लोग अपने लिए पाँच में से चार हिस्से रख सकते
हो। तुम लोग उस बीज को जिसे भोजन और बोने के
लिए रखोगे उसे दूसरे वर्ष उपयोग में ला सकोगे। अब
तुम अपने परिवारों और बच्चों को खिला सकते हो।"
25लोगों ने कहा, "आपने हम लोगों का जीवन बचा
लिया है।" हम लोग आपके और फिरौन के दास होने
में प्रसन्न हैं।"
26इसलिए यूसुफ ने उस समय देश में एक नियम
बनाया और वह नियम अब तक चला आ रहा है।
नियम के अनुसार भूमि से हर एक उपज का पाँचवाँ
हिस्सा फ़िरौन का है। फ़िरौन सारी भूमि का स्वामी है।
केवल वही भूमि उसकी नहीं है जो याजकों की है।

"मुझे मिस्र में मत दफनाना"

27इस्राएल (याकूब) मिस्र में रहा। वह गोशेन प्रदेश में
रहा। उसका परिवार बढ़ा और बहुत बड़ा हो गया।
उन्होंने मिस्र में उस भूमि को पाया और अच्छा जीवन
बिताया। 28याकूब मिस्र में सत्रह वर्ष रहा। इस प्रकार
याकूब एक सौ सैंतालीस वर्ष का हो गया। 29वह समय
आ गया जब इस्राएल (याकूब) समझ गया कि वह जल्दी
ही मरेगा, इसलिए उसने अपने पुत्र यूसुफ को अपने
पास बुलाया। उसने कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो
तो तुम अपने हाथ मेरी जांघ के नीचे रख कर मुझे
वचन दो।* वचन दो कि तुम, जो मैं कहूँगा करोगे
और तुम मेरे प्रति सच्चे रहोगे। जब मैं मरुँ तो मुझे मिस्र

तुम ... वचन दो यह संकेत करता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण
शपथ था और याकूब विश्वास करता था कि यूसुफ अपना
वचन पूरा करेगा।

में मत दफनाना। 30उसी जगह मुझे दफनाना जिस जगह मेरे पूर्वज दफनाए गए हैं। मुझे मिस्र से बाहर ले जाना और मेरे परिवार के कब्रिस्तान में दफनाना।"

यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं वचन देता हूँ कि वही करूँगा जो आप कहते है। 31तब याकूब ने कहा, "मुझसे एक प्रतिज्ञा करो" और यूसुफ ने उससे प्रतिज्ञा की कि वह इसे पूरा करेगा। तब इस्राएल (याकूब) ने अपना सिर पलंग पर पीछे को रखा।*

मनश्शे और एप्रैम को आशीर्वाद

48 कुछ समय बाद यूसुफ को पता लगा कि उसका पिता बहुत बीमार है। इसलिए यूसुफ ने अपने दोनों पुत्रों मनश्शे और एप्रैम को साथ लिया और अपने पिता के पास गया। 2जब यूसुफ पहुँचा तो किसी ने इस्राएल से कहा, "तुम्हारा पुत्र यूसुफ तुम्हें देखने आया है।" इस्राएल बहुत कमजोर था, किन्तु उसने बहुत प्रयत्न किया और पलंग पर बैठ गया।

3तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "कनान देश में लूज के स्थान पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे स्वयं दर्शन दिया। परमेश्वर ने वहाँ मुझे आशीर्वाद दिया। 4परमेश्वर ने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हारा एक बड़ा परिवार बनाऊँगा। मैं तुमको बहुत से बच्चे दूँगा और तुम एक महान राष्ट्र बनोगे। तुम्हारे लोगों का अधिकार इस देश पर सदा बना रहेगा।' 5और अब तुम्हारे दो पुत्र हैं। मेरे आने से पहले–मिस्र देश में यहाँ ये पैदा हुए थे। तुम्हारे दोनों पुत्र एप्रैम और मनश्शे मेरे अपने पुत्रों की तरह होंगे। वे वैसे ही होंगे जैसे मुझे रूबेन और शिमोन हैं। 6इस प्रकार ये दोनों मेरे पुत्र होगें वे मेरी सभी चीज़ों में हिस्सेदार होंगे। किन्तु यदि तुम्हारे अन्य पुत्र होंगे तो वे तुम्हारे बच्चे होगें। किन्तु वे भी एप्रैम और मनश्शे के पुत्रों के समान होंगे। अर्थात् भविष्य में एप्रैम और मनश्शे का जो कुछ होगा, उसमें हिस्सेदार होंगे। 7पद्दनराम से यात्रा करते समय राहेल मर गई। इस बात ने मुझे बहुत दु:खी किया। वह कनान देश में मरी। हम लोग अभी एप्राता की ओर यात्रा कर रहे थे। मैंने उसे एप्राता की ओर जाने वाली सड़क पर दफनाया (एप्राता बेतलेहेम है।)"

8तब इस्राएल ने यूसुफ के पुत्रों को देखा। इस्राएल ने पूछा, "ये लड़के कौन हैं?"

9यूसुफ ने अपने पिता से कहा, "ये मेरे पुत्र हैं। ये वे लड़के हैं जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है।"

इस्राएल ने कहा, "अपने पुत्रों को मेरे पास लाओ। मैं उन्हें आशीर्वाद दूँगा।"

10इस्राएल बूढा था, और उसकी आँखें ठीक नहीं थीं। इसलिए यूसुफ अपने पुत्रों को अपने पिता के निकट ले गया। इस्राएल ने बच्चों को चूमा और गले लगाया। 11तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "मैंने कभी नहीं सोचा कि मैं तुम्हारा मुँह फिर देखूँगा किन्तु देखो! परमेश्वर ने तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को भी मुझे देखने दिया।"

12तब यूसुफ ने बच्चों को इस्राएल की गोद से लिया और वे उसके पिता के सामने प्रणाम करने को झुके। 13यूसुफ ने एप्रैम को अपनी दायीं ओर किया और मनश्शे को अपनी बायीं ओर (इस प्रकार एप्रैम इस्राएल की बायीं ओर था और मनश्शे इस्राएल की दायीं ओर था।) 14किन्तु इस्राएल ने अपने हाथों की दिशा बदलकर अपने दायें हाथ को छोटे लड़के एप्रैम के सिर पर रखा और तब बायें हाथ को इस्राएल ने बड़े लड़के मनश्शे के सिर पर रखा। उसने अपने बायें हाथ को मनश्शे पर रखा, यद्यपि मनश्शे का जन्म पहले हुआ था 15और इस्राएल ने यूसुफ को आशीर्वाद दिया और कहा,

"मेरे पूर्वज इब्राहीम और इसहाक ने हमारे परमेश्वर की उपासना की और वही परमेश्वर मेरे पूरे जीवन का पथ–प्रदर्शक रहा है।

16वही दूत रहा जिसने मुझे सभी कष्टों से बचाया और मेरी प्रार्थना है कि इन लड़कों को वह आशीर्वाद दे। अब ये बच्चे मेरा नाम पाएंगे। वे हमारे पूर्वज इब्राहीम और इसहाक का नाम पाएंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे इस धरती पर बड़े परिवार और राष्ट्र बनेंगे।"

17यूसुफ ने देखा कि उसके पिता ने एप्रैम के सिर पर दायाँ हाथ रखा है। यह यूसुफ को प्रसन्न न कर सका। यूसुफ ने अपने पिता के हाथ को पकड़ा। वह उसे एप्रैम के सिर से हटा कर मनश्शे के सिर पर रखना चाहता था। 18यूसुफ ने अपने पिता से कहा, "आपने अपना दायाँ हाथ गलत लड़के पर रखा है। मनश्शे का जन्म पहले है।"

19किन्तु उसके पिता ने तर्क दिया और कहा, "पुत्र, मैं जानता हूँ। मनश्शे का जन्म पहले है और वह महान होगा। वह बहुत से लोगों का पिता भी होगा। किन्तु छोटा भाई बड़े भाई से बड़ा होगा और छोटे भाई का परिवार उससे बहुत बड़ा होगा।"

20इस प्रकार इस्राएल ने उस दिन उन्हें आशीर्वाद दिया। उसने कहा, "इस्राएल के लोग तुम्हारे नाम का प्रयोग आशीर्वाद देने के लिये करेंगे, तुम्हारे कारण कृपा प्राप्त करेंगे। लोग प्रार्थना करेंगे, 'परमेश्वर तुम्हें एप्रैम और मनश्शे के समान बनायें।'"

इस प्रकार इस्राएल ने एप्रैम को मनश्शे से बड़ा बनाया। 21तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "देखो मेरी मृत्यु का समय निकट आ गया है। किन्तु परमेश्वर तुम्हारे साथ अब भी रहेगा। वह तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के देश तक लौटा ले जायेगा। 22मैंने तुमको ऐसा कुछ दिया है जो

तब इस्राएल ... रखा या तब इस्राएल ने अपने डंडे का सहारा लेकर उपासना में अपना सिर झुकाया। डंडे के लिए हिब्रू शब्द "बिछौने" शब्द की तरह है और उपासना के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ "प्रणाम करना" "लेटना" होता है।

तुम्हारे भाईयों को नहीं दिया है। मैं तुमको वह पहाड़ देता हूँ जिसे मैंने एमोरी लोगों से जीता था। उस पहाड़ के लिए मैंने अपनी तलवार और अपने धनुष से युद्ध किया था और मेरी जीत हुई थी।"

याकूब अपने पुत्रों को आशीर्वाद देता है

49 तब याकूब ने अपने सभी पुत्रों को अपने पास बुलाया। उसने कहाँ, "मेरे सभी पुत्रों, यहाँ मेरे पास आओ। मैं तुम्हें बताऊँगा कि भविष्य में क्या होगा।

2"याकूब के पुत्रों, एक साथ आओ और सुनो, अपने पिता इस्राएल की सुनो।"

रूबेन

3"रूबेन, तुम मेरे प्रथम पुत्र हो। तुम मेरे पहले पुत्र और मेरे शक्ति का पहला सबूत हो। तुम मेरे सभी पुत्रों से अधिक गर्वीले और बलवान हो।

4किन्तु तुम बाढ़ की तरंगों की तरह प्रचण्ड हो। तुम मेरे सभी पुत्रों से अधिक महत्व के नहीं हो सकोगे। तुम उस स्त्री के साथ सोए जो तुम्हारे पिता की थी। तुमने अपने पिता के बिछौने को सम्मान नहीं दिया।"

शिमोन और लेवी

5"शिमोन और लेवी भाई हैं। उन्हें अपनी तलवारों से लड़ना प्रिय है।

6उन्होंने गुप्त रूप से बुरी योजनाएँ बनाई। मेरी आत्मा उनकी योजना का कोई अंश नहीं चाहती। मैं उनकी गुप्त बैठकों को स्वीकार नहीं करूँगा। उन्होंने आदमियों की हत्या की जब वे क्रोध में थे और उन्होंने केवल विनोद के लिए जानवरों को चोट पहुँचाई।

7उनका क्रोध एक अभिशाप है। ये अत्याधिक कठोर और अपने पागलपन में क्रुद्ध हैं। याकूब के देश में इनके परिवारों की अपनी भूमि नहीं होगी। वे पूरे इस्राएल में फैलेंगे।"

यहूदा

8"यहूदा, तुम्हारे भाई तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। तुम अपने शत्रुओं को हराओगे। तुम्हारे भाई तुम्हारे सामने झुकेंगे।

9यहूदा उस शेर की तरह है जिसने किसी जानवर को मारा हो। हे मेरे पुत्र, तुम अपने शिकार पर खड़े शेर के समान हो जो आराम करने के लिये लेटता है, और कोई इतना बहादुर नहीं कि उसे छेड़ दे।

10यहूदा के परिवार के व्यक्ति राजा होंगे। उसके परिवार का राज-चिन्ह उसके परिवार से वास्तविक शासक के आने से पहले समाप्त नहीं होगा। तब अनेकों लोग उसका आदेश मानेंगे और सेवा करेंगे।

11वह अपने गधे को अँगूर की बेल से बाँधता है। वह अपने गधे के बच्चों को सबसे अच्छी अँगूर की बेलों में बाँधता है। वह अपने वस्त्रों को धोने के लिए सबसे अच्छी दाखमधु का उपयोग करता है।

12उसकी आँखे दाखमधु पीने से लाल रहती हैं। उसके दाँत दूध पीने से उजले हैं।"*

जबूलून

13"जबूलून समुद्र के निकट रहेगा। इसका समुद्री तट जहाजों के लिए सुरक्षित होगा। इसका प्रदेश सीदोन तक फैला होगा।"

इस्साकर

14"इस्साकर उस गधे के समान है जिसने अत्याधिक कठोर काम किया है। वह भारी बोझ ढोने के कारण पस्त पड़ा है। 15वह देखेगा कि उसके आराम की जगह अच्छी है। तथा यह कि उसकी भूमि सुहावनी है। तब वह भारी बोझे ढोने को तैयार होगा। वह दास के रूप में काम करना स्वीकार करेगा।"

दान

16"दान अपने लोगों का न्याय वैसे ही करेगा जैसे इस्राएल के अन्य परिवार करते हैं।

17दान सड़क के किनारे के साँप के समान है। वह रास्ते के पास लेटे हुये उस भयंकर साँप की तरह है, जो घोड़े के पैर को डसता है, और सवार घोड़े से गिर पड़ता है। 18यहोवा, मैं उद्धार की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

गाद

19"डाकुओं का एक गिरोह गाद पर आक्रमण करेगा। किन्तु गाद उन्हें मार भगाएगा।"

आशेर

20"आशेर की भूमि बहुत अच्छी उपज देगी। उसे वही भोजन मिलेगा जो राजाओं के लिये उपयुक्त होगा।"

नप्ताली

21"नप्ताली स्वतन्त्र दौड़नेवाले हिरन की तरह है और उसकी बोली उनके सुन्दर बच्चों की तरह है।"

यूसुफ

22"यूसुफ बहुत सफल है। यूसुफ फलों से लदी अंगूर की बेल के समान है। वह सोते के समीप उगी अँगूर की बेल की तरह है, बाड़े के सहारे उगी अँगूर की बेल की तरह है।

उसकी आँखे ... उजले हैं या उसका गधा अँगूर की बेल में बंधेगा, उसके गधे के बच्चे सर्वोतम अँगूर की बेल में बांधे जायेंगे। वह अपने वस्त्र दाखमधु से धोएगा और सर्वोतम वस्त्र अँगूर के रस से धोएगा। उसकी आँखे दाखमधु से अधिक लाल होंगी और उसके दाँत दूध से अधिक सफेद होंगे।

23बहुत से लोग उसके विरुद्ध हुए और उससे
लड़े।धर्नुधारी लोग उसे पसन्द नहीं करते।
24किन्तु उसने अपने शक्तिशाली धनुष और कुशल
भुजाओं से युद्ध जीता। वह याकूब के शक्तिशाली परमेश्वर
चरवाहे, इस्राएल की चट्टान, से शक्ति पाता है
25और अपने पिता के परमेश्वर से शक्ति पाता है।
परमेश्वर तुम को आशीर्वाद दे। सर्व शक्तिमान परमेश्वर
तुम को आशीर्वाद दे। वह तुम्हें ऊपर आकाश से आशीर्वाद
दे और नीचे गहरे समुद्र से आशीर्वाद दे। वह तुम्हें
स्तनों और गर्भ का आशीर्वाद दे।"
26मेरे माता–पिता को बहुत सी अच्छी चीज़ें होती रही
और तुम्हारे पिता से मुझको और अधिक आशीर्वाद
मिला। तुम्हारे भाईयों ने तुमको बेचना चाहा। किन्तु
अब तुम्हें एक ऊँचे पर्वत के समान, मेरे सारे आशीर्वाद
का ढेर मिलेगा।"

बिन्यामीन

27"बिन्यामीन एक ऐसे भूखे भेड़िये के समान है। जो
सवेरे मारता है और उसे खाता है। शाम को वह बचे
खुचे से काम चलाता है।"
28ये इस्राएल के बारह परिवार है और वही चीज़ें हैं
जिन्हें उनके पिता ने उनसे कहा था। उसने हर एक पुत्र
को वह आशीर्वाद दिया जो उसके लिए ठीक था। 29तब
इस्राएल ने उनको एक आदेश दिया। उसने कहा, "जब
मैं मरुँ तो मैं अपने लोगों के बीच रहना चाहता हूँ। मैं
अपने पूर्वजों के साथ हित्ती एप्रोन के खेतों की गुफा में
दफनाया जाना चाहता हूँ। 30वह गुफा मम्रे के निकट
मकपेला के खेत में है। यह कनान देश में है। इब्राहीम
ने उस खेत को एप्रोन से इसलिए खरीदा था जिससे
उसके पास एक कब्रिस्तान हो सके। 31इब्राहीम और
उसकी पत्नी सारा उसी गुफा में दफनाए गए हैं। इसहाक
और उसकी पत्नी रिबका उसी गुफा में दफनाए गए।
मैंने अपनी पत्नी लिआ को उसी गुफा में दफनाया।"
32वह गुफा उस खेत में है जिसे हित्ती लोगों से खरीदा
गया था। 33अपने पुत्रों से बातें समाप्त करने के बाद
याकूब लेट गया, पैरों को अपने बिछोने पर रखा और
मर गया।

याकूब का अन्तिम संस्कार

50 जब इस्राएल मरा, यूसुफ बहुत दुःखी हुआ।
वह पिता के गले लिपट गया, उस पर रोया
और उसे चूमा। 2यूसुफ ने अपने सेवकों को आदेश
दिया कि वे उसके पिता के शरीर को तैयार करें (ये
सेवक वैद्य थे।) वैद्यों ने याकूब के शरीर को दफनाने
के लिए तैयार किया। उन्होंने मिस्री लोगों के विशेष
तरीके से शरीर को तैयार किया। 3जब मिस्री लोगों ने
विशेष तरह से शव तैयार किया तब उसे दफनाने के
पहले चालीस दिन तक प्रतिक्षा की। उसके बाद मिस्रियों
ने याकूब के लिए शोक का विशेष समय रखा। यह
समय सत्तर दिन का था।
4सत्तर दिन बाद शोक का समय समाप्त हुआ। इसलिए
यूसुफ ने फ़िरौन के अधिकारियों से कहा, "कृपया
फ़िरौन से यह कहो, 5'जब मेरे पिता मर रहे थे तब मैंने
उनसे एक प्रतिज्ञा की थी। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं
उन्हें कनान देश की गुफा में दफनाऊँगा। यह वह गुफा
है जिसे उन्होंने अपने लिए बनाई है। इसलिए कृपा
करके मुझे जाने दें और वहाँ पिता को दफनाने दें। तब
मैं आपके पास वापस यहाँ लौट आऊँगा।'"
6फ़िरौन ने कहा, "अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो। जाओ
और अपने पिता को दफनाओ।"
7इसलिए यूसुफ अपने पिता को दफनाने गया। फ़िरौन
के सभी अधिकारी यूसुफ के साथ गए। फ़िरौन के बड़े
लोग (नेता) और मिस्र के बड़े लोग यूसुफ के साथ गए।
8यूसुफ और उसके भाईयों के परिवार के सभी व्यक्ति
उसके साथ गए और उसके पिता के परिवार के सभी
लोग भी यूसुफ के साथ गए। (केवल बच्चे और जानवर
गोशेन प्रदेश में रह गए।) 9यूसुफ के साथ जाने के लिए
लोग रथों और घोड़ो पर सवार हुए। यह बहुत बड़ा
जनसमूह था।
10वे गोरन आताद को गए। जो यरदन नदी के पूर्व में
था। इस स्थान पर इन्होंने इस्राएल का अन्तिम संस्कार
किया। ये अन्तिम संस्कार सात दिन तक होता रहा।
11कनान के निवासियों ने गोरन आताद में अन्तिम
संस्कार को देखा। उन्होंने कहा, "वे मिस्री सचमुच बहुत
शोक भरा संस्कार कर रहे हैं।" इसलिए उस जगह
का नाम अब आबेल मिस्रैम है।
12इस प्रकार याकूब के पुत्रों ने वही किया जो उनके
पिता ने आदेश दिया था। 13वे उसके शव को कनान ले
गए और मकपेला की गुफा में उसे दफनाया। यह गुफा
मम्रे के निकट उस खेत में थी जिसे इब्राहीम ने हित्ती
एप्रोन से खरीदा था। 14यूसुफ ने जब अपने पिता को
दफना दिया तो वह और उसके साथ समूह का हर एक
व्यक्ति मिस्र को लौट गया।

भाई यूसुफ से डरे

15याकूब के मरने के बाद यूसुफ के भाई चिंतित
हुए। वे डर रहे थे कि उन्होंने जो कुछ पहले किया था
उसके लिए यूसुफ अब भी उनसे क्रोध में पागल होगा।
उन्होंने कहा, "क्या जो कुछ हम ने किया उसके लिए
यूसुफ अब भी हम से घृणा करता है?"
16इसलिए भाईयों ने यह सन्देश यूसुफ को भेजा:
तुम्हारे पिता ने मरने के पहले हम लोगों को
आदेश दिया था। 17उसने कहा, 'यूसुफ से कहना
कि मैं निवेदन करता हूँ कि कृपा कर वह उस

अपराध को क्षमा कर दे जो उन्होंने उसके साथ किया।' इसलिए अब हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि उस अपराध को क्षमा कर दो जो हम ने किया। हम लोग केवल तुम्हारे पिता के परमेश्वर के सेवक हैं।

यूसुफ के भाईयों ने जो कुछ कहा उससे उसे बड़ा दुःख हुआ और वह रो पड़ा। 18यूसुफ के भाई उसके सामने गए और उसके सामने झुककर प्रणाम किया। उन्होंने कहा, "हम लोग तुम्हारे सेवक होंगे।"

19तब यूसुफ ने उनसे कहा, "डरो नहीं मैं परमेश्वर नहीं हू। 20तुम लोगों ने मेरे साथ जो कुछ बुरा करने की योजना बनाई थी। किन्तु परमेश्वर सचमुच अच्छी योजना बना रहा था। परमेश्वर की योजना बहुत से लोगों का जीवन बचाने के लिए मेरा उपयोग करने की थी और आज भी उसकी यही योजना है। 21इसलिए डरो नहीं। मैं तुम लोगों और तुम्हारे बच्चों की देखभाल करूँगा।" इस प्रकार, यूसुफ ने उन्हें सान्त्वना दी और उनसे कोमलता से बातें की।

22यूसुफ अपने पिता के परिवार के साथ मिस्र में रहता रहा। यूसुफ एक सौ दस वर्ष का होकर मरा। 23यूसुफ के जीवन काल में एप्रैम के पुत्र और पौत्र हुए और उसके पुत्र मनश्शे का एक पुत्र माकीर नाम का हुआ। यूसुफ माकीर के बच्चों को देखने के लिए जीवित रहा।

यूसुफ की मृत्यु

24जब यूसुफ मरने को हुआ, उसने अपने भाईयों से कहा, "मेरे मरने का समय आ गया। किन्तु मैं जानता हूँ कि परमेश्वर तुम लोगों की रक्षा करेगा। वह इस देश से तुम लोगों को बाहर ले जायेगा। परमेश्वर तुम लोगों को उस देश में ले जायेगा जिसे उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब को देने का वचन दिया था।"

25तब यूसुफ ने अपने लोगों से एक प्रतिज्ञा करने को कहा। यूसुफ ने कहा, "मुझ से प्रतिज्ञा करो कि तब मेरी अस्थियाँ अपने साथ ले जाओगे जब परमेश्वर तुम लोगों को नये देश में ले जायेगा।"

26यूसुफ मिस्र में मरा, जब वह एक सौ दस वर्ष का था। वैद्यों ने उसके शव को दफनाने के लिए तैयार किया और मिस्र में उसके शव को एक डिब्बे में रखा।

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)
© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

> Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.

God's Word. Local Church. Global Strategy.™

Bible League International
1 Bible League Plaza
Crete, IL 60417, USA
Phone: 866–825–4636
Email: permissions@bibleleague.org
Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0 **B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2**
B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6 **B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8**

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads